'जायसवाल जागृति'

संरक्षक

स्व० हरिश्चन्द्र जायसवाल, दिल्ली
श्री जवाहर लाल जायसवाल, पूर्व सांसद
श्री अजय कुमार जायसवाल, नयी दिल्ली
श्री पी. जायसवाल, नई दिल्ली
श्री रामप्यारे गुप्त, नई दिल्ली
श्री दयाशंकर जायसवाल, नई दिल्ली
श्री लोटन प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री हरिश्चन्द जायसवाल, बाली नगर, दिल्ली
श्री ओम प्रकाश आर्य, नई दिल्ली
स्व. एस.पी गुप्त, नई दिल्ली
श्री त्रियुगी नारायण गुप्त, नोएडा
श्री जगराम जायसवाल, दिल्ली
श्री रामेश्वर दयाल कर्णवाल, नजीबाबाद
श्री भोला प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री पन्नालाल जायसवाल, अहमदाबाद
श्री सुधीर कुमार 'मनहर' जायसवाल, दिल्ली
श्री जयनारायण चौकसे, श्यामला हिल्स, भोपाल
स्व. बी.डी. दखने, उद्योगपति, नागपुर
श्री आनन्द कुमार भमोरे, अमरावती (महाराष्ट्र)
श्री सत्यनारायण जायसवाल (सरपंच), नवाबगंज
श्री छोटेलाल गुप्त जायसवाल, दिल्ली
श्री शंकरलाल जायसवाल, दिल्ली
डा. सत्यप्रकाश जायसवाल, दिल्ली
श्री विजय वालिया, फरीदाबाद
स्व. कुंदनलाल जायसवाल, गोरखपुर
श्री ललित जायसवाल, गाजियाबाद
श्री प्रकाश चौधरी, बड़ी सादड़ी, (चित्तोड़गढ़)
श्री राधेश्याम जायसवाल, गाजियाबाद
स्व. गोवर्धनलाल जायसवाल, शामगढ़ (म.प्र.)
श्री रमेश जायसवाल, दिल्ली
श्री मेघराज प्रसाद, दिल्ली
श्री माखन चौधरी, (नोएडा)
श्री सुरेन्द्र कुमार किशनलाल जायसवाल (नांदेड़)
श्री संजीव कुमार चौधरी, दिल्ली
श्री स्वामीनाथ जायसवाल (छत्तीसगढ़)
श्री राजीव कुमार जायसवाल (कटिहार, बिहार)
श्री बद्रीप्रसाद जायसवाल, (गोरखपुर)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (गुड़गांव)
श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (द्वारिका, दिल्ली)
श्री मुकेश रंजन जायसवाल (साहिबाबाद)
श्री किशोर जायसवाल (दिल्ली)

(शेष पृष्ठ 4 पर)

मूल्य 5 रु० प्रति

'जायसवाल जागृति'

(अखिल भारतीय संस्था के रूप में पंजीकृत सामाजिक संस्था 'जायसवाल जागृति', का सर्वाधिक लोकप्रिय त्रैमासिक मुख-पत्र)

वर्ष : 27 अक्टूबर-दिसम्बर, 2020 अंक: 3

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय: मोटे अनाजों की उपेक्षा क्यों?	-पन्नालाल जायसवाल	4
2.	विलक्षण प्रतिभा की साकार प्रतिमूर्ति पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	–राजाराम जायसवाल	5
3.	पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	–डा. भारतेन्दु द्विवेदी	6-9
4.	**Padmashri Dr. Kapil Dev Dvivedi His Outstanding Contribution to Vedic and Sanskrit Literature**		**10-11**
5.	"सदाशयता के मूर्तिमान विग्रह: संस्कृत साहित्य के शलाकापुरुष"	-डॉ. जयश्री द्विवेदी	12-14
6.	वेदमय जीवन	–ज्ञानेन्दु द्विवेदी	14
7.	महान व्यक्तित्व और विशाल कृतित्व 'पद्मश्री' डॉ. कपिल देव द्विवेदी	–डॉ. धर्मेन्दु द्विवेदी	15-18
8.	**A Role Model: My great grandfather Padmashree Dr. Kapil D.vivedi**	–Dr. Astha	19
9.	जीवन के मार्गदर्शक दादा जी	–आभा जायसवाल	20-21
10.	मेरे पूज्य पिता पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	–डा. भारती आर्य	22-23
11.	समाज को समर्पित: मेरे पिता का जीवन	–डॉ. आर्नेन्दु द्विवेदी	23-24
12.	मेरे आदर्श दादा जी	–कु. वरदा	24
13.	हमें गर्व है, दादाजी आप पर	–शाश्वत देव	24
14.	छठव्रत पर विशेष आलेख 'काँचहि बाँस के बँहगिया: बँहगी लचकत जाय'	–डॉ. अरुण मोहन भारवि	25-27
15.	साक्षात्कार: जायसवाल समाज के गौरव एवं पथप्रदर्शक श्री पन्नालाल जायसवाल		28-32
16.	स्वास्थ्य चर्चा, बढ़ती उम्र में स्वस्थ कैसे रहें? अपने पैरों को मजबूत रखें		33-34
17.	बहुजन चेतना के नायक :	चन्द्रिका प्रसाद 'जिज्ञासु'	35-36
18.	श्री यशवंत कुमार जायसवाल नहीं रहे		37
19.	हिंगलाज मंदिर (नानी मन्दिर), पाकिस्तान	शंकरलाल राय	38
20.	अपने हिस्से की हमें भी अब इमरती चाहिए		39
21.	विद्रोही सीता की जय	डॉ. शिखा	39
22.	बुद्धिजीवी जी	पूरन	40
23.	कुर्यात् सदा मंगलम् (वैवाहिकी)		41-49
24.	(1) व्यवस्था मंडल (2) महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ		50

टाइपसेटिंग : शुभम् ग्राफिक्स : 9811021617
Email : shubhamprabhas@gmail.com

सम्पादक-मंडल

मार्गदर्शन : पन्नालाल जायसवाल (M 8882828808)
प्रधान-सम्पादक: राजाराम जायसवाल (9013262811)
सहायक-सम्पादक: डा. राधेश्याम बन्धु (99868444666)
कार्यकारी सम्पादक : कैलाश नाथ गुप्त (M 8882019312)
सह-सम्पादन : डा. सत्यप्रकाश गुप्त (M 9811921848)
सहयोग : मीनू गुप्ता जायसवाल (M 9891232016)

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार का पता
राजाराम जायसवाल, प्रधान सम्पादक
19-सी,डीडीए (एमआई.जी.) फ्लैट्स, गुलाबी बाग, दिल्ली–110007
(M 9013262811)

पत्रिका में प्रकाशित किसी लेख/रचना का उत्तरदायित्व स्वयं लेखक/रचनाकार का है, सम्पादक-मंडल अथवा प्रकाशक का नहीं।

डॉ. अरुण कुमार गुप्ता (बंगलौर)
NRI श्रीमती आभा गुप्ता एवं श्री नितिन जी (अमेरिका)
श्री अशोक चौधरी, संचालक, जनकल्याण एवं President, INTUC
श्री विश्वमोहन प्रसाद (GM, NTPC, नोएडा)
श्री मदन भाई जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री संजय जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री कमल नारायण - सरलादेवी जायसवाल (इंदौर)
Dr. A.K. Jaiswal (AIIMS, Delhi)
श्री दीपक जायसवाल (नागपुर-महाराष्ट्र)
श्री हुकुमचंद गिरधारीलाल जायसवाल (इंदौर)
श्री ब्रजेश कुमार (एडवोकेट, दिल्ली)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (वरिष्ठ एडवोकेट, पटना)
श्री राजीव रंजन राजेश (एडवोकेट, दिल्ली)
श्रीमती सरला गुप्ता अ.भा.जा. सर्व. महिला अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता (अध्यक्ष, नेपाल कलवार कल्याण महासंघ)
श्री सुरेश प्रसाद चौधरी (गाजियाबाद)
श्रीमती सुनीता अखिलेश सुवालका (उदयपुर)
श्री नवीन प्रकाश जायसवाल (अलवर)
श्री सुनील कुमार जायसवाल (सांवेर रोड, इन्दौर)
श्री राकेश रमन जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजय कुमार जायसवाल (इलाहाबाद)
डा. एन. शिवासुबहनण्यन (तमिलनाडु)
श्रीमती रीता जायसवाल (वाराणसी)
न्यायाधीश डॉ. संतोष कुमार जायसवाल (मुंबई)
डॉ. अनिल कुमार जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजयपाल सिंह भहलूवालिया (सफीदों-हरियाणा)
श्री राजकुमार गुप्त (लखनऊ)
श्री मोहन सिंह अहलूवालिया (ग्वाला गद्दी, खेड़ी, रायपुररानी, पंचकुला)
श्री रमेश कुमार अहलूवालिया (रिवजराबाद, यमुनानगर, हरियाणा)
श्री अमृत गुप्ता पुत्र श्रीमती मंजू गुप्ता (दिल्ली)

अधिष्ठाता

श्री मोतीलाल जायसवाल, नई दिल्ली
श्री विक्रमजीत सिंह, अहलूवालिया, नई दिल्ली
सरदार अजीत सिंह, अहलूवालिया
स्व. रमाकांत जायसवाल, मुम्बई
स्व.हंसराज जायसवाल, दिल्ली
श्रीमती कविता जायसवाल, नोएडा
श्री गुलाब सिंह एवं श्री अरुण कुमार जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवनाथ गुप्ता, दिल्ली
श्री दीपनारायण जायसवाल, लखनऊ
स्व. जवाहर लाल जायसवाल, नई दिल्ली
(स्वामी हरिहरानंद) श्री हरिश्चंद्र धनेटवाल

सम्पादकीय

मोटे अनाजों की उपेक्षा क्यों?

मोटे अनाज हमारे प्राकृतिक आहार हैं। विगत शताब्दी तक हमारे आहार में चावल के साथ मोटे अनाजों-ज्वार, बाजरा, मडुँआ (रागी) आदि का प्रमुख स्थान होता था, परन्तु 1960 के दशक में देश में अकाल की स्थिति उत्पन्न होने पर अमेरिका से बड़ी मात्रा में गेहूँ का आयात हुआ जो अब सामान्य लोगों के आहार का प्रमुख भाग बन गया है। मोटे अनाज अब पिछड़े गरीब लोगों के अन्न समझे जाने लगे हैं और उपेक्षित हो गये हैं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ज्वार, बाजरा, मक्का, मँहुआ, कंगनी, कोदों, चीना, स्वांज, साँवा, कुट्टकी, ... आदि हमारे देश के प्राकृतिक अनाज हैं जिनमें अधिक प्रोटीन और ऊर्जा होती है। चना भी एक पौष्टिक अन्न है। अब इनका महत्त्व समझा जाने लगा हैं। वस्तुतः हमारा भारतीय आहार पोषण की दृष्टि से उत्तम है। गेहूँ चावल, दालें, दूध , दही, पत्तेदार हरी सब्जियों, फलों के साथ एक सन्तुलित एवं सन्तोषजनक आहार बन जाता है।

परन्तु कुछ वर्षों से देश में फास्टफूड– का प्रचलन बढ़ गया है। इन्हें तैयार करने वाली कम्पनियाँ मीडिया पर इनका जबरदस्त प्रचार करने लगी हैं जिनका दुष्प्रभाव हमारे बच्चों पर अधिक है और वे अपने माता पिता से अपनी मांग को पूरा करा ही लेते हैं। फलस्वरूप अब 35-40 वर्ष की अवस्था में पहुँचने के पहले ही, वे डायबिटीज तथा लीवर आदि की बीमारियों से ग्रसित होने लगे हैं।

इससे फार्मास्यूटिक्ल-एलोपैथिक दवाओं के उत्पादन तथा उपयोग को बढ़ावा मिला है। कुछ लोगों का कहना हैं कि जब लोग बीमार पड़ेगें, तभी उनकी दवाएँ बिकेंगी। हमारे बच्चे, युवा स्वस्थ रहें, राष्ट्र सशक्त हो, इसके लिए शासन और हम सभी को प्राकृतिक आहार को अपनाना चाहिए– हमारे भोजन में मोटे अनाजों को उचित स्थान मिलना चाहिए। पोषक आहार विशेषज्ञ विविध व्यंजनों के रूप में इन्हें हमारे आहार में शामिल करा सकते हैं।

–पन्नालाल जायसवाल

विलक्षण प्रतिभा की साकार प्रतिमूर्ति पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

हमें यह अंक आपके समक्ष ''डॉ. कपिल देव द्विवेदी विशेषांक के रूप में प्रस्तुत करते हुए महान हर्ष की अनुभूति हो रही है। चौंकिए मत। डॉ. द्विवेदी जन्मना जायसवाल थे, किन्तु अपनी अद्भूत मेधा, स्मरणशक्ति व सहज अवधारणा शक्ति के परिणाम स्वरूप उन्होंने दो वेदों–यजुर्वेद व सामवेद को कण्ठस्थ किया और इस प्रकार द्विवेदी उपाधि के अधिकारी बने। अपने अभूतपूर्व अध्यवसाय, कठोर साधना, प्रकांड पाडिण्य के बलबूते पर वे अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत जगत में वेदज्ञाता मर्मज्ञ व वेदमूर्ति के रूप में स्थापित हो चुके थे।

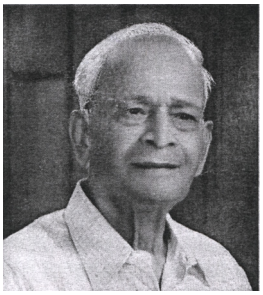

जन्म तिथि 06 दिसम्बर 1918
जन्म स्थान-गहमर (गाजीपुर)

यह जायसवाल समाज के लिए अत्यंत गौरव का विषय है कि गहमर (जिला गाजीपुर) में एक जायसवाल परिवार मे जन्में युवक ने कालान्तर में दो वेदों– **यजुर्वेद** एव **सामवेद** को कण्ठस्थ करके ज्वालापुर गुरुकुल महाविद्यालय से '**द्विवेदी**' की उपाधि ग्रहण की जो आजन्म उनके साथ जुड़ी रही यह एक अनहोनी घटना थी जो संभवत: "न भूतो न भविष्यति" जैसी है और उनकी नि:सीम विद्वता एवं ऋषि-मुनि तुल्य साधना व तपस्या का प्रतिफल है। उनके संबंध में एक विलक्षण यथार्थ यह भी है कि उन्हें व केवल अनेक भारतीय भाषाओं अपितु अनेक अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं का भी सम्यक ज्ञान था। उन्होंने कई विधाओं में लगभग 80 से अधिक प्रामाणिक ग्रन्थों का प्रणयन किया, जिनका वर्णन विस्तार से अन्यत्र किया गया है। **उनकी गहन एवं अभूतपूर्व प्रतिमा के समस्त विद्वतजन कायल हैं। उनका नाम लेते ही हमारी सम्पूर्ण जाति-जगत का मस्तक गर्व से ऊँचा हो जाता है। ऐसे महान, प्रात: स्मरणीय एव जाति-गौरव, असाधारण विद्वता की साक्षात प्रतिभूति मनीषी के बारे में हमारे बंधुगण विशेषकर हमारी युवा-पीढ़ी अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करे, इसी उद्देश्य से डॉ. कपिल देव विशेषांक प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष हो रहा है।**

संस्कृति के प्रकांड विद्वान थे डॉ. द्विवेदी संस्कृत भाषा का सरलीकरण–एक महान योगदान

संस्कृत भाषा के सरलीकरण और वेदों का ज्ञान जनसामान्य तक पहुँचाने में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा, वे संस्कृत व्याकरण, भाषा विज्ञान, दर्शन और वेदों के प्रकांड विद्वान् थे। उनके लिखे गये ग्रन्थ अपना विशिष्ट स्थान रखते है। डॉ. कपिलदेव महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्श अनुयायी, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के प्रिय भक्त तथा पाणिनी, पतंजलि, भर्तृहरि द्वारा प्रशस्त पथ के पथिक थे। उनका जीवन ऋषि तुल्य था। उन्होंने स्वामी दयानन्द के वेद प्रचार के स्वप्न को साकार करने के लिए न केवल दो वेद कंठस्थ किए **अपितु 40 भागों में वेदामृतम् ग्रन्थमाला की रचना कर वेदों को जनसामान्य तक पहुँचाया।** उन्हें वैदिक विद्वत् परम्परा के बहुमूल्य रत्न, भारतीय संस्कृति के पोषक, आर्यधर्म के साधक एवं प्रचारक, व्याकरणशास्त्र के अप्रतिम विद्वान्, संस्कृत साहित्य के सम्पोषक, मृदुभाषी, राष्ट्रप्रेमी के रूप में स्मरण किया जाता है। उनका स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी के रूप में भी योगदान रहा तथा राष्ट्रपति सम्मान एवं विभिन्न पुरस्कारों के द्वारा उन्होंने जिले का गौरव भी बढ़ाया था।

इस अंक मे डॉ. कपिलदेव द्विवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारियां हमने अनेक लेखों के माध्यम से प्रकाश में लाने का विनम्र उपक्रम किया है। आशा है, इनसे प्रेरित एवं अनुप्राणित होकर हमारे कतिपय युवा-वर्ग अपने अतीत से प्रेरण लेंगे एवं तदनुसार आचरण कर स्वयं गौरवान्वित महसूस करेंग और साथ ही समाज का गौरव भी बढ़ाएंगे।

डॉ. द्विवेदी जी के ग्रन्थों के प्राप्ति स्थल

उनके द्वारा लिखित (1) मौलिक कृतियों (काव्य ग्रन्थों) (2) शोध-ग्रन्थों (3) संस्कृत व्याकरण, अनुवाद, निबन्ध (4) आलोचनात्मक संस्करण (व्याख्या सहित) (5) अनूदित ग्रन्थ (6) संपादित ग्रन्थ (7) अन्य ग्रन्थों के प्राप्ति-स्थान इस प्रकार हैं:

1. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी-221001, फोन: (0542)-2413741
2. विजयकुमार गोविंदराम हासानंद, 4408, नई सड़क, दिल्ली फोन-23977216
3. चौखम्भा संस्कृत भवन, चौक वाराणसी-221001

–राजाराम जासयवाल

पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

जन्म तिथि 06 दिसम्बर 1918

जन्म स्थान-गहमर (गाजीपुर)

डा. भारतेन्दु द्विवेदी (पुत्र),
एसोसिएट-प्रोफेसर (अ.प्रा)

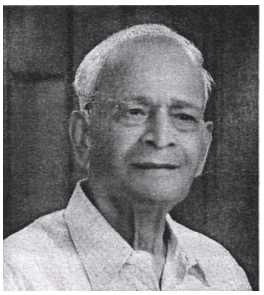

परिचयः डॉ. कपिलदेव द्विवेदी का **जन्म 6 दिसम्बर 1918** को **ग्राम गहमर जिला गाजीपुर के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था।** दादा जी **श्री छेदीलाल** जी प्रसिद्ध धनी-मानी उद्योगपति थे तथा पिता **श्री बलरामदास** जी और माता **श्रीमती वसुमती देवी** थीं। पिता एक त्यागी, तपस्वी समाजसेवी थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन देशसेवा में लगाया। आपके पिताजी और माताजी दोनों स्वतंत्रता संग्राम-सेनानी थे। वे तीन बार स्वतंत्रता-संग्राम आन्दोलन में जेल गए। आपके पिताजी ने आपके जन्म से पहले दो निर्णय लिए थे। बालक का नाम **कपिलमुनि** के नाम पर **कपिल देव रखा जाएगा** और उसे शिक्षा के लिए गुरुकुल भेजा जाएगा। पूर्व निर्णय के अनुसार बालक का नाम **कपिलदेव** रखा गया और कक्षा 4 तक अध्ययन के बाद गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, (हरिद्वार) में संस्कृत की उच्च शिक्षा के लिए भेजा गया।

शिक्षा दीक्षाः– 10 वर्ष की आयु में डॉ. द्विवेदी को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रविष्ट कराया गया। आपने 1928 से 1939 तक गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की। गुरुकुल में रहते हुए आपने **शास्त्री परीक्षा** उत्तीर्ण को और आपको गुरुकुल की उपाधि **विद्याभास्कर** प्राप्त हुई। सभी परीक्षाओं में आप प्रथम श्रेणी के साथ प्रथम स्थान पर रहे। **यहाँ रहते हुए आपने यजुर्वेद और सामवेद दो वेद कंठस्थ किए और उसके परिणामस्वरूप** गुरुकुल से **द्विवेदी** की उपाधि प्रदान की गई। आपने गुरुकुल में रहते हुए बंगला और उर्दू भाषा भी सीखी। साथ ही भारतीय व्यायाम, लाठी, तलवार, युयुत्सु और पिरामिड बिल्डिंग आदि की शिक्षा भी प्राप्त की। गुरुकुल में रहते हुए आप 1939 में स्वतंत्रता संग्राम के अंग हैदराबाद **आर्य-सत्याग्रह आन्दोलन** में 6 मास कारावास में रहे। आप भी अपने पिता के तुल्य स्वतंत्रता सेनानी थे।

शैक्षणिक योग्यताः–आपने पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से 1946 में प्रथम श्रेणी में प्रथम रहते हुए एम.ए. संस्कृत की परीक्षा उत्तीर्ण की। वही से एम.ओ.एल. की उपाधि भी आपको प्राप्त हुई। **आपके छोटे भाई सत्यदेव जी ने लाहौर से 1947 में मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास किया।** तदनन्तर कपिलदेव जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में **डॉ. बाबूराम सक्सेना** के निर्देशन में भाषाविज्ञान विषय में 1949 में **डी.फिल.** की उपाधि प्राप्त की। आपने संस्कृत यूनिवर्सिटी वाराणसी से व्याकरण विषय में **आचार्य** की उपाधि प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम रहते हुए उत्तीर्ण की। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से **आचार्य डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी** के निर्देशन में प्रथम श्रेणी में **एम.ए. (हिन्दी)** की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। आपने अनेक भाषाओं में विशेष योग्यता प्राप्त की। प्रयाग विश्वविद्यालय से आपने जर्मन, फ्रेंच, रूसी, चीनी आदि भाषाओं में प्रोफिसिएन्सी परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसके अतिरिक्त पालि, प्राकृत, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी और उर्दू में भी आपने विशेष दक्षता प्राप्त की है।

पारिवारिक जीवनः– डॉ. द्विवेदी का संपूर्ण जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहा है। आपका विवाह 1953 में चन्दौसी निवासी **श्री रामशरणदास की पुत्री ओमशान्ति** से हुआ। आपके पाँच पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। प्रायः सभी एम.ए./एम.एस-सी., पी-एच.डी. हैं। आप उच्चकाटि के साधक रहे। 1942 में योग की शिक्षा प्राप्त करने के बाद योग आपके दैनिक जीवन का अंग बन गया। आप नियमित रूप से योगाभ्यास करते रहे। आपने अपने समस्त अनुभव **साधना**

और सिद्धि योग और **आरोग्य** नामक पुस्तक में दिए हैं। दुर्भाग्यवश आपकी पत्नी का निधन 28 दिसम्बर 1973 को प्रातः 5 बजे हुआ। तत्पश्चात् आपने मां और पिता दोनों के दायित्व का निर्वहन करते हुए परिवार को संरक्षण दिया। **आपने 93 वर्ष की अवस्था में 28 अगस्त 2019 को 1 बजे अपराह्न में इस भौतिक शरीर का परित्याग किया।** आपका अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ किया गया।

शैक्षणिक सेवाएँः– आप 1940 से 1944 तक नारायण स्वामी हाईस्कूल, रामगढ़, नैनीताल में संस्कृत-शिक्षक रहे। तदनन्तर 1950 से 1954 तक सेंट एन्ड्र्यूज कालेज, गोरखपुर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे। नवम्बर 1954 से मार्च 1965 तक देवसिंह बिष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय नैनीताल में संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे। मार्च 1965 से जुलाई 1977 तक काशी-नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर (भदोही) में **संस्कृत विभागाध्यक्ष, उपाचार्य** एवं **प्राचार्य** पदों पर आसीन रहे। अगस्त 1977 से जून 1978 तक राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर (चमोली) में **प्राचार्य** रहे। वहाँ से 30 जून 1978 को राजकीय सेवा से अवकाश प्राप्त किया। तदनन्तर 1980 से 1992 तक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में **कुलपति** रहे। आपने 1979 में **विश्व भारती अनुसंधान परिवार, ज्ञानपुर** की स्थापना की और 2011 तक उसके निदेशक रहे।

ग्रन्थ-लेखनः– डॉ. द्विवेदी की प्रथम पुस्तक **'संस्कृत-रत्नावली'** यू.पी.बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा में संस्कृत की पाठय पुस्तक के रूप में निर्धारित हुई। इससे आपको पर्याप्त यश मिला। इसके पश्चात् आपने **रचनानुवाद-कौमुदी** 1952 में लिखी। निरन्तर लेखन साधनारत रहते हुए आपने **80** से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन **92** वर्ष की अवस्था तक किया।

विशिष्ट सेवाः– डॉ. द्विवेदी की गणना विश्व के प्रमुख प्राच्यविद्याविदों, भाषाविदों और वेदविदों में की जाती है। आप संस्कृत भाषा के सरलीकरण पद्धति के उन्नायक एवं प्रवर्तक माने जाते हैं। संस्कृत को लोकप्रिय बनाने में आपका महत्वपूर्ण योगदान है। वेदों के जन-जन तक पहुँचाने के लिए आपने वेदामृतम् ग्रन्थमाला के 40 भागों का लेखन और प्रकाशन किया। फलतः आज वेदों का ज्ञान जन सामान्य के लिए उपलब्ध है।

विदेश यात्राः– आपने भारतीय संस्कृति के प्रचार के लिए 1976, 1989, 1990, 1991 और 1993 में विदेश यात्रा की है। इनमें ये देश सम्मिलित हैं– अमेरिका (उत्तरी और दक्षिणी), कनाडा, इंग्लैण्ड, जर्मनी, हालैण्ड, फ्रांस, इटली, स्विट्जरलैण्ड, सूरीनाम, गुयाना, मारीशस, कीनिया, तंजानिया और सिंगापुर।

सम्मान, अभिनन्दन एवं पुरस्कारः–

1. संस्कृत साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए आपको भारत सरकार ने सन् 1991 में **'पद्मश्री'** अलंकरण से विभूषित किया।
2. भारतीय विद्याभवन बंगलौर द्वारा गुरु गंगेश्वरानन्द **वेदरत्न** पुरस्कार 2005,
3. दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा **महर्षि वाल्मीकि सम्मान** 2010-2011 (डेढ़ लाख रु.) से 24-8-11 को सम्मानित,
4. भारत सरकार द्वारा 15 अगस्त 2010 को संस्कृत भाषा की सेवा के लिए **'राष्ट्रपति सम्मान'**।
5. **"विशिष्ट पुरस्कार"** उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान (1992) द्वारा (25,000रु.) संस्कृत साहित्य की विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया गया।
6. **'वेद-पंडित'** पुरस्कार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन द्वारा 1995,
7. **"पण्डित राज जगन्नाथ संस्कृत पद्य रचना पुरस्कार"** दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत मौलिक काव्य रचना **"आत्मविज्ञानम्" (संस्कृत महाकाव्य)** पर 1997 में,
8. **"बीरबल साहनी पुरस्कार"** 1993 में **"वेदों में आयुर्वेद"** पर (11,000 रु.) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा,
9. **के.एन. भाल पुरस्कार** वर्ष 2000 में **'वेदों में विज्ञान'** ग्रन्थ पर (20,000 रु.) उ.प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा,

10. **हजारीप्रसाद द्विवेदी अनुशंसा पुरस्कार** 1988, **अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन**, ग्रन्थ पर उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा।
11. **वेद वेदाङ्ग पुरस्कार** (25000रु.), आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई (2000),
12. **आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार** (1991) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा।
13. **संस्कृत वर्ष सम्मान पत्र**, सम्पूर्णानन्द सं. वि.वि., वाराणसी (2000),
14. **राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सहस्राब्दि सम्मान** (23.09. 2000) सहस्राब्दि विश्व हिन्दी सम्मेलन नई दिल्ली द्वारा,
15. **वैदिक विद्वान् पुरस्कार** (1995) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली,
16. **विद्यामार्तण्ड स्वामी धर्मानन्द स्मृति पुरस्कार** (5000 रु.) 1998, आर्य वानप्रस्थ एवं विरक्त आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार।
17. **'Certificate of Honour'** 'International Conference on History of Mathematics' (गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वार) (16 दिसम्बर 1999)।
18. **'ज्ञानगिरी'** सम्मान प्रशासनिक अध्ययन संस्थान मुजफ्फरपुर (19.02.1991),
19. **रत्नप्रकाश मेमोरियल** ट्रस्ट गोरखपुर द्वारा **'रत्नप्रकाश सम्मान 2006'**,
20. **'आर्य विभूषण पुरस्कार 2008'** (रु. बीस हजार) राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबुल ट्रस्ट नागपुर द्वारा।
21. **'Lifetime Achievement Award'** by All India Carpet Manufactures Association, Bhadohi. March 2011.

सूरीनाम के राष्ट्रपति ने 1990 में और **मारीशस के राष्ट्रपति** ने 1991 में आपका विशेष सम्मान किया था। विदेशों में **लन्दन युनिवर्सिटी** के प्राच्य विभाग ने 1989 में, **फ्रैंकफर्ट यूनिवर्सिटी** के हिन्दी विभाग ने 1989 में, **ईस्ट-वेस्ट यूनिटी युनिवर्सिटी** न्यूयार्क ने 1990 में, **टोरेंटो यूनिवर्सिटी** संस्कृत विभाग ने 1990 में, **गुयाना यूनिवर्सिटी** के साइंस विभाग ने 1990 में आपका **सार्वजनिक अभिनन्दन** किया। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज शताब्दी समारोह, नई दिल्ली द्वारा 1975, महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी, अजमेर द्वारा 1983, **आर्यसमाज शताब्दी समारोह कलकत्ता** द्वारा 1985 में सम्मानित किया गया। **विन्ध्य गौरव सम्मान** 1999, विन्ध्य महोत्सव समिति द्वारा प्रदान किया गया। मदोही रत्न सम्मान 2018 में मरणोंपरांत।

आपकी इन रचनाओं पर उत्तर प्रदेश एवं केन्द्रीय सरकार से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं: 1. अर्थविज्ञान और व्याकरण-दर्शन 1952, **2. संस्कृत व्याकरण 1972, 3. संस्कृत निबन्धशतकम् 1977, 4. राष्ट्रगीतांजलिः 1981, 5. भक्ति-कुसुमाञ्जलिः 1990, 6. अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन 1991, 7. वेदों में आयुर्वेद 1995, 8. आत्मविज्ञानम् 1995, 9. वेदों में राजनीतिशास्त्र-1997, 10. वेदों में विज्ञान 2004।**

आपको **तीन अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किए गए**– 1. **डॉ. कपिलदेव द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ (81वें जन्मदिवस पर), 2. अभिनन्दन भारती एवं संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण चेतना (86वें जन्मदिवस पर), 3. सारस्वत साधना के मनीषी एवं संस्कृत वाङ्मय में वाङ्मय में विज्ञान (91वें जन्मदिवस पर)।**

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी की रचनाएं

(क) मौलिक कृतियां - काव्य ग्रन्थ

1. आत्मविज्ञानम् (योग विषयक संस्कृत महाकाव्य), 2. राष्ट्रगीतांजलिः (स्वाधीनता संग्राम का इतिहास एवं 50 राष्ट्रीय गीत), 3. भक्तिकुसुमांजलिः (संस्कृत में 100 भक्तिगीत), 4. **शर्मण्याः प्राच्यविदः** (German Indologists) 50 संस्कृतज्ञ जर्मन विद्वानों का जीवनवृत्त एवं कृतित्व संस्कृत श्लोकों में, 5. शान्तिस्तोत्रम् एवं महाप्रयाणम्, (लघु शोकगीतिकाव्य), 6. गीताञ्जलिः (स्फुट गीतों का संकलन), 7. संस्कृत कविहृदयम् (संस्कृत के महाकवियों का काव्यात्मक परिचय), 8. जयतु सुरभारती।

(ख) मौलिक कृतियां - शोध ग्रन्थ

9. The Essence of the Vedas, 10. A Cultural Study of the Atharva Veda, 11. अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन,

12. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, 13. **साधना और सिद्धि** (योग एवं आरोग्य), 14. वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं शिक्षाशास्त्र, 15. वेदों में राजनीति-शास्त्र, 16. वैदिक दर्शन, 17. वेदों में विज्ञान, 18. वेदों में आयुर्वेद, 19. वैदिक देवों का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप, 20. वेदों में लोककल्याण, 21. अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन, 22. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, 23. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, 24. देववाणी-वैभव, 25. भाषाविज्ञान, 26. वेदामृतम्-सुखी जीवन, 27. वेदामृतम्-सुखी गृहस्थ, 28. वेदामृतम्-सुखी परिवार, 29. वेदामृतम्- सुखी समाज, 30. वेदामृतम्-आचार शिक्षा, 31. वेदामृतम्-नीति शिक्षा, 32. वेदामृतम्-वेदों में नारी, 33. वेदामृतम्-वैदिक मनोविज्ञान, 34. वेदामृतम्-ऋग्वेद-सुभाषितावली, 35. वेदामृतम्- सामवेद-सुभाषितावली, 36. वेदामृतम्- यजुर्वेद- सुभाषितावली, 37. वेदामृतम्-अथर्ववेद-सुभाषितावली।

(ग) संस्कृत व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध

38. संस्कृत व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी, 39. प्रौढरचनानुवाद-कौमुदी, 40. रचनानुवाद-कौमुदी, 41. प्रारम्भिक रचनानुवाद-कौमुदी, 42. संस्कृत प्रभा, 43-47. संस्कृत शिक्षा (भाग 1 से 5), 48. संस्कृत निबन्धशतकम्, 49. लघुसिद्धान्त-कौमुदी (संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण), 50. लघुसिद्धान्त-कौमुदी (समास एवं विभक्ति प्रकरण), 51. लघुसिद्धान्त कौमुदी (कृदन्त, तद्धित एवं स्त्री प्रत्यय)।

(घ) आलोचनात्मक संस्करण व्याख्या सहित

52. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 53. उत्तररामचरितम्, 54. प्रतिमानाटकम्, 55. पिंगल छन्द:सूत्रम्, 56. किरातार्जुनीयम् (सर्ग-1), 57. किरातार्जुनीयम् (सर्ग-4), 58. कठोपनिषद् (अध्याय-1), 59. शिशुपालवधम् (सर्ग-4)।

(ङ) अनूदित ग्रन्थ (हिन्दी अनुवाद)

60. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका (मेकडानल), 61. काले हायर संस्कृत ग्रामर (एम.आर.काले), 62. संस्कृत साहित्य का इतिहास (वी. वरदाचारी)।

(च) संपादित ग्रन्थ

63. श्री मोहनलाल मोहित (मारीशस) अभिनन्दन ग्रन्थ, 64. आत्मकथा: महात्मा नारायण स्वामी, 65. विश्वशान्ति-महायज्ञ-विधि, 66. वैदिक उपासना-विधि, 67. प्रभुभक्ति के गीत, 68. कुम्भपर्व माहात्म्य, 69. गहमर गौरव।

(छ) अन्य ग्रन्थ

70. शकुन्तला-नाटक (हिन्दी नाटक), 71. संस्कृत रत्नावली, 72. संस्कृत गद्यतरंगिणी, 73. संस्कृत गद्यमंजरी, 74. संस्कृत गद्य-नवनीतम्, 75-77. संस्कृत कौमुदी (भाग 1, 2, 3), 78. वैदिक संध्या आइन क्षेत्र 79. आर्य समाज एण्ड इट्स मिशन 80. संस्कृत मुक्तावली, 81. रामकथा और नए प्रतिमान।

(ज) अप्रकाशित ग्रन्थ

1. श्रीयतिर्दर्शनानन्द दर्शनम्, 2. योगासन एवं प्राणायाम, 3. आत्मशान्ति सोपानम्।

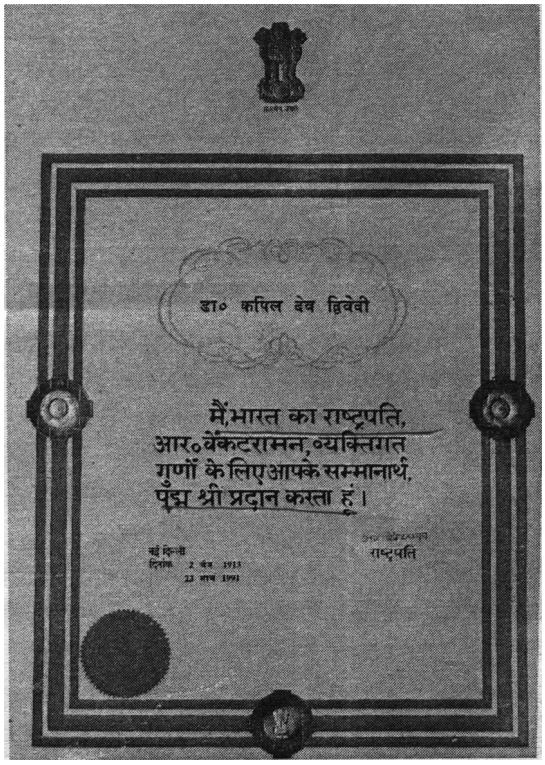

पूरे राजकीय सम्मान के साथ आपका अन्तिम संस्कार किया गया। सभी मार्केट और शिक्षण संस्थाएं बंद रहे।

PADMASHRI DR. KAPIL DEV DVIVEDI

His Outstanding Contribution to Vedic and Sanskrit Literature

Dr. Dvivedi occupies an eminent position among the Sanskrit scholars of Inida. He has published so far more than 70 books on Vedic and Sanskrit Literature, which run into more than 25 thousand pages. He is an authority on **Sanskrit Grammar.** His book 'Artha-Vjgyana Aur Vyakarana-Darshana' (Contribution of Ancient Indian Grammarians to the Study of Semantics) is highly praised by the Scholars. He has received awards from the Government and Academies on his 8 books: 1. **Artha-Vigyana Aur Vyakarana-Darshana** (1952), 2. **Sanskrit Vyakarana** (1972), 3. **Sanskrit Nibandha-Shatakam** (1977), 4. **Rashtra-Gitanjalih** (1981), 5. **Bhakti Kusumanjalih** (1990), 6. **Atharva Veda ka Samskritik Adhyayana** (1991), 7. **Vedon Men Ayurveda** (1995), 8. **Atma-Vijnanam** (1995):

President of India conferred Padmashri award in 1991. He visited U.S.A., Canada, Europe, Africa and Mauritius on 'Lecture Tours' and delivered more than **400 lectures in Universities. Cultural and social organisations.** As a scholar of the 'Vedas' of international repute, he received honours from several Universities and social organisations."

In his early life he learnt by heart two Vedas : **Yajurveda and-Samaveda**. He has learnt more than 10 foreign and Indian languages. As a Sub-editor he was associated with the **Hindi Milap daily** (Lahore). He belongs to the family of Freedom Fighters and himself is a Freedom Fighter.

His books on Sanskrit Grammar, Translation and Composition are very popular. More than three lac copies of some of them are sold so far. He is a Sanskrit Poet also. He has published more than four Sanskrit Poetry books so far.

He was also interested in the Yogic Practices. Several Camps were organised by him for teaching and practising the Yogic Exercises.

Dr. K.D. DVIVEDL was Director, Vishva Bharati Research Institute, Gyanpur (Bhadohi) UP, India.

A brief Bio-data of Dr. K.D. DWIVEDI

Ex-Vice-Chancellor, Gurukul M.V. Haridwar,
Director, Vishva Bharati Research Institute,
Gyanpur (Bhadohi) U.P., INDIA

Date and Place of Birth: 6.12.1918, GAHMAR (GHAZIPUR) U.P.

Parents : Shri Bal Ram Das and Smt. Vasumati Devi.

Education : Gurukul M.V. Haridwar, Lahore and Allahabad.

Academic Quafications: M.A. (Sanskrit, Punjab U.), M.A. (Hindi, B.H.U.), D.Phil. (Sanskrit, Allahabad U.), Vyakarana-Acharya (Varanasi), Vidya Bhaskara (Haridwar).

Proficiency in: German, French Russian, Chinese, Sanskrit, Hindi, Marathi, Bengali, Pali, Prakrit, Urdu.

Teaching & Administrative Experience : 1. Professor of Sanskrit, St.Andrew's College, Gorakhpur; Govt. Post-Graduate College, Nainital and Gyanpur. 2. Princpal, Govt. P.G. College Gyanpur and Gopeshwar (Chamoli). U.P.E.S. Class 1. Retired.

Specialization : Vedic and Sanskrit Literature, Sanskrit Grammar, Linguistics, Indian Philiosophy, Theosophy, Epigraphy and Palaeography.

Foreign Tours: Visited U.S.A., Canada, U.K., Germany, Netherland, France, Italy, Switzerland, Suriname, Guyana, Mauritius, Kenya and Singapore in 1976, '89, '90, '91 and '93 on Lecture Tours'.

Awards and Honours : (1) **Padmashri** (Govt, of India, 1991). (2) **Awards** (a) Goverdhan Shastri Award (Gurukul Kangri, 1991), (b) Special Award (U.P. Govt. 1995), (c) Birbal Sahni award (U.P. Govt. 1995), (d) Veda-Vedanga Puraskar (Arya Samaj, Mumbai, 2000), (3) **Honours From** - (a) President of Suriname (1990), (b) President of Mauritius (1991), (4) **Felicitations from Universities**- (a) London U., Oriental Deptt. (1989), (b) Frankfurt U., Hindi Deptt. (1989), (c) University of East and West Unity, New York (1990), (d) Toronto U., Sanskrit Deptt. (1990), (e) Suriname U., Science and Medical Science Deptt. (1990), (f) Guyana U. Science Deptt. (1990), (5) **Honours from Social Organisations** - Arya Samaj and Vishva Hindu Parishad in India and abroad.

Some Important Works of Dr. K.D. DVIVEDI

(A) ORIGINAL WORKS

(1) Artha Vijnana Aur Vykarana-Darshana (Contribution of Ancient Indian Grammarians to the Study of Semantics).

(2) Atharva Veda Ka Samskritika Adhyayana.

(3) A Cultural Study of the Atharvaveda

(4) Bhasha Vijnana Evam Bhashashastra (Comparative Philology & General Linguistics)

(5) Sanskrit Sahitya Ka Samikshatmaka Itihasa. (A Critical history of Sanskrit Literature)

(6) Vaidika Sahitya Evam Samskriti. (A Study of the Vedic Literature and Culture)

(7) Sanskrit Nibandha Shatakam (100 Standard Sanskrit Essays)

(8) Vedamritam Series (40 Volumes)

(9) The Essence of the Vedas (1400 Verses in Roman Script & English Trans.)

(B) SANSKRIT POETRY:

(1) RashtraGitanjalih (50 National Songs & History of Freedom Movement)

(2) Bhakti-Kusumanjalih (100 Devotional Songs)

(3) Sharmanyah Prachyavidah (50 German Indologists)

(4) ATMA-VIJNANAM (The Science of Soul)

(C) SANSKRIT GRAMMAR,TRANSLATION & COMPOSTTION:

(1) Sanskrit Vyakarana Evam Laghu Siddhanta Kaumudi (Sanskrit Grammar & Laghu Siddhanta Kaumudi)

(2) Praudha Rachananuvada Kaumudi, (Higher Sanskrit Grammar, Trans. & Composition)

(3) Rachananuvada Kaumudi (Sanskrit Grammar, Trans. & Comp.)

(4) Prarambhika Rachananuvada Kaumudi (Elementary Sanskrit Gram..Trans. & Comp.)

(5) Sanskrit Shiksha (Part 1 to 5) (Desk-Work)

(D) ANNOTATED WORKS:

(1) Abhijnana-Shakuntalam, by Kalidasa

(2) Uttara-Rama-Charitarn, by Bhavabhuti

(3) Pratima Natakam, by Bhasa

(E) TRANSLATED WORKS (Translated from Eng. to Hindi):

(1) Macdonell's Sanskrit Grammar tor Students

(2) Kale s Higher Sanskrit Grammar

(3) V. Varadachari's History of Sanskrit Literature

VEDAMRITAM-SERIES

(The Essence of The Vedas. Published in 40 Vols.)

Each book contains 100 Mantras on some specific subject. Each Mantra contains Paraphrase, Word-meaning, Hindi & English Translation, Critical appreciation and grammatical Notes. In the Introduction a summary of the book is given. In Subhashitavalis all the Maxims are arranged subject-wise and alphabetically and Hindi Trans, is given there.

PUBLISHED VOLUMES

1. Sukhi Jiwan (Lead a happy, life)
2. Sukhi Grihastha (Lead a happy conjugal Life)
3. Sukhi Pariwara (Make Family-Life Prosperous)
4. Sukhi Samaja (Make Society Prosperous)
5. Achara-Shiksha (Code of Conduct)
6. Niti-Shiksha (Science of Ethics)
7. Vedon Men Nari (Status of Women in the Vedas)
8. Vedic Manovijnana (Psychology in the Vedas)
9. Yajur-Veda Subhashitavali (Maxims from the Y.V)
10. Sama-Veda Subhashitavali (Maxims from the S.V.)
11. Atharva-Veda Subhashitavali (Maxims from the A.V.)
12. Rig-Veda Subhashitavali (Maxims from the R.V.) 13-16!.-Vedon Men Ayurveda (Medical Sciences in the Vedas) 17-20.Vedon Men Rajaniti Shashtra (Vedic Polity)

21-25. Vedon men Vijnana (Positive Sciences in the Vedas)

REMAINING VOLUMES TO BE PUBLISHED:

26. Vedic Sociology 27-30. Vedic Philosophy & Theosophy

31-38. Agriculture, Grafts, Science of Yajna, Education, Economics, Linguistics, Rhetorics etc.

39-40. Scientific & Spiritual Aspects of the Vedic deities.

Books are available at:

1. VISHVABHARATI RESEARCH INSTITUTE, GYANPUR (BHADOHI) U.P. INDIA.

2. VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN, CHOWK, VARANASI

"सदाशयता के मूर्तिमान विग्रहः संस्कृत साहित्य के शलाकापुरुष"

-डॉ. जयश्री द्विवेदी (पुत्रवधू)

बचपन से घर के बड़े-बुजुर्गों और मेरी माँ ने उपदेश दिया था कि शादी के बाद लड़की के वास्तविक माता-पिता उसके श्वश्रू-श्वसुर (सास-ससुर) ही होते हैं। पतिगृह का मान सम्मान, उत्कर्ष विकास ही उसका अपना होता है। आज 30 वर्षों के जुड़ाव के दौरान मुझे कोई ऐसा अवसर स्मरण नहीं आता, जब मैंने अपने श्वसुर की अवज्ञा की हो या उन्होंने मेरी किसी भावना का सम्मान नहीं किया हो, चाहे वह मेरी सूदूर बाँदा जाकर अध्यापन कार्य को करने से ही क्यों न रहा हो। कई अर्थों में मुझे पिताश्री से अपने माता-पिता की तुलना में भी अधिक स्नेह, सम्मान और अपनापन मिला है। जिनकी रग-रग में व्यष्टि के लिए, समष्टि के लिए, कला साहित्य और संस्कृति के लिए गहन अनुराग था। ऐसे पिता के परिवार में आकर मैं अपने को कृतकृत्य अभिभूत करती हूँ।

सरस्वती के तपःपूत श्रद्धेय पिताश्री ने शादी के बाद प्रथम आगमन पर ही मुझे सस्नेह आर्शीवाद प्रदान किया क्योंकि उसी दिन 'स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी के पेंशन-स्वीकृति' की सूचना प्राप्त हुई थी। पिताजी के बारे में जितना कुछ सुना था, मिलने पर उससे अधिक पाया। इनकी ऊँचाई के लिए मेरे मन मस्तिष्क में पहले से खिंची तमाम रेखाएँ बौनी हो गईं। लगा कि इनके व्यक्तित्व और कृतित्व के लिए जो रेखा खींची जा सकती है, उसका स्पर्श आम आदमी नहीं कर सकता।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पिताश्री अपने परिवार के बौद्धिक मार्गदर्शक भी थे। जबसे मैं 'शान्ति निकेतन' पतिगृह आई वे मुझे अपने परामर्श से मेरे बौद्धिक परिष्कार का प्रयास करते रहे हैं, नई एवं सही दिशा दिखाते रहे हैं। उनकी प्रेरणा से मैंने अपने प्रिय विषय गृहविज्ञान पर अध्यवसाय तो काफी कुछ किया, किन्तु लेखन के लिए अपेक्षित इच्छाशक्ति अब तक नहीं जुटा सकी थी। **अब जब पिताजी के अभिनन्दन सम्बन्धी सारस्वत अनुष्ठान पर कुछ लिखने की अभिलाषा हुई, तब इसमें अपनी समिधा अर्पित करने के लिए शब्द स्वतः निःसृत होने लगे। आज मैं अपनी स्मृतियों और भावनाओं का जैसा भी शब्द चित्र खींच पा रही हूँ, वह पूज्य पिताश्री के अपरिमित स्नेह, आशीष और प्यार का ही सुपरिणाम है। आज भी जब कभी मेरा मन उदास उद्विग्न या अशान्त परेशान होता है, मैं पिताश्री की छाया में चली जाती हूँ। उनका सामीप्य मेरे लिए अमूल्य उपलब्धि थी।**

मैं पिताजी के वैचारिक आलेखों को पढ़कर नीरव मुग्धता के अनुभव बटोरती रही हूँ, जिनकी कर्मठता और ऊर्जस्विता को अशेष प्रेरणा-श्रोत के रूप में मन ही मन सहेजती आई हूँ। उनके जीवन का हर पृष्ठ एक कर्मयोगी की सच्ची मनस्विता के अनुपम वैशिष्ट्य से भरा-पूरा रहा है। अपने समकालीनों से विशुद्ध मैत्री भाव का निष्कपट निर्वाह करने वाले, भावी परम्परा को समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त संवेदना की आश्वस्ति देने वाले, ऐसी विशाल प्रकृतिवाले सहज मानव के लिए उत्तुंग पर्वत शिखरों के उन्मुक्त निर्झर के उपमान सँजोये जाते हैं। **पर न जाने क्यों पिताश्री की उस अप्रतिम गरिमा को देखकर मुझे खुली धरती के वक्ष पर दूर-दूर तक फैले हुए सघन दूर्वा-दलों का स्मरण हो आता था, अपनी विनम्रता में महान, अपने संकोच में अतिशय सहज, अपनी व्यावहारिकता में सबको सौजन्य का सुख देने वाली यह सारस्वत अस्मिता अक्षय कीर्ति के साथ अपनी बेटी (डॉ. जयश्री) को शुभाषित करते रहें।**

पिताजी जितने पारंगत विद्वान अपने विषय के थे उतनी ही कुशलता परिवार संरक्षण, गृह प्रबन्धन की भी थी। मेरे पति **डॉ. धर्मेन्दु द्विवेदी सहित** 5 भाई 2 बहन का प्रतिष्ठित परिवार है। मेरी श्वश्रू (सास) का शिव सायुज्य (निधन) सन् 1973 में ही हो गया था। ऐसी विषय परिस्थिति में भी **श्वश्रू-श्वसुर की दोहरी भूमिका** का

निर्वहन करते हुए वात्सल्य और अनुशासन में कुटुम्ब को सहेजे रखा। सभी भाई-बहनों का कार्य साधिकार विभाजित था। सभी नियम से अपने कार्य के प्रति उत्तरदायी थे। साप्ताहिक कार्य-विभाजन निर्धारित था। सभी मनोयोग से सफाई से लेकर भोजन बनाने तक आश्वस्त रहते थे। **भरा-पुरा परिवार एक माँ के बिना सुयोग्य, आचारवान, गुणशील से परिपूर्ण करना, पिताजी की ही सर्वोत्तम देन है।**

पिताश्री **सरस्वती के वरद पुत्र थे।** संस्कृत व्याकरण, समस्त साहित्य, वेद और दर्शन के मर्मज्ञ अध्येता थे। उन्होंने संस्कृत गद्य, निबन्ध, महाकाव्यो की रचना की। मेरे परिणय के समय वेदों का ज्ञान सरल भाषा में जन साधारण को सुलभ कराने के लिए **'वेदामृतम्-ग्रन्थमाला** के 40 भागों पर कार्य कर रहे थे। **उन्होंने 'वेदामृतम्' ग्रन्थमाला के 40 भागों के लेखक एवं प्रकाशन का कार्य पूर्ण करने का संकल्प राजकीय सेवा से निवृत्ति के पश्चात् किया था। प्रसन्नता एवं सन्तोष है कि उन्होंने इस संकल्प को अपने जीवनकाल में पूर्ण किया। यह सारस्वत साधना 30 वर्षों के सतत प्रयास से सन् 2008 में परिपूर्ण हुई। मेरे पिताश्री वास्तव में एक सिद्ध योगी थे।** कोई रागद्वेष नहीं था। अपने जीवन पर्यन्त किए गए कार्यो से संतुष्ट थे। कोई इच्छा जिजीविषा शेष नहीं थी। उन्होंने बाह्य इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं से मन को नियंत्रित कर लिया था। **ऐसे कर्मठ, लगनशील और अपरिग्रही वेदज्ञ, वैयाकरण का सम्मान हमारा सामाजिक दायित्व तो है ही, व्यापक रूप से श्रम, संघर्ष और निष्ठा के प्रति विनम्र प्रणति भी है।**

पिताश्री में नवीनतम पाठ्य सामग्री एकत्र करने और जनहित की दृष्टि से कलम उठाने की प्रवृत्ति अपनी आयु के नौ दशक से भी अधिक कालावधि में यथापूर्व विद्यमान थी। उ**नका समग्र जीवन संघर्षजीवी होकर भी संघर्षजयी बना रहा। अभिनन्दनीय पिताश्री के उपरिविवेचित गुण वैशिष्ट्य का ही बहुकोणीय आकलन और आशंसन इनकी पुस्तकों में उपन्यस्त हुआ है, जिसमें अपने जीवन के ऋद्धिपूर्ण प्रवेश की मंगलवेला में इनके हितैषियों, इष्ट-मित्रों, शुभानुध्यायियों, स्वजन-परिजनों और बन्धु-बान्धवों ने सर्वतोभद्र उपलब्धियों की आन्तरिक प्रदक्षिणा की है।** यह जीवनावधि उनकी सुदीर्ध अक्षर यात्रा का समापन-बिन्दु नहीं, प्रत्युत ऐसा विराम बिन्दु है जहाँ से उनकी आक्षरिक साधना अथवा वाङ्मयतया की उपलब्धियों का आकलन किया जा सकता है।

मुझे यह कहने में कतई संकोच नहीं है कि पिताजी संस्कृत साहित्य की पुरातन, नवीन प्रकृष्ट आश्रयदाता परम्परा की एक महार्घ कड़ी थे, और इनके सौजन्य, स्नेह और वात्सल्य के अमृत से सिंचित होकर अनेक सारस्वत मुकुल चटक रहे हैं, पुष्पित होकर सुरभि-दान कर रहे हैं। **कलुष और दुर्भावना से कोसों दूर उनका व्यक्तित्व उनके कृतित्व से भी अधिक सुष्ठु, सौम्य, आकर्षक और प्रभावशाली था।**

एक और प्रसंग का जिक्र किए बिना मन मान नहीं रहा, हालाँकि यह बहुत विशिष्ट भी नहीं। **वस्तुतः कोई भी बात अपने आप में छोटी या बड़ी नहीं होती, बल्कि विशेषता सूक्ष्मेक्षिका की होती है, जो तह में जाकर मर्म-शोधकर लेती है और जिसकी तीक्ष्ण क्षणप्रभा में जीवन का कोई गौरवपूर्ण आयाम आपाततः प्रत्यक्ष हो उठता है।** मैं गृह विज्ञान की शिक्षिका होने के नाते पूज्य पिताश्री की दैनिक दिनचर्या की कायल हूँ। **प्रातकाल 4 बजे उठना,** दैनिक क्रिया से दवा तक, व्यायाम से अध्यवसाय तक, नास्ता से लेकर भोजन तक, सबका समय एवं मात्रा निर्धारित था। कैलोरी एवं पोषक तत्वों की मात्रा आवश्यकतानुरूप थी। दैनिक दिनचर्या इतनी नियमित थी कि प्रत्येक कार्य निर्धारित समय में पूर्ण करते थे। ऐसे गुणग्राही, अविकत्थन व्यक्तित्व को मैंने **'धीरोदात्तता' के स्मृहणीय प्रतिमान के रूप में देखा, पढ़ा और सुना है।**

'सादा जीवन उच्च विचार' के आदर्श को अंगीकार करने में पिताजी की अर्थ-व्यवस्था की चाहे जो भी भूमिका रही हो किन्तु कठिन-से-कठिन स्थिति में जीते हुए भी कभी किसी के सामने हाथ फैलाना अच्छा नहीं समझा और न किसी भी विषम-से-विषम स्थिति में

स्वाभिमान को झुकने दिया। सादगी, सरलता, विनम्रता और सहृदयता तो जैसे उन्हें विरासत में प्राप्त हो, जिन्हें उन्होंने बड़ी निष्ठा, प्रसन्नता और गौरव के साथ सँजोया था।

'शान्ति निकेतन' पतिगृह आने पर ऐसा लगा जैसे पिताश्री से मेरा जन्म-जन्मान्तर से लगाव रहा है। वे छोटे और बड़े सबको समभाव से स्नेह सम्मान देते रहे। स्नेह का सम्बन्ध एक साथ दोनों भावों (श्वश्रू-श्वसुर) का संवहन करते रहे। **उनकी त्याग भावना, सादगी, सरलता, संवेदनशीलता, परदुःखकातरता, परोपकारिता तथा उनके श्रेष्ठ आदर्शों में मुझे लोकोत्तर जीवन की पावनता के दर्शन अनवरत सुलभ थे। एक महान साहित्यकार, वैयाकरण, वेदज्ञ, सच्चे राष्ट्रप्रेमी और मानवता के गौरव से सम्पन्न पिताश्री के आदर्श व्यक्तित्व के बारे में जो भी लिखा जाय, वह वस्तुतः अल्प ही होगा। उनकी विस्मृत गुण-गरिमा को व्यक्त करना सरल नहीं है। आपाधापी के इस दिग्भ्रान्त युग में सदाशयता के ऐसे मूर्तियान विग्रह मिलते कहाँ है? प्रशस्त-पुण्य-पंथ के पथिक उदारचेता महामानव को पुत्रबधू डॉ. जयश्री द्विवेदी का शत सहस्त्रकोटि प्रणाम।**

अततः आत्मिक अभिव्यक्ति–

पूज्य पिताश्री वेद की मूर्ति
विराजते पावन चन्दन है।
वाणी-ललाम रहे परिजन हित
सारथि हो खुद वन्दन हैं।
ऋग-यजुर्वेद के छंद से छलकित
वीणापाणि के कुन्दन हैं।
क्या अभिनन्दन कोई करे,
अभिनन्दन के अभिनन्दन है।

डॉ. जयश्री द्विवेदी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर-गृहविज्ञान
पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय
महिला महाविद्यालय, पलही पट्टी
वाराणसी।
9452420929

!!ओउम्!!

वेदमय जीवन

सरस्वती के वरद्पुत्र भारतीय प्रभविष्णुता के उन्नायक, वेद भक्त, प्रातःस्मरणीय पूज्यनीय स्व.पिता जी एवं ममतामयी, वन्दनीय, पूज्यनीय माताजी के कमल चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। पिताजी जैसी महान आत्मा के विषय में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

परिवर्तिनी संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम।।

(अर्थात संसार में मनुष्य जन्म लेता है और मरता है परन्तु उस मनुष्य का जीवन धन्य है जिसके द्वारा वंश की उन्नति होती है)

वेद के ज्ञान का दान सर्वोत्तम दान कहा गया है। पिताजी का सम्पूर्ण जीवन वेदों के गहन अध्ययन, अध्यापन, मनन, चिंतन को समर्पित है। **जिस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद पढने का अधिकार सभी को दिया, उसी प्रकार पिताजी ने भी वेदों का सार सरल एवं स्पष्ट भाषा में जन-जन तक पहुँचाया है।** वेदों के द्वारा ही देश एवं समाज को सही दिशा प्रदान की जा सकती है। यह समाज का दायित्व है कि उनके द्वारा दिया गया वेद के ज्ञान का अधिकाधिक उपयोग करके देश को समृद्धशाली बनाएं। व्यक्ति को आत्मिक शान्ति आध्यात्मिकता अवधारणा से ही प्राप्त होती है। परमेश्वर के निकट रहने का सबसे अच्छा साधन वेद ही है। पिताजी का सम्पूर्ण जीवन वेदोक्त यज्ञरूप अर्थात् सबके लिए कल्याणकारी था। उन्होंने जीवन के प्रत्येक कीमती क्षण वेद साधना में विलीन होकर गुजारा है। उनका निजी जीवन प्रेरणाश्रोत हैं। उनकी दिनचर्या एवं जीवनशैली सरल साधारण होते हुए भी असाधारण एवं विस्मयपूर्ण है। उनके सभी कार्य नियमित रूप से एवं समयबद्ध तरीके से होते थे। पिताजी जब बुजुर्ग हो गए थे तब दैनिक कार्यक्रम में उनकी सेवा करने का परम सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। ठीक चार बजे उठाना, दाढ़ी बनाना, टहलाना, नहलाना आदि। **"यज्ञों वै. श्रेष्ठतम कर्म"** पिताजी के समय से आजतक घर में रोज हवन होता है। उनके इस संसार में न रहते हुए भी ऐसा प्रतीत होता है कि पिताजी का आर्शीवाद मिल रहा है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनका अगाघ प्रेम पिता के रूप में प्राप्त हुआ। पूज्य पिताजी की सहृदय नमन-

ज्ञानेन्दु द्विवेदी (पुत्र)
ज्ञानपुर

महान व्यक्तित्व और विशाल कृतित्व
'पद्मश्री' डॉ. कपिल देव द्विवेदी

डॉ. धर्मेन्दु द्विवेदी

वर्तमान युग के युग पुरुष महायोगी, महामुनि, संस्कृत साहित्य, संस्कृत व्याकरण, संस्कृत भाषा के सरलीकरण के उन्नायकों में अग्रगण्य प्रणेता, भारतीय दर्शन, भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, मनीषी विद्वान, वैदिक वाङ्मय के चित्रक, विचारक और देश विदेश में इसके प्रचारक प्रसारक, प्रतिष्ठित लेखक, भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत भाषा के उद्धारक संवर्धक, प्रवर्तक, पोषक संस्कृत जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र, आर्य समाज के प्रचारक प्रसारक स्वामी दयानन्द की इस विचारधारा कि **''वेद समस्त विद्याओं का ग्रन्थ है तथा वेद का पठन-पाठन समस्त आर्यों का परम कर्तव्य है''** के अनुसार वेदों को आत्मसात् कर जनमानस के लिए वेदों का नवनीत 'वेदामृतम्' के माध्यम से सर्वसुलभ करने वाले कवि हृदय श्रद्धेय आदरणीय पिताजी का सादर अभिनन्दन, वन्दन, नमन करते हुए श्रद्धावनत हूँ।

पिताजी के जीवन के आदर्शों, सिद्धान्तों, जीवन यापन के लिए स्थापित मापदण्डों, नियमों को बनाना एवं जीवन पर्यन्त इनका पालन करना, यम नियम को आत्मसात् करना ऐसे बिन्दु हैं, जिनको मैंने निकटता से देखा है, इसमें से कुछ सीख पाया और कुछ नहीं भी। आज मैं 61 वर्ष की अवस्था में आदरणीय पिताजी के विषय में अपने बचपन, युवावस्था की चिर यादों को शामिल करता हूँ, तो मैं पाता हूँ कि पिताजी से किन्हीं विषयों पर प्रायः मेरा मतभेद हो जाता था, मैं उनकी सभी बातों को सहज स्वीकार नहीं कर पाता था, इसका कारण मन्दबुद्धि बड़ी सीख, बड़ी शिक्षा अपनी समझ में नहीं आ पाती थी। परन्तु आज इस अवस्था में उनके विचारो, नियमो, सिद्धान्तों की सार्थकता, दूरदर्शिता का अहसास (बोध) स्पष्ट होता है। उनके विचार, नियम, सिद्धान्त कड़े तो अवश्य थे, पर इनके पालन करने, आचरण में शामिल करने से मेरा जीवन सरल एवं सफल अवश्य हुआ है। 'देर आये पर दुरुस्त आये' मेरे जीवन पर सार्थक होती है।

पिताजी का सुसंयमित जीवन समयबद्धता की पराकाष्ठा लेखनकला की अद्भुत शक्ति, शुद्ध आचार विचार योगी सा जीवन स्थित-प्रज्ञ की स्थिति आदि गुणों पर पूर्ण विचारोंपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि पिताजी ने अपने जीवन का कोई भी क्षण एवं क्षेत्र नहीं पाया, जिसका आपने भरपूर उपयोग न किया हो, उससे कुछ शिक्षा ग्रहण न की हो और उसे अपने अपने जीवन में आत्मसात् न किया हो। साथ ही आपके जीवन की यह विशेषता रही है कि प्राप्त प्रतिफल को सभी को उपलब्ध कराया तथा इसे उपलब्ध कराने के लिए सदा तत्पर रहे। आपके द्वारा लिखित ग्रन्थ एवं आपकी विदेश यात्राएं इसका ज्वलन्त उदाहरण हैं।

मेरी समझ में आता है कि आपकी पूरी जीवन यात्रा (6-12-1918 से 28-8-2011 तक) कम्प्यूटर के पूर्व नियोजित कार्यक्रम के भांति थी। जिस समय जो कार्य होना था, वह उनके जीवन में स्वतः ही घटित होता गया। जन्म से पूर्व ही आपका नाम कपिल मुनि के नाम पर 'कपिलदेव' रखा जाना एवं शिक्षा के लिए गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार) भेजा जाना निश्चित था, जन्म के बाद इसकी परिणति भी हुई।

आप सरस्वती के वरद पुत्र थे। देवी सरस्वती द्वारा ही देववाणी संस्कृत के वैभव के प्रचार प्रसारार्थ एवं पुनः प्रतिष्ठित करने हेतु जन्म के पूर्व दिये गये नाम **'कपिल देव' को सार्थक कर सके। गुरुकुल जीवन में दो वेदों यजुर्वेद एवं सामवेद को कंठस्थ कर एवं विद्वानों के समक्ष अपनी मेधा शक्ति का परिचय देते हुए सस्वर सुनाते हुए 'द्विवेदी' नाम की उपाधि प्राप्त की। जन्म से जायसवाल वैश्य होते हुए, अपनी योग्यता व अद्भुत मेधा शक्ति, संस्कृत भाषा, वेद हेतु समर्पित जीवन से आप 'द्विवेदी' नाम को सार्थक कर सके।** प्रथमतः आपका नाम **'कपिल देव द्विवेदी'** सामने आते ही **'ब्राह्मण'** का बोध होता है, आपने वैश्य कुल में जन्म लेते हुए अपने कर्मो, कृतित्व के द्वारा इसे भी सफल बनाया। संस्कृत व्याकरण, संस्कृत साहित्य, संस्कृत भाषा विज्ञान, संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों की आलोचनात्मक व्याख्या सहित हिन्दी अंग्रेजी में अनुवाद, संस्कृत में काव्यों एवं महाकाव्यों का सृजन वेदों को आत्मसात् कर जनमानस के लिए देववाणी वेदों का नवनीत 'वेदोमृतम्' (40 खंडों में) के माध्यम से सुलभ कराने में सफल रहे। आप अपना जन्म पूर्व नाम 'कपिल देव' में विकास करते हुए 'द्विवेदी' नाम शामिल करते हुए पूर्ण नाम **'कपिलदेव द्विवेदी'**

सार्थक सिद्ध कर सके। सादर वन्दे!

1991 में भारत सरकार द्वारा वाराणसी के दो जायसवाल रत्न (1) डॉ. राजाराम शास्त्री (पूर्व सांसद, वाराणसी) को 'पद्मभूषण' एवं पिताजी को 'पद्मश्री' से अलंकृत किया गया। दोनों का अभिनन्दन वाराणसी में हुआ था। डॉ. राजाराम शास्त्री जी ने पिताजी के विषय में कहा था कि ''जायसवाल कुल में जन्म लेकर संस्कृत भाषा का अध्ययन अध्यापन करना, उस समय बड़ी बात थी। संस्कृत भाषा में ब्राह्मण वर्ग के एकाधिकार को तोड़कर एक वैश्य ने संस्कृत भाषा में अपनी योग्यता से अपना वर्चस्व स्थापित किया। यह जायसवाल जाति की एक अनूठी उपलब्धि है, इसके लिए द्विवेदी जी जायसवाल समाज में सदा अभिनन्दनीय रहेगे। इस पद्मश्री अलंकरण के लिए मैं आपका हृदय से अभिनन्दन करता हूँ।''

प्रारम्भिक शिक्षा एवं गुरुकुल का जीवन

पिताजी सन् 1928 से 1939 की समयावधि में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार में रहकर आपने आचार्यो, आचरणों व गुणों को जीवन में आत्मसात् किया व अपनी दिनचर्या में शामिल किया। संयम, सादगी, प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठना, नित्य प्रातः भ्रमण, सन्ध्या हवन, आसन प्राणायाम, समय से नाश्ता भोजन, अपने कार्यो को स्वयं करना, दैनिक स्वाध्याय, लेखन कार्य करना आपके जीवन की दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक, एवं पचंवर्षीय योजनाएं पूर्व निर्धारित रहती थीं। गुरुकुल जीवन के समय जो बीज विचार रूप में आपके अन्दर पड़ गये, कालान्तर में इसी से आपका जीवन पुष्पित एव पल्लवित होता रहा। आज भी इन्हीं गुणों से आपकी यश कीर्ति जीवित है।

स्वंतत्रता एवं सत्याग्रह आन्दोलन

आपने हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध आर्य समाज के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया। आप आर्य समाज के तीसरे आर्य सेनापति **श्री खुशहाल चन्द जी** के साथ 22 मार्च 1939 को गुलवर्गा में गिरफ्तार हुए, आपको 6 मास की सजा हुई। आप एक मास गुलबर्गा जेल एवं 5 मास हैदराबाद जेल में रहे। पिताजी को 6 मास की जेल में ढाई माह कठोर कारावास का दण्ड मिला। 17 अगस्त 1939 को सत्याग्रह समाप्त हो गया। सभी को स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की भांति पैंशन स्वीकृत की गई जो पिताजी के अन्तिम समय तक मिलती रही एवं **आपका अन्तिम संस्कार भी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी की भांति राजकीय सम्मान के साथ किया गया।**

सन् 1946 में आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ''अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन'' विषय पर डी. फिल हेतु अपना पंजीकरण तत्कालीन संस्कृत विद्वान **डॉ. बाबूराम सक्सेना** के निर्देशन में कराया। और डी. फिल की उपाधि 1949 में प्राप्त की। पिताजी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं उनके कठोर अनुशासन में रहते हुए मैने 3 वर्षो में डी. फिल का कार्य पूरा किया। यह कार्य अत्यन्त कठिन जटिल था, परन्तु परमात्मा की कृपा से 3 वर्ष में पूरा हुआ। मेरे डी. फिल के बाह्य परीक्षक **महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा थे।** श्री कविराज जी का मुझ पर आजीवन वरदहस्त रहा।''

परिवार में 6 पोती, 6 पोते, 2 नाती, पनातिन के बीच भी अपना समय व्यतीत करते थे। सभी बच्चों को सन्ध्या हवन के मंत्र, भजन, संस्कृत के सुभाषितों, गीता के श्लोक, याद करने के लिए प्रेरित करते थे, सभी बच्चों को सन्ध्या हवन के मंत्र याद भी हैं। **बच्चों में उच्च आदर्शो के संस्कार डालने के लिए उन्हें हितोपदेश नीति शतकम, रामायण (तुलसी एवं वाल्मीकी), महाभारत आदि के प्रकरणों, महापुरुषों कान्तिकारियों की जीवनियों को सुनाते एवं पढ़ने के लिए पुस्तके अपने पुस्तकालय से सुलभ कराते थे। अवकाश के दिन या रविवार को बच्चों ने जो याद किया है उसे सुनते थे और बच्चों को पुरस्कृत भी करते थे।**

पिताजी की प्रेरणा एवं दिये गये संस्कारों का परिणाम है कि 3 पौत्र एवं 1 पौत्री बी टेक, 1 पौत्र एम.एस.सी, पी.एच.डी. 3 बच्चे बी.टेक कर रहे हैं।

पर्यटन प्रेमी

पिताजी को पर्यटन का बहुत शौक था। पर्यटन के विषय में आपकी मान्यता थी कि यदि किसी ने देश-विदेश का पर्यटन नहीं किया तो उसने जीवन में कुछ नहीं किया। नये नये स्थानों पर जाने पर नई-नई जानकारियां वहां के लोगों का रहन सहन, खान-पान, वहां के इतिहास, भूगोल आदि की जानकारियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं। साथ ही अपना अपने देश की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन भी हो जाता है।

यही कारण था कि पिताजी ने देश-विदेश दोनों का खूब भ्रमण किया। नई-नई जानकारियां प्राप्त कीं और उनका अपने जीवन में भरपूर उपयोग भी किया।

पिताजी ने सीमित साधनों के बाद भी 5 बार विदेश यात्राएं कीं। उस समय विदेश यात्रा कठिन कार्य था।

विदेशी यात्राएं मात्र आपने पर्यटन के लिए नहीं की, अपितु इसके साथ-साथ उन्होंने भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता, संस्कृत भाषा, वेद एवं वैदिक धर्म, आर्य समाज आदि के बखूबी प्रचार-प्रसार के लिए की। विदेशों में खूब व्याख्यान दिये। वहां के लोगों का भारतीय संस्कृति के प्रति लगाव पैदा भी किया।

पिताजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है ''विदेश यात्राएं विश्वदर्शन और प्रेरणा का स्त्रोत हैं। ये यात्राएं सफल और सुखद रही। विदेशों में मैंने संस्कृत साहित्य, आर्य समाज तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार का प्रयास किया।''

''इन यात्राओं से जहां भारतीय संस्कृति और वैदिक धर्म का प्रचार हुआ, वहां मुझे विदेश भ्रमण का आनन्द और अनुभव प्राप्त हुआ। इसलिए इन यात्राओं को मैं पूर्णतया सफल मानता हूँ।''

प्रकृति प्रेमी

हिमालय की तराई, सुन्दर वादियों, हरे-भरे वातावरण में बचपन व्यतीत होने, हरिद्वार गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने के कारण अपनी सेवा का आरम्भ नारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़, राजकीय सेवा नैनीताल से शुरू की और सेवा निवृत्ति भी पहाड़ी क्षेत्र गोपेश्वर चमोली से होने के कारण आप उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र से आजीवन जुड़े रहे। रामगढ़ एवं हरिद्वार का वातावरण उन्हें बहुत पसन्द था एवं आपके स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी उत्तम था। रामगढ़ की हरी भरी घाटियां सेब, आड़ू, नासपाती, खूमानी के पेड़ बगीचे बहुत पसन्द थे। सेवानिवृति के पश्चात् भी आप 2-3 मास के लिए हरिद्वार या रामगढ़ जाया करते थे। शान्ति निकेतन अपने आवास पर पिताजी ने एक छोटा सा बगीचा भी लगा रखा था, जिसमें दूर-दूर से लाये गये पेड़-पौधे लगा रखे थे। बगीचे में अनार, बादाम, शरीफा, करोंद मुस्सभी नीबू, नारंगी, चकोतरा, अमरूद, बेर, केला, आम अंगूर के पेड़ लगाये थे। इसके अतिरिक्त बगीचे में मौसम के अनुसार सब्जियां भी उगाते थे। चिड़ियों को दाना डालते थे एवं पीने का पानी भी स्वयं भरते थे। बगीचे का काम वे स्वयं करते एवं हम सभी से भी करवाते थे।

पिताजी को जब विशेष स्वाध्याय, साधना करनी होती थी तो आप स्वयं द्वारा लगाए गए छोटे से बगीचे में वृक्षों की छाया में चटाई बिछाकर अपनी डेस्क लगाकर अपना स्वाध्याय/साधना पूरी करते थे। चारों वेदों, गीता, वाल्मीकि की रामायण, चाणक्य नीति, महाभारत आदि ग्रन्थों का कई बार स्वाध्याय बगीचे में ही किया। आपका मानना था कि प्रकृति के निकट रहने से एक विशेष धनात्मक ऊर्जा मिलती है जिससे मन सदा प्रसन्न रहता है। यदि कोई विपरीत परिस्थिति चल रही है तो प्रकृति के सान्निध्य में रहने से इसको दूर करने का कोई विकल्प विचार स्वतः ही मिल जाता है। इससे उसके सारे मनोरथ सफल हो जाते हैं।

उनकी मान्यता थी कि भाषा कोई भी हो, भाषा वही अच्छी मानी जाती है, जो सरल हो, सर्वग्राह्य हो, सामान्य पाठक भी उसको पढ़ सके, समझ सके। संस्कृत व्याकरण को लोकप्रिय रोचक रूप से प्रस्तुत कर विद्या के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को समृद्ध करने का ऐतिहासिक श्रेय आपको प्राप्त है। ऐसे रुक्ष विषय को इतने रूचिकर रूप में प्रस्तुत कर संस्कृत व्याकरण के अध्ययन-अध्यापन को नई दिशा और दृष्टि प्रदान की है।

लेखन के **द्वितीय पक्ष** में आपने संस्कृत काव्यों, महाकाव्यों का सृजन किया। ये सभी ग्रन्थ अपने आप में अनूठे हैं। ये सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में निधि के समान हैं। इन महाकाव्यों में राष्ट्र गीतांजलि (भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास एवं 50 राष्ट्रीय गीत), भक्ति कुसुमांजलि (भक्ति के 100 शीर्षकों पर संस्कृत गीत, आत्म विज्ञानम् (योग साधना विषयक महाकाव्य), शर्मण्याः प्राच्यविदः (50 जर्मन संस्कृत विद्वानों का जीवन वृत) शान्ति स्त्रोतम् एवं महाप्रयाणम् (लघु शोक गीतकाव्य), गीताञ्जलि (स्फुट गीतों का संकलन), संस्कृत कवि हृदयम (संस्कृत के महाकवियों का काव्यात्मक परिचय), जयतुसुर भारती की रचना की है। **ये सभी आपके द्वारा संस्कृत भाषा में लिखे गये व काव्य एवं महाकाव्य हैं जो अपनी मौलिकता, विद्वता, संस्कृत भाषा पर आपके एकाधिकार के परिचायक हैं। ये सभी काव्य एवं महाकाव्य आपको संस्कृत भाषा के अग्रगण्य कवियों की श्रेणी में स्थापित कर सम्मानित करते हैं।**

इसी समयावधि में आपने (1) "THE ESSENCE OF THE VEDAS", का भी प्रणयन किया। इसमें वेदों से चयनित विषयानुसार 1400 मंत्रों को रोमन भाषा में दिया गया है। इसे संक्षेप में वेदों का विश्वकोष कहा जा सकता है।

"Cultural Data in The Atharvaveda" को पूरा किया, इसमें अथर्ववेद में संस्कृति का विशद वर्णन प्राप्त होता है।

"Vedic Samdhya Evam Agnihotra" पुस्तक में सन्ध्या हवन के मंत्रों को रोमन स्क्रिप्ट में अंकित किया गया है।

यह पुस्तक संस्कृत न जानने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

पिंगल कृत छन्दः सूत्रम् का हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में अनुवाद एवं उसकी व्याख्या की गई है। जिसमें पिंगल के गणितीय ज्ञान के रहस्यों की व्याख्या की गई है। आपके द्वारा मनुष्य के आत्मोन्नति के लिए एक विलक्षण ग्रन्थ योग एवं आरोग्य (पूर्व शीर्षक साधना और सिद्धि) का सृजन किया। इस पुस्तक में योग क्या है, साधना के स्वरूप, उद्देश्य और आधार, साधना के दो पक्षों (भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष), वेदों में योग विज्ञान, योग की विधियां, योग के आठ अंग, शरीर के तीन रूप स्थूल, शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर, दीर्घायु के रहस्य आदि का वर्णन अत्यन्त, सरल सुबोध भाषा में इस ग्रन्थ में समाहित किया है। पिताजी ने ध्यान धारण समाधि से प्राप्त अनुभूत तथ्यों को इस ग्रन्थ के माध्यम से पाठक अपनी आत्मोन्नति करते हुए ईश साक्षात्कार तक कर अपनी कामना पूर्ण कर सकता है। आपने अनुभवों स्वाध्याय, ऋषि मुनि के विचारों का सूक्ष्मता से परीक्षण कर आत्मसात कर प्राप्त अनुभूतियों का सरल, सुगम सुबोध भाषा में विषयों को स्पष्ट किया गया है। जिससे मनुष्य अपनी योग्यतानुसार कर्मानुसार, संचित कर्मो के आधार पर अपनी आत्मोन्नति कर मनुष्य जीवन के अन्तिम सत्य को प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना सकता है।

योगी तुल्य जीवन

पिताजी की पूरी जीवन यात्रा का स्मरण करते हुए मैं उनके जीवन को एक योगी, मनीषी, महात्मा, महामुनि के तुल्य पाता हूँ। परमपिता परमेश्वर में अटूट आस्था व विश्वास था। आपका मत था कि परमेश्वर ने सभी को एक उद्देश्य पूर्ण करने के लिए जन्म दिया है, उसके साथ ही उसे साधन और साध्य होने की व्यवस्था की है जो अपने ऊपर एवं परमेश्वर पर विश्वास रखता है, उसका मार्ग स्वयं प्रशस्त एवं प्रकाशित होता जाता है।

पिताजी सुषुम्ना जागृत करने के लिए सभी को अनुलोम विलोम प्राणायाम करने को सदा कहते थे। वे बताते थे कि इसका अभ्यास करते रहने से सुषुम्ना जाग्रत हो जाती है। दोनों स्वर स्वतः ही चलने लगते हैं। पिताजी की सुषुम्ना नाड़ी जाग्रत अवस्था में थी। एक बार नाक के दाएं एवं बायें छिद्रों पर हाथ रखवाकर मुझे इसका अनुभव भी कराया था। वायु स्वयं ही दाये-बायें बायें-दायें छिद्रों से प्रवाहित होती रहती थी। मुझे अब अनुभव होता है कि उनके अन्दर अद्म्य ऊर्जा का स्त्रोत था। इसी से वे सदा प्रसन्नचित रहकर अपने समस्त कार्यों में संलग्न रहते थे। यही उनकी ऊर्जा का स्त्रोत था, जिससे वे विलक्षण कार्यों को सहज रूप में सम्पादित कर सके।

महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का अपने जीवन में पालन करके इसे सिद्ध कर किया था। वे प्राणायाम, ध्यान, धारणा के लिए प्रेरित करते थे, इसी वास्तविकता का बोध करते हुए अपना जीवन सफल बना सकता है। वे एक सिद्ध पुरुष, सिद्ध योगी थे। आध्यात्मिक नियमित जीवन, शान्त प्रकृति, समयवद्धता, सुख दुःख, मान-अपमान, हानि-लाभ, राग-द्वेष आदि ऐसे विषय है, जिनमें आपकी एक समान गति थी। **अपना पूर्ण समय स्वाध्याय या स्वान्तः सुखाय लेखन कार्य में लगाये रखते थे। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में अपनी प्रवृत्ति पूर्णत अन्तर्मुखी कर ली थी। बाहर क्या हो रहा है, उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वे अपने जीवन से पूर्णतः सन्तुष्ट थे।** कोई इच्छा शेष न थी। बाह्य इच्छाओं महत्वाकाक्षाओं, अभिलाषाओं पर विजय प्राप्त कर मन को नियंत्रित कर ''स्थित प्रज्ञ'' की स्थिति को प्राप्त कर लिया था। वे सही अर्थो में परिवार के बीच रहकर भी एक सिद्ध पुरुष थे।

आपके द्वारा विचरित **''आत्म विज्ञानम्''** महाकाव्य के पुरोवाक् में आपने अपनी लेखनी द्वारा अंकित किया है–

''समग्रोऽपि विषयः प्रश्नोत्तररूपेण समुपस्थितः। प्रश्नकतरिश्चात्र ऋषयः सन्ति तदुत्तर प्रदाता च महामुनिः कपिलः।।

प्रयतितं च मया यथा समग्रोऽपि विषयोऽध्यात्म जिज्ञासनांकृतं बोधगम्यः स्यात्।।''

आत्म विज्ञान जैसे गूढ़ विषय पर ऋषियों के प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान महायोगी **महामुनि 'कपिल'** के द्वारा किया गया है।

पिताजी महायोगी महामुनि थे। मुझे ऐसा आभास एवं सदा ऐसी अनुभूति होती है कि पिताजी आज भी अपने अनुसंधान शोधकार्यो में संलग्न है, जिससे जनमानस का कल्याण हो सके, सारा जीवन सफल हो सके। मैं ऐसी महान विभूति को स्मरण करते हुए अपने को धन्य मानता हूँ।

डॉ. धर्मेन्दु द्विवेदी
(पुत्र) 312, सद्रा अपार्टमेण्ट
शिवपुर, वाराणसी-221003
(9415680446)(9452420929)

A Role Model: My great grandfather Padmashree Dr. Kapil D.vivedi

Dr. Astha
(M.Sc., Ph.D (Warsa))
P.D.F, University of Washington, St. Louis U.S.A.

Everyone seeks a role model in life to shape one's life. I was lucky to be born in a family where I could see on a daily basis my role model, my grandfather Padmashree Dr. Kapil Dev Dvivedi and learnt from him.He had so manygood qualities that made me admire him.I am highlighting some of his good qualities, which are hard to see in any common people nowadays.

Discipline/balanced life: His life was a balance of both work and health. His daily routine included meditation, walk in the morning and evening, reading the newspaper, schedule for study and writing book. There was a proper schedule for each thing to be done at a specific time, which allowed him to finish all that he planned for a day.

Enthusiastic: He was curious to learn a lot of things in life.Whatever he learned from his experience in life, he used to teach us in a unique way. For example, when I was a kid, every weekend he used to ask me to recite something new and gave me dry-fruits, home-made medicinal powder and money.

Passionate: He was very ambitious towards his goal to translate Vedic literature in easily understandable language. His persistent effort in writing books made him achieve his goal.

Systematize: He was a highly organized person. All the things in his room used to be properly placed and arranged. He used to write diaries about his travels in detail and also maintain a record of all his expenditures. One can see from his diary how the cost of living expenditure increased with a number of years.

Writing one of the real-life experiences where I think he is still alive in my memory and always helping me out sitting somewhere else. I was applying for Ph.D. positions and got an offer from Poland. It was almost a year when he died. So, there was no option to know from him if he knows anyone there. My parents were very bothered about my travel and stay there. My father used to check his diary whenever I had planned to visit any places abroad. He found one contact from Poland name Prof. M.K. Bryski. I was busy with visa processes and didn't find time to check who the person is. But then the day I went to apply for Poland visa, I also went to JNU and met a friend of my father. I told him my plan to do a Ph.D. from Warsaw, Poland. He also gave me a reference of Prof. M. K. Bryski. When I heard the name again, I decided to check it on the internet and found his email id. I emailed Prof. M. K. Bryski giving a referral of my grandfather and about my joining as a PhD scholar in Warsaw. He was at that time coming to India and I was flying to Warsaw. After he was back in Warsaw, he invited me to his house for dinner. I went for dinner at his place and met him and his wife Barbara. We did talk about his meeting with my grandfather probably when he was a Polish Ambassador in India. One day, he found a book written by my grandfather given to him as a gift by my grandfather which shows the year they met. Prof. M. K. Bryski and his wife both started treating me as their granddaughter. The fame that my grandfather has built helped me in finding relations in Poland, which provided me a home environment with constant affection in Warsaw.

The most important lesson he taught me was to help others and never give up in life. He was an example to not only myself but had inspired many to live a meaningful life with hope, integrity, and determination.

There is a famous quote of Bertrand Russel **"The good life is one inspired by love and guided by knowledge."** In the end, I can say again that I am really lucky to have a life that is inspired and guided by love from my great grandfather.

जीवन के मार्गदर्शक दादा जी

आभा जायसवाल (पौत्री)
B. Tech (IIyr)

आज इतने वर्षों पश्चात् अपने परम पूज्य दादाजी के विषय में अपने भाव व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ है। उनके साथ बिताए मेरे जीवन के सुखद बारह साल कैसे बीत गए, इसका मुझे अंदाजा भी नहीं है। परम पूज्य दादाजी मेरे जीवन के सबसे बढ़े आदर्श और प्रेरणा रहे है। **उनके सौवें जन्मदिन पर उनके बारे में लिखने का सौभाग्य पाकर अत्यंत खुशी हो रही है।** उनके पद्चिन्हों का अनुकरण करना मेरा परम कर्तव्य रहेगा।

मेरी खुशकिस्मती होती अगर मुझे कुछ वर्ष और उनके साथ बिताने को मिलता। मेरे बारह साल उनके इतने बड़े व्यक्तित्व और सात्विक जीवन को समझ पाने के लिए बहुत कम थे।

उनके साथ व्यतीत किए अपने बारह सालों की स्मृतियों को चंद शब्दों में समेटने का प्रयत्न कर रही हूँ।

अपने बचपन के जीवन काल से शुरूआत करना चाहूँगी। मेरे जन्म लेने के कुछ दिन पश्चात् ही जब मेरा नामकरण होना था, तब मेरी बुआजी ने मेरा नाम **"सृष्टि"** घोषित कर दिया था। शायद उन्हें (दादाजी) ये नाम पसन्द नहीं आया जिसके फलस्वरूप उन्होंने कुछ दिनों बाद ही मेरा नाम बदल कर **"आभा"** कर दिया। अब मेरा नाम 'अ' (A) से होने के कारण स्कूल में कभी फायदा हुआ तो कभी घाटा। अनुक्रमांक हमेशा पहला ही रहा। परीक्षकों के धुँआधार सवालों का सामना सबसे पहले मुझसे ही होता था। चूंकि नाम दादाजी द्वारा दिया गया था, इसलिए सबको पसन्द भी आ गया और कोई आपत्ति भी नहीं हुई।

जैसे-जैसे हमारे बचपन के दिन बीतते गए, दादाजी ने बड़े ही अनोखे तरीके से हमारे अन्दर आर्यसमाज, योग, हवन और पूजा-पाठ की आदतें डालनी शुरू कर दी। उदाहरण के तौर पर मैं अपनी सुबह और शाम की क्रियाओं का वर्णन करती हूँ। सुबह हमें जल्दी उठना होता है। स्नान आदि करने के बाद पूरे परिवार को एक साथ बैठकर हवन और साधना करनी होती है। हवन समाप्त होने के बाद हर एक छोटे सदस्य को अपने से बड़ों का पैर छूकर आर्शीवाद लेना होता है।

और शाम को जब सूर्यास्त होता था, तब घर के सारे बच्चे दादाजी के कमरे में अपनी-अपनी भजन वाली किताबें लेकर पहुँच जाते थे। दरवाजे के पीछे रखी चटाई को बिछा कर उनके सामने कुछ मन्त्र और भजन का अभ्यास किया करते थे। अभ्यास के बाद हम लोग को प्रसन्न करने के लिए काँच की शीशी में रखा चूरन, काजू, किशमिश और होम्योपैथिक वाली सादी मीठी गोलियाँ मिलती थीं। मेरा पूरा ध्यान सिर्फ किशमिश पर रहता था। मुझे दादाजी वाली किशमिश कुछ ज्यादा ही पसन्द थी।

एक और छोटी सी घटना को व्यक्त करना चाहूँगी। दादाजी हम चारों बच्चों (वेदस, आभा, अर्चि, प्रणव) को तीन-तीन किताबे दिए हुए थे। (वैदिक की विधि, प्रभु भक्ति के गीत और शान्ति स्त्रोतम)। सभी की किताबों पर बच्चों का नाम दादाजी के हाथों द्वारा काले मार्कर से लिखा होता था। वैसे तो सदैव हम अपनी किताबों को संभालकर ही रखा करते थे, पर छोटे होने के कारण और कुछ तो मेरी लापरवाही से, मेरी किताब जरूर खोती थी। अब डाँट से बचने के लिए, मैं एक नई किताब लेकर धीरे से दादाजी के कमरे में पहुँच जाया करती थी और उनकी मेज की दराज से मार्कर निकाल कर उनके जैसे अपना नाम लिखने की कोशिश करती थी। कितना भी बच लूँ, एक ना एक दिन मेरी गलती पकड़ में आ ही जाती थी और फिर डाँट भी खूब पड़ती थी।

दादाजी ने हमारा ये नियम बना रखा था कि हर रविवार

के दिन हमें एक नया मंत्र कंठस्य करके सुनाना होता था। पूरे हफ्ते हम चारों बच्चे उस संस्कृत के मन्त्र को रटा करते थे, हमने कभी उनके अर्थ जानने की कोशिश ही नहीं की। और इसी कारण हमें आज तक उनका अर्थ लिखा रहता है परन्तु मुझे आज तक याद नहीं है।..... तो रविवार की शाम को जब हम चारों बच्चे दादाजी के सामने खड़े होते थे तो सर्वप्रथम एक दूसरे को इशारा करते कि पहले तुम सुनाओ। बड़े मुश्किल से यह निर्णय हो पाता कि पहले कौन बोलेगा। मंत्र सुनाने के बाद हमें इनाम में दस-दस रुपये मिला करते थे और काजू-किशमिश जो मिलती थी वो तो मिलती ही थी। इसी तरह धीरे-धीरे हमें नित्य हवन वाले सारे मन्त्र याद होते चले गए। सारे मन्त्र आज तक कंठस्य होने का एक कारण रोज सुबह हवन में बैठकर मन्त्रों को पढ़ना और सुनना भी है। एक बात और लाखों में एक था उनका कमरा। आज भी उनके कमरे में घुसने पर उनके होने का आभास होने लगता है। जब मैं छोटी थी तब उनके कमरे की दीवार हरे रंग से रंगी हुई थी। वो हरे रंग की दीवार भी अपना सौभाग्य समझती होगी। मैं ऐसा इसलिए कह रही हूँ क्योंकि पूरी दीवार उनके किसी बड़ी हस्ती से इनाम लेते हुए फोटो की फ्रेम से भरी रहती थी। उनके पास पुरस्कारों और इनामों की सूची इतनी बड़ी थी कि वो जिस कमरे में रहते थे और जिस कमरे में पढ़ते थे पूरी अलमारियाँ भरी रहती थीं।

एक दिन मेरा ध्यान उनके कमरे में टंगी एक तस्वीर पर गया जिसमें बहुत से लोग कुर्सी पर बैठे थे और कुछ लोग खड़े भी थे। मेरे प्रश्न करने पर उन्होंने बताया कि वो तस्वीर जेल की है और उन्होंने अपने आप को भी दिखाया। मैं दादाजी को पहचान भी नहीं पाई थी। उनके बाल और दाढ़ी बहुत बढ़ी हुई थी। इसी कारण वो मेरे दादाजी लग ही नहीं रहे थे। उन्होंने हमें बताया कि आर्यसमाज के लिए उन्हें जेल जाना पड़ा था। मेरी उम्र छोटी होने के कारण उन्होंने मुझे बहुत विस्तार से नहीं बताया। बस इतना कहा कि पानी जैसी दाल और दो जली हुई रोटियाँ मिलती थी। उनकी बातें सुनकर बड़ा अजीब लगा, पर बाद में पता चला कि वो जेल था और वो समय भी अंग्रेजों का था। बहुत गौरवान्वित महसूस कर रही थी कि मैं एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी की पौत्री हूँ। बहुत सालों बाद फिर उनके अभिनन्दन ग्रंथ में उनकी जेल यात्रा और विदेश यात्राओं के बारे में पढ़ा। मैं अपने दादाजी के व्यक्तित्व और उनके जीवन से बहुत प्रभावित हुई हूँ। उनके जीवन में आलस्य नाम का शब्द ही नहीं था। गर्मी, ठंडी, बरसात चाहे जो भी मौसम हो, उनके सामने घुटने टेक ही लेती थी। सुबह अपने समय पर उठना, टहलने जाना स्नान आदि करके हवन करना, अपनी पढ़ाई करना, सब क्रियाएँ उनकी टाइम से ही होती थी।

लहसुन और प्याज का उपयोग भोजन में नहीं हुआ करता था। उनका मानना था कि इससे नकारात्मकता बढ़ती है। वो हमेशा कहा करते थे–

"सादा भोजन, उच्च विचार" दादाजी अपना सारा काम खुद ही करना पसन्द करते थे । उन्हें अपने काम खुद करने में कोई शर्म नहीं लगती थी।

बहुत उम्र होने के बावजूद उनकी दिनचर्या में कोई बदलाव नहीं आया था। वो हमेशा की तरह ही सुबह उठ जाते थे और अपनी क्रियाएँ करते थे।

शाम के समय उन्हें आँगन में घर का कोई न कोई सदस्य हाथ पकड़ कर टहलाता था। उन्हें डंडा लेकर चलना पसन्द नहीं था। उनको हाथ पकड़ कर टहलाने का मौका मुझे भी कभी-कभी मिला करता था।

मेरे एक कदम पीछे लेने के बाद उनका धीरे-से अपने चरण आगे करना, उनके आखों की वो ज्योति, होठों पर छोटी-सी मुस्कान और चेहरे का वो नूर मेरे अन्दर आज भी खुशी का संचार कर देता है।

अब मैं अपनी लेखनी और भावनाओं को पूर्णविराम देना चाहूँगी और अनजाने में हुई गलती की क्षमाप्रार्थी रहूँगी।

मैं उम्मीद करती हूँ कि दादाजी अपनी कृपा और आर्शीवाद मेरे ऊपर बनाए रखेंगे।

मेरे पूज्य पिता पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

डा. भारती आर्य (पुत्री)

डॉ. भारती आर्य दिल्ली के ख्याति-नामा आर्यसमाजी व नई दिल्ली कीर्तिनगर स्थित आर्य समाज के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश आर्य की धर्मपत्नी हैं। सम्पादक

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान मेरे पिताजी **डा. कपिलदेव द्विवेदी** प्रकाश-स्तम्भ, तेजस्वी गुणवान आर्य समाज के प्रचारक का जन्म 6 दिसम्बर 1918 को गहमर जिला गाजीपुर में हुआ था। उनके पिताजी का नाम **बलराम दास** व माता **बसुमती देवी** थीं। पिताजी की दादी जी धार्मिक प्रवृति की महिला थीं। वे गाँव में बच्चों को पढ़ाती थी। उन्होंने कई बार तीर्थ यात्रा की थी। जब वे **गंगासागर गई तो वहाँ कपिल मुनि के आश्रम में यह प्रतिज्ञा करके आई थी कि मैं अपने पौत्र को गुरुकुल में शिक्षा के लिए भेजूँगी तथा उसका नाम कपिलदेव रखूँगी।** स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पिताजी के बार-बार जेल जाने के कारण घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इसलिए दादी जी ने अपने जेवर बेचकर 9 वर्ष की अवस्था में पिताजी को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार भेज दिया। पढ़ने में बहुत अच्छे थे। गुरुकुल में रहकर दो वेद यजुर्वेद व सामवेद को सस्वर कण्ठस्थ किया और द्विवेदी की उपाधि प्राप्त की। गुरुकुल में रहते हुए हैदराबाद में निजाम के विरोध में सत्याग्रह में भाग लिया एवं छः माह कारावास में रहें।

12 वर्ष तक डी.एस.वी. गवर्नमेंट कालेज नैनीताल में अध्यापन कार्य किया। इसके बाद काशी नरेश राजकीय महाविद्यालय ज्ञानपुर जिला भदोही में **संस्कृत के विभागाध्यक्ष** रहे। 19 वर्ष गोपेश्वर जिला चमोली में **प्राचार्य** रहे। वहीं से अवकाश प्राप्त करके ज्ञानपुर आ गए।

संस्कृत के प्रति बचपन से बहुत लगाव था। संस्कृत को सुगम सरल बनाने के लिए आपने प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमदी 2 रचनानुवाद कौमुदी और 3 प्रौढ रचनानुवाद कौमदी की रचना की, जिससे संस्कृत प्रेमियों को काफी सहयोग प्राप्त हुई।

आप महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त थे। आपने **"वेद समस्त सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"** इस आदर्श वाक्य को जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास किया। आपने वेदामृतम् के 40 भागों में वेद के विभिन्न विषयों जैसे सुखी परिवार सुखी-जीवन, सुखी गृहस्थ, वेदों में नारी, नीति शिक्षा, वेदों में आयुर्वेद, विज्ञान, दर्शन, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, पर 100, 100 मन्त्रों को एक साथ एकत्र कर हिन्दी अंग्रेजी में अर्थ सहित पुस्तक में पिरोकर जन मानस तक पहुँचाया।

इतना ही नहीं देश व विदेशों में भी आर्य समाज का प्रचार प्रसार किया। 5 बार विदेशों में जा कर आर्य समाज का प्रचार कई महीनों तक रह कर किया। आपने अमेरिका, यूरोप, इंग्लैण्ड, जर्मनी, नीदरलैण्ड, कनाडा, सुरीनाम, गुयाना, मारीशस, नैरोवी, तंजानिया, जर्मनी में वेदों का ज्ञान व आर्यसमाज की विचार धाराओं का प्रचार-प्रसार किया। इसीलिए कहा गया है कि

"स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते।"

आप अच्छे कवि भी थे। आपने अनेक कविताएँ लिखीं। राष्ट्र गीतांजलि में स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास 50 राष्ट्रीय गीत हैं। भक्ति कुसुमांजलि में 100 भक्ति गीत हैं। शर्मण्याः प्राच्यविदः में संस्कृतज्ञ जर्मन विद्वानों का जीवनवृत्त एवं कृतित्व का वर्णन है। संस्कृत श्लोकों में गीतांजलिः स्फुट गीतों का संकलन है।

संस्कृत कविह्लदयम् में संस्कृत के महाकवियों का काव्यात्मक परिचय, आत्मविज्ञानम, शान्तिस्तोत्रम् एवं महाप्रयाण आदि का वर्णन है।

अनेक अनुवाद के ग्रन्थ आदि संस्कृत साहित्य का इतिहास, संस्कृत व्याकरण, संस्कृत निबन्धशतकम्, लघुसिद्धान्त् कौमदी आदि 80 ग्रन्थों की रचना की।

आप का कहना था कि कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए।

"कुर्तन्नेवेह कर्मणि जिजीविषेच्छतं समाः"

इसलिए आप अपने जीवन में सभी कर्म समय पर करते थे। प्रातः 4 बजे उठकर ध्यान योग प्राणयाम का नियम हमेशा पालन करते रहे। दूसरों को भी कर्म करने की प्रेरणा

देते थे। सभी को शिक्षा का महत्त्व बताते थे। सभी को प्रेरणा देते थे। मैंने भी विवाह के बाद ही M.A (इतिहास) व Ph.D **(स्मृतियों में नारीः समाज शास्त्रीय अध्ययन)** की उपाधि प्राप्त की। आपने दोनों पुत्रियों, बेटों व बहुओं को भी M. A., Ph.D की उपाधि प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

आपने हमारी माता जी के देहान्त के बाद सभी भाई, बहनों को संभाला व आत्मनिर्भर बनने में सहयोग दिया। सभी को पढ़ाया, विवाह किया और माता का स्नेह भी प्रदान किया।

आप प्रकृति प्रेमी थे। आप से जो मिलता था वह आप का बन कर रह जाता था। आप को संगीत में भी रुचि थी। सितार और हारमोनियम को अच्छे से बजाते थे। बच्चों को भी सिखाते थे। खेलों में भी विशेष रुचि थी। करमाद ऋषि के अनुसार व्यक्ति विद्या और अर्थ को कण-कण संचित करता है; वह बड़ा खुश होता है जैसे मधुमक्खी फुलों से पराग ग्रहण करती है, उसी प्रकार आप भी जिस से जो गुण ग्रहण कर सकते थे उस करने में, तत्पर रहते थे। जैसे हस्त विज्ञान, एक्यूप्रेशर, पाक विद्या, सिलाई आदि जो भी गुण जहाँ से प्राप्त होता था अन्तिम समय तक ग्रहण करते रहे। आप यही शिक्षा सबको देते थे। **"चरैवेति-चरैवेति"** चलते रहो आगे बढ़ते रहो।

आपको इन्हीं गुणों के कारण उत्तर प्रदेश सरकार और अनेक संस्थाओं के द्वारा सम्मानित किया गया। भारत सरकार के द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से अलंकृत किया गया। भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी सम्मानित किया गया। जिसका विस्तृत वर्णन उनके संक्षिप्त विवरण में अन्यत्र उपलब्ध है। अत्यधिक क्या लिखा जाय। उनके गुणों का वर्णन करना हम लोगों की सामर्थ्य से बाहर है। हम लोगों को उनके पुत्र पुत्री होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। **जब तक संस्कृत साहित्य का इतिहास रहेगा आपकी कीर्ति सदा जीवित रहेगी। इसीलिए किसी ने कहा है:**

''कीर्तिर्यस्य स जीवति।''

H. 49 कीर्ति नगर
नई-दिल्ली-110015
फोन न. 9911155285

समाज को समर्पितः मेरे पिता का जीवन

डॉ. आर्नेन्दु द्विवेदी
एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र, शास्त्रीय महाविद्यालय कैम्पियरगंज (गोरखपुर)।

एक आदर्श पिता का पुत्र होना बड़े गौरव एवं सौभाग्य की बात होती है। अपने 93 वर्ष के जीवन में पूज्य पिताजी (डॉ. कपिल देव द्विवेदी) ने कठोर एवं तपस्वी जीवन व्यतीत करने के बाद वेदों के प्रचार प्रसार के लिए वेदामृतम् ग्रन्थमाला के 40 भाग लिखकर जो समाज सेवा की है, उसके लिए उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा।

आपने सरकारी सेवानिवृत्ति के बाद 1978 में **वेदामृतम् ग्रथमाला** पर लिखने का कार्य शुरु किया और 2008 में लगभग 30 वर्षो के अथक मेहनत के बाद 40 भागों में **वेदामृतम् ग्रन्थमाला** पूर्ण हो सकी। आज किसी भी विषय पर वेदों में जानकारी चाहिए तो वेदामृतम् ग्रंथमाला में अंकित है। आपका प्रथम ग्रंथ 1954 में रचनानुवाद कौमुदी प्रकाशित हुआ, जिसकी लाखों प्रतियाँ बिकना आपकी लोकप्रियता दर्शाता है। 1991 में उन्हें भारत सरकार ने 'पद्मश्री अंलकरण' 2010 में **'राष्ट्रपति सम्मान'** से अलंकृत किया।

पिताजी ने हमेशा समय का सदुपयोग करने, कठोर परिश्रम, स्वभाव में नम्रता व बड़ों का सम्मान करने की प्रेरणा दी। आपकी प्रेरणा थी कि अपने किसी भी कार्य के लिए दूसरों पर निर्भर रहना अच्छी बात नहीं है।

1973 को 28 दिसम्बर की काली रात मुझे याद है, जब मेरी नानी का निधन होने के बाद मेरी माँ सदमा बर्दास्त न कर सकी और हार्टफेल से उनका दुःखद निधन हो गया। तब मैं 7 वर्ष का था। ऐसे दुःखद समय में पिताजी ने अद्भुत धैर्य का परिचय देते हुए 5 पुत्रों व 2 पुत्रियों का पालन-पोषण तथा शिक्षा, विवाह, नौकरी एवं सभी दायित्वों को बखूबी व बहुत अच्छे दंग से सम्पादित किया। इसके साथ, पुस्तक-लेखन की प्रक्रिया भी जारी रखी।

पिताजी ने हमेशा पूजा-पाठ, आराधना, ध्यान तथा प्रभु का स्मरण व यज्ञ करने पर बल दिया। उनकी आराधना से प्रभु प्रसन्न होते हैं। सच्चे मन से की गई प्रार्थना प्रभु हमेशा सुनते हैं।

पिताजी का कहना था कि दुःख में खुश रहो। यदि कटु शब्द कोई कहे तो शान्त हो जाओं। कभी तनाव में न

आओ। आज माता-पिता के आशीर्वाद से मैं उ.प्र. उच्च सेवा में राजकीय महाविद्यालय कैम्पियरगंज (गौरखपुर) में एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र) के पद पर कार्यरत हूँ।

पिताजी का कहना था कि प्रातः काल जल्दी उठना, भ्रमण करना, भ्रमण के बाद 25-30 लम्बे साँस लेना एवं भोगासन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है।

मेरे पिताजी ने केवल भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में संस्कृत ग्रन्थों, एवं व्याकरण, भाषाविज्ञान, संस्कृत साहित्य का इतिहास, वैदिक दर्शन वेदामृतम् ग्रंथमाला का प्रचार, प्रसार किया। वे भारत के ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्कृत विद्वानों में से थे। इस महान् हस्ती द्वारा जो सेवा भारतीय संस्कृति की गयी है उसके लिए हमेशा याद किया जाता रहेगा।

आज पूज्य पिताजी सशरीर, उपस्थित नहीं है फिर भी उनकी अतीत स्मृतियों, शान्त, स्वभाव, धैर्यपूर्वक जीने की कला, नियमित दिनचर्या, समय का सदुपयोग, अद्भुत लेखन कला, घर परिवार का कुलशलतापूर्वक दायित्व-निर्वाह, प्रभु-पूजा को आवश्यक बताना आदि प्रेरणाएं हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती रहेगी, मैं ऐसे पूज्य पिताजी को सादर नमन करता हूँ।

निवास-बी. 54, सूरजकुण्ड कालोनी, गोरखनाथ, गोरखपुर-273015
मो. 9415592187, 9415592187

मेरे आदर्श दादा जी

कु. वरदा (पौत्री)

मुझे अपने दादा जी से बेहद लगाव व प्यार है। मैं दादा जी की दिनचर्या से बहुत प्रभावित हूँ। सुबह प्रातःकाल जल्दी उठना, भ्रमण करना, आसन करना तथा लम्बे सांस लेने से बीमारियाँ नहीं होती हैं। मेरे दादा की बहुत बड़ी लाइब्रेरी है जिसमें हजारों पुस्तकें विभिन्न विषयों की हैं। जब मैं दादा जी की इतनी अधिक पुस्तकें देखती हूँ तो मुझे भी दादाजी की तरह लेखक बनने की इच्छा होती है। मुझे कक्षा में प्रथम आने पर दादाजी ने पुरस्कार के रूप में जो रुपये दिए थे उससे मैंने अच्छी जनरल नॉलेज की पुस्तक खरीदी है। दादा जी को "पद्मश्री" उपाधि की फोटो मुझे बहुत अच्छी लगती है। दादा ने इतनी मेहनत की कि वह इतनी बड़ी उपाधि प्राप्त कर सके।

दादा जीके जन्मदिन पर "दादाजी आप जिएं हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार..."।

हमें गर्व है, दादाजी आप पर

शाश्वत देव, पौत्र

नमन करता हूं शीश झुकाकर,
दादा जी हमें अति प्यारे।
कम सानिध्य रहा,
पर दुलराया हमें जान से प्यारे।।
हमें गर्व है....
पर्यावरण, योग, वेद, संस्कृत साहित्य,
दर्शन, भाषाविज्ञान के ज्ञान ने।
व्याकरण, उपनिषद, साहित्य ज्ञान ने,
आपको दिया "पद्मश्री" के सितारे।
देश प्रेम से ओत-प्रोत।
वेदों को घर-घर पहुँचाकर, दिया दिव्य ज्ञान नारे।।
हमें गर्व है....
व्याख्यान में शामिल रहा भारत के साथ जर्मनी
सूरीनाम, इग्लैण्ड, अमेरिका, तेजानिया
देश के साथ विदेशों में भी
आपने वेद प्रेम के झण्डे गाड़े
हमें गर्व है....
संस्कार, कला, साहित्यप्रेमी षदूमश्री दादाजी,
नाना-नानी, माता-पिता के स्नेहाशीष से मेहन को तत्पर हूँ।
आप सब हो मेरे तारे।
हमें गर्व है....

Elected Goud Corporators

(1) Padala Satish Goud-Fathenagar-Trs
(2) Vijaya shekar Goud-Rangareddy nagar-TRS
(3) Kuna Parijatham Goud-qutbullapur-TRS
(4) Dodla Venkatesh Goud-Allwyn colony-TRS
(5) Dusari Lavanya-Golnaka TRS
(6) Vijay kumar Goud-amberpet-TRS
(7) Jagdeeshwar Goud-Madhapur-TRS
(8) Poojitha-Hafeezpet-TRS
(9) Sabitha kishore Goud-Venkatapur-TRS
(10) Mahalaxmi Raman Goud-Himayath nagar-BJP
(11) Ramesh Goud-Lingojiguda-BJP
(12)Supriya Naveen Goud-Musheerabad-BJP
(13) Sunitha Prakash Goud-Adikmet-BJP

छठव्रत पर विशेष आलेख

'काँचहि बाँस के बँहगिया: बँहगी लचकत जाय'

–डॉ. अरुण मोहन भारवि

डॉ. भारवि सिद्धहस्त साहित्यकार एवं भोजपूरी के मूर्द्धन्य लेखक हैं।

हमारे देश में अनेक पर्व और त्योहार हैं, जिनको मनाने के क्रम में लोगों के सभी दु:ख-दर्द एवं परेशानियाँ भूल जाती हैं और एक नये उत्साह एवं जोश से नये वर्ष में नयी जिन्दगी की शुरूआत होती है। ऐसे ही जनपर्वों या लोक पर्वों में होली, दशहरा, ईद या दीपावली के नाम शुमार हैं। पर्वों के बाद **हमारे यहाँ कुछ ऐसे व्रत भी हैं, जो जन-जन में लोकप्रिय हैं और इसे लोग सामूहिक रूप से मनाते हैं– जैसे छठ एवं महाशिवरात्रि।** छठ सम्पूर्ण बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश का लोक व्रत है। अब तो इसकी लोकप्रियता में इतना इजाफा हुआ है कि यह सम्पूर्ण देश में मनाया जाने लगा है। **पर्व एवं व्रत में बहुत बड़ा अन्तर है, फिर भी आम जन इसे एक ही मान करने की भूल कर बैठते हैं। पर्व वह है, जिसे किसी खास, यादगार, या स्मरणीय घटना की याद या स्मृति में प्रत्येक वर्ष मौज-मस्ती से मनाया जाता है और उस अवसर पर आम जन हँसी-खुशी से, मौज-मस्ती से नये वस्त्र धारण करते हैं, नये-नये सुरुचिकर व्यंजन खाते और खिलाते हैं, आपस में हँसी मजाक करते हैं, गाना-बजाना करते है, मस्ती करते हुए अपना समय व्यतीत करते हैं जैसे–होली, विजयादशमी या दीपावली। लेकिन व्रत वह है जो दृढ़ निश्चय के साथ, पूरे नियम-कायदे, विधि-विधान एवं निष्ठा के साथ, पूजा-पाठ, उपासना-उपवास के साथ कडाई के साथ सम्पन्न किया जाता है। व्रत का अर्थ ही होता है– दृढ़ता या कठोरतापूर्वक पालन करना।**

छठ एक ऐसा ही लोक व्रत है, जिसे माता-बहन अत्यन्त कड़ाई एवं दृढ़ता के साथ, पूर्ण पवित्रता एवं निष्ठा के साथ भगवान सूर्य का निर्जला व्रत रखते हुए पूजा-पाठ, उपासना एवं आराधना करती हैं। यह व्रत पतिव्रता या सुहागन स्त्रियाँ पुत्र-प्राप्ति, पुत्र या संतान की सुख-समृद्धि तथा परिवार के कष्ट निवारण के लिए रखती हैं। **यह मूलत: बिहार का व्रत है जिसे देखते-देखते बिहारियों के प्रवास के साथ सम्पूर्ण देश में फैल गया है। यह एक कठिन व्रत है, जिसे माँ-बहने पूरी निष्ठा, समर्पण एवं दृढ़ता के साथ बिना अन्न-जल के चौबीस घण्टे के उपवास रखकर पूरी करती हैं। यह व्रत बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में खूब लोकप्रिय है और यहाँ घर-घर में एक लोक-आस्था के महाव्रत के रूप में मनाया जाता है।**

हमारे हिन्दू दर्शन में, संस्कृति में ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ ही अग्नि, जल, पृथ्वी, सूर्य, चाँद आदि को भी देवता माना जाता है। **देवता बनने के दो विशेष गुण माने जाते हैं– प्रथम शक्ति और दूसरा उस शक्ति से जन कल्याण का किया जाना। जिसमें किसी को भी कुछ देने की पात्रता होती है वही देवता है। जो देता है वह देवता है। जो देती है वह देवी है। जो देने के बदले लेगा, चाहे वह कोई भी हो वह 'देवता' नहीं 'लेवता' कहा जायेगा। सूर्य, अग्नि, जल सभी हमें कुछ न कुछ देते हैं, इसी से हमने इन्हें देवता माना है। सूर्य देव की पूजा हेतु विधि-विधान एवं निष्ठा के साथ व्रत रखने की सुदीर्घ परम्परा का नाम है–छठ।**

सूर्य से हमारा सम्बन्ध बहुत पुराना है। उतना ही प्राचीन जितना हमारा सम्बन्ध प्रकृति से है। जबसे सृष्टि है तभी से सूर्य भी हैं। पृथ्वी भी है। पौराणिक मान्यता के अनुसार सूर्य देवता के रथ में सात अश्व (घोड़े) जुते हैं, जिन पर चढ़ कर सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं, जिससे रात-दिन होते हैं। आज विज्ञान भी यह मानता है कि सूर्य-किरणों में सात प्रकार के रंग बैगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी एवं लाल होता है। यही सात रंग सूर्य के रथ के सात अश्व हैं। इन्हें विज्ञान में संक्षेप में VIBGYOR कहा जाता है।

उड़ीसा में समुद्र तट के किनारे **कोणार्क** में सूर्य देवता का विशाल, भव्य एवं प्राचीन मन्दिर अपनी गरिमा के लिए

सम्पूर्ण लोक में सुविख्यात है। सूर्य शौर्य, पराक्रम, तेज एवं त्याग के देवता माने जाते हैं। छठ का व्रत पुत्र-रत्न की प्राप्ति हेतु चैत्र मास या कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में षष्ठी तिथि को करने की परम्परा है– इसीलिए इसे **सूर्य षष्ठी व्रत** भी कहते हैं। भगवान सूर्य की पूजा संतान प्राप्ति के लिए कब से करने की परम्परा है इसका कोई सिलसिलेवार इतिहास उपलब्ध नहीं है। वैसे 'महाभारत' में कुन्ती द्वारा कुँवारेपन में ही सूर्य को अपनी पूजा-उपासना से प्रसन्न कर कर्ण नामक पुत्र प्राप्ति का विस्तृत उल्लेख उपलब्ध है।

आज का युग एक भौतिकवादी युग है। मनुष्य जीवन एक व्यापार हो गया है। तात्कालिक लाभ-हानि की कसौटी पर हमारी दिन-चर्या का संचालन हो रहा है। सभी जीतने वाले का जयकारा करते हैं। गुणगान करते हैं। उसकी निकटता और उसका सानिध्य चाहते हैं। उसकी कृपादृष्टि एवं उससे दोस्ती या मित्रता के अभिलाषी हैं। **अर्थात सभी उगते सूर्य की पूजा करते हैं, उसके सामने अपने को समर्पित करने में अपना सौभाग्य समझते हैं। किन्तु छठ में इससे उल्टी परम्परा का निर्वहन होता है। छठ व्रत में प्रथम दिन डूबते सूर्य (अस्ताचलगामी) सूर्य को अर्घ देने, पूजा करने की परम्परा है और उसके दूसरे दिन प्रातः काल उदीयमान सूर्य को अर्घ देने, पूजा करने की परम्परा है और अर्घ देकर छठ व्रत का समापन किया जाता है।** छठ की यह परम्परा हमें अपनी संस्कृति, धरोहर, पुरातन व्यवस्था एवं समाज के वृद्ध-बुजुर्गों के प्रति सम्मान का बोध कराता है। **जो भी पुराना है वह सभी गलत है और जो नया है वह सब अच्छा है इस सिद्धान्त 'पुराननित्येव न साधु सर्वम्' के तहत पुराने के प्रति हमारी आस्था का इजहार कराता है।** पुरानी परम्परा, संस्कृति तथा वय-बुद्धि में श्रेष्ठ-वृद्ध जनों के प्रति हमारी श्रद्धा, समर्पण एवं श्रद्धांजलि का दिव्य स्वरूप प्रदर्शित करता है। **यह व्रत नदी, तालाब, नहर या अन्य प्रकार के जल स्रोतो के किनारे करने की परम्परा है। हमारे यहाँ जल जीवन का पर्याय माना जाता है।**

बिहार में महातीर्थ स्थल गया के पास **देव में छठ** व्रत **करने का बड़ा महत्त्व है।** यहाँ का छठ बहुत प्रसिद्ध और प्राचीन माना जाता है। देव गया से 48 मील दूर है। **यहाँ सूर्य देव का भव्य एवं प्रसिद्ध मंदिर है– जहाँ व्रतियों का जबरजस्त मेला लगता है।** इस अवसर पर देश के कोने-कोने से हजारों श्रद्धालु भगवान सूर्य के श्री चरणों में अपनी श्रद्धा निवेदित करने पधारते हैं। देव का यह सूर्य मंदिर वास्तुकला का अद्भुत नमूना माना जाता है। इसकी तुलना खजुराहो और कोणार्क के चक्के वाले सूर्य मंदिर से की जाती है। एक किम्बदन्ति के अनुसार एक बार कुष्ट रोग से ग्रसित **राजा ''ऐल''** शिकार करते हुए, जंगल में भटकते-भटकते देव पहुँच गए। यहाँ जंगल बहुत घना एवं बीहड था। राजा ऐल थके एवं प्यासे थे। राजा ने अपने सेवकों से पीने के लिए पानी की व्यवस्था करने का आदेश दिया। कहीं पानी नहीं मिला। बहुत प्रयास के पश्चात् एक गढ़े में गंदा पानी दिखाई दिया, उसी से राजा अपने शौच कर्म से निवृत हुए। उस गंदे पानी के प्रभाव से राजा का श्वेत-श्याम धब्बों से सम्पृक्त शरीर नीरोग एवं स्वस्थ-सुन्दर हो गया। राजा ने वहीं रात्रि-विश्राम किया। रात में राजा ने स्वप्न देखा कि सूर्य देवता उससे कह रहे हैं कि उनकी तीन मूर्तियाँ इस गंदे जल से भरे गढ़े में गड़ी हैं। तुम उनका उद्धार करो। **बाद में वहाँ से सूर्य की मूर्तियों को निकालकर राजा ऐल द्वारा वहाँ भव्य सूर्य मंदिर का निर्माण कराया गया और सुदर्शन तालाब भी बनाया गया, जहाँ आज भी छठ होता हैं।** वैसे तो सम्पूर्ण बिहार में, उसके हर क्षेत्र में छठ व्रत बहुत ही निष्ठा, श्रद्धा एवं विधि विधान के साथ करने की परम्परा है, किन्तु **देव** के बाद गंगा, सोन, कोशी, गन्डक आदि पवित्र नदियों के किनारे छठ व्रत की छटा देखते ही बनती है। गंगा के किनारे बक्सर से पटना, मोकामा होते हुए भागलपुर तक छठ व्रतियों के महाकुंभ के दर्शन होते हैं। इस अवसर पर जिस उत्साह, निष्ठा एवं भक्ति से सड़क एवं घाटों की सफाई, पानी का छिड़काव एवं सजावट तथा प्रकाश की व्यवस्था की जाती है वह अपने आप में बेमिसाल एवं अनुपमेय है। बक्सर में रामरेखा घाट, सती घाट, सिद्ध-नाथ घाट सहित अनेक शहरों एवं घाटों के

किनारे रथ पर सवार भगवान भास्कर की प्रतिमाएँ स्थापित की जाती हैं। **घाटों तालाबों पर हर जगह दोपहर ढलते ही व्रतधारी माताएँ बहने झुंण्ड के झुण्ड रंग बिरंगीं परिधानों में सजी-संवरी छठ के गीत-गाते हुए जाते दिखती हैं। गाँव-शहर की सड़के गुलजार हो जाती हैं। छठ घाट की ओर जाती व्रत धारियों की टोली उनके गलों से निकलते छठ के गीतों के सुमघुर बोल कानों में अमृत घोलते हैं–**

'काँचहि बाँस के बँहगिया, बँहगी लचकत जाय,
होरल न कवन बाबू कँहरिया, बँहगी घाटे पहुँचाय।
काँचहि.....
बाट जे पूछेला बटोहिया, ई बँहगी केकरा के जाय,
आन्हर हबेरे बटोहिया, ई बँहगी छठ भइया के जाय। काँचहि....'

इस गीत के बोल से छठ की लोकप्रियता का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि **बँहगी के बारे में त्रिज्ञासा करने वाला यात्री/पथिक 'अंधा' की उपाधि पा जाता है।** दूसरी ओर इस गीत में भारत की संस्कृति एवं सम्पन्नता दोनों झलकती है। फल एवं प्रसाद की अधिकता से, उसके बोझ से काँवर (बँहगी) लचकते हुए घाट की ओर जा रही है, जबकि आज महंगाई के बोझ से हमारी कमर झुक गई है। इस व्रत में पवित्रता, शुद्धता तथा विधि-विधान का बड़ा महत्त्व है। यदि पक्षी भी प्रसाद के फल को जूठाकर दे तो वह निरीह प्राणी भी दण्ड का भागी माना जाता है। एक बानगी देखे:–

'केरवा जे फरेला द्यबद से, ओह पर सुग्गा मडराय। ,
सुगवा के मरबो धनुष से, सुग्गा गिर मुरझाय।
सुगनी जे रोयेली बियोग से, सुग्गा काहे मारल जाय?
कवन करम हम कइनी, सुग्गा काहे मारल जाय?
केरवा .....'

चैत्र एवं कार्तिक के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि को दिन भर उपवास करके रात में गुड़-चावल की खीर (जाउर) खाने की परम्परा है, जिसे **'खरना'** कहा जाता है। बहुत सारे लोग इस रात छठ घाटों पर ही रात्रि विश्राम भी करते हैं। अनेक गरीब-निर्धन श्रद्धालु व्रती अपना बहुत कुछ बेंच कर भी छठ व्रत के प्रसाद की व्यवस्था करते हैं–

'कहेली कवन बाबू कवन अइसन रनिया हो
काहें लागी कइली छठिया बरतिया हो
काहें लागी सोवेलु गंगा के अररिया हो
काहें लागी कइलु छठिया बरतिया हो
कहेली कवन देगी हम छठ करबो हो
स्वामी हो कवन स्वामी के बेंच देबो ना
उनको के बेंचि के फलहरिया किनबो ना
बेटा हो कवन बेटा के बेंचि देबो ना
उनका के बेंचि के कलसुपवा किनबो ना'

इसी क्रम में छठ के औचित्य पर प्रकाश डालते यह छठ गीत सुनने लायक है–

'ई घर में निकलेली कवन देयी
हाथ में सिन्होरवा लेले।
ई रहिया में भेंटेले कवन पुता
काहे अम्मा अक्षर।
ई भुखल बानी वोहरे बधइया बबुआ
आदित के अरघ देबे
सूरज के अरघ देबे।'

अधिकांश स्थलों पर पण्डित जी द्वारा छठ में अर्घ दिलाने की परम्परा है, जबकि अधिकांश जगह घर के पुत्र, पति ही सूर्य को अर्घ दिलवाने का काम करते हैं। बानगी देखें–

'पहिन ना कवन बाबू पियरिया,
भइल अरघिया के बेर।'
पइस 'जगावेली कवन देइ,
उठी स्वामी जी हमार।
भोर भइल मोरवा बोले,
भइल अरघिया के बेर।'

प्रथम दिन अस्ताचलगामी सूर्य को और दूसरे दिन प्रातः उगते सूर्य को अर्घ देकर यह निर्जला व्रत पूर्ण होता है। इसके बाद व्रती मां-बहनें प्रसाद ग्रहण करते हुए पारण करती हैं। प्रसाद में गुड़ को आटा में मिला कर शुद्ध घी में ठेकुआ (खजूर) बनाने का महत्त्व है। **हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है। कृषि का मूल, प्रकृति एवं नई फसल होता है। चैत्र एवं कार्तिक मास दोनों में हमारे यहाँ नई फसले पैदा हो जाती हैं जिससे सभी प्रसन्न रहते हैं और छठ व्रत मनाते हैं। छठ व्रत अब बिहार की भौगोलिक सीमा तोड़कर वैश्विक हो गया है। यह व्रत कार्तिक एवं चैत्र दोनों मासों में मनाया जाता है किन्तु कार्तिक मास के छठ की लोकप्रियता का भला क्या कहना?**

प्रधान सम्पादक, ''जनमानस जागृति''
बक्सर (बिहार)
मो. 7870841200/9532525695

जायसवाल समाज के गौरव एवं पथप्रदर्शक श्री पन्नालाल जायसवाल

श्री पन्नालाल जायसवाल

इसमें कोई संदेह नहीं है कि श्री पन्नालाल जायसवाल भारत के जायसवाल समाज के गौरव और एकमात्र ऐसे मागदर्शक हैं जिनपर हमें गर्व है! आज उन्होंने समाज और देश की सेवा करते हुए ९६ वर्ष की उम्र पार कर ली है, एवं 97 वर्ष में चल रहे हैं और वे आज भी समाजसेवा के लिये तत्पर हैं! मैं तो बार-बार यही कहता हूँ कि पन्नालाल जायसवाल ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने आचरण और निष्ठा से सिद्ध कर दिया है कि केवल जायसवाल समाज के लिये ही नहीं बल्कि समस्त भारत के लिये वे एक सत्यनिष्ठ समाजसेवी और देशभक्ति की मिसाल हैं! उन्होंने गान्धी जी के आदर्शों की सिर्फ बातें ही नहीं की हैं बल्कि उसे अपने जीवन में पूरी निष्ठा से उतारने का प्रयास भी किया है! इसलिये वे हम सबके लिये सदैव एक प्रेरणास्रोत रहे हैं और आगे भी रहेंगे! हम सबने उनकी कार्यशैली से और विचारों से बहुत कुछ सीखा है और उनके अनुभवों से हमें आगे भी बहुत कुछ सीखना है! इसलिये इस साक्षात्कार में उनके जीवन से सम्बन्धित कुछ ऐसे प्रश्नों को मैं यहां दे रहा हूं जो उनके संघर्षशील जिन्दगी की झांकी भी पेश करेंगे और उनके मूल्यवादी विचारों से हमें परिचित भी करायेंगे! परिचर्चा से संबन्धित प्रश्न निम्नप्रकार हैं:–

प्रश्न (१): आदरणीय पन्नालाल जायसवाल जी, आज आप ९६ वर्ष की उम्र पार करने के बाद भी कैसा महसूस कर रहें हैं? क्या आप को अपने बचपन के खट्टे-मीठे अनुभवों की कुछ यादें हैं? मां के बचपन में ही देहान्त हो जाने के कारण आप को मां का प्यार नहीं मिला! आप अपने बचपन के कुछ अनुभव बताइये!

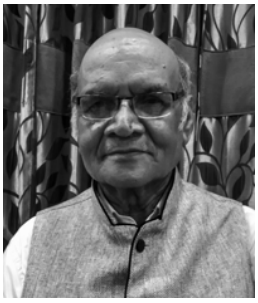

डॉ. राधेश्याम बंधु

उत्तर: मुझे अपनी दीर्घ आयु का कभी एहसास नहीं होता। मुझे लगता है, मैं अभी भी युवा हूँ। निरंतर कार्य करने की वही क्षमता है।

बचपन में माँ को खोने तथा परिवार में अनेक लोगों के असमय चले जाने से मैं स्वभावत: गंभीर हो गया। विभिन समस्याओं पर चिन्तन मेरी प्रवृत्ति बन गयी।

प्रश्न (२): आप को बचपन मे शिक्षा के मामले में भी बडों का कोई सहयोग नहीं मिला! ऐसे में बचपन की शिक्षा का प्रबन्ध आप ने कैसे किया?

उत्तर: प्रारंभिक शिक्षा म्युनिसिपल स्कूल में हुई। "हे प्रभो आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिये" श्लोक से प्रार्थना के बाद पढाई शुरू होती। टाट पर बैठना, लकड़ी के तख्ते पर खड़िया घोल से नरकट की कलम से लिखना। गुरु पूर्णिमा के दिन अध्यापक को गुरु दक्षिणा देने की परंपरा थी।

दो कक्षा पास करने के बाद सनातन धर्म हाई स्कूल में भर्ती हुआ। हाई स्कूल की परीक्षा मैंने हरिश्चंद्र हाई स्कूल से पास की।

प्रश्न (३): आप ने बी.एच.यू.में कहां तक शिक्षा प्राप्त की और वहां शिक्षा के दौरान आप ने क्या-क्या अनुभव प्राप्त किये?

उत्तर: सन १९४० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में मेरा प्रवेश हुआ। प्रतिदिन शहर से ५ मील साइकिल चला कर विश्वविद्यालय पहुँचता था। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण मुझे प्रारंभ में कठिनाई हुई। परन्तु प्रात: एकांत में अंग्रेजी समाचार पत्र जोर-जोर से पढने से अंग्रेजी में बोलने का धड़का खुला।

मालवीय भवन में गीता प्रवचन के दौरान महामना मालवीय जी के दर्शन हुए। उस प्रभावशाली व्यक्तित्व की

मेरे ऊपर अमिट छाप आज तक है।

सन १९४१ में विश्वविद्यालय के कान्वोकेशन में महात्मा गाँधी भी आये थे। सभा मंडप में भारी भीड़ थी। उन्हें देखने को भीड़ उमड़ पड़ी। उसे नियंत्रित करने के लिए जवाहर लाल लोगों के कंधे पर चढ़ गए और गाँधी जी तक पहुँच कर लोगों को शांत रहने की अपील की।

विश्वविद्यालय के कुलपति **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की स्नातकों को दी गयी एक सीख मुझे आज तक नहीं भूलती - अपने शरीर, मष्तिष्क, आत्मा** - तीनो की ओर बराबर ध्यान दो।

सं 1946 में मैंने वनस्पति कृषि विज्ञानं में स्नातकोत्तर परीक्षा पास की।

प्रश्न (४): आप युवावस्था से ही गान्धी जी के विचारों और कार्यशैली से बहुत प्रभावित थे! इसलिये उनके आदर्शों का आप ने अपने जीवन में भी निर्वाह करने का प्रयास किया और आप ने गान्धी जी की तरह डायरी लिखना भी शुरू कर दिया था! इससे आप को क्या लाभ हुआ?

उत्तर: मैं युवावस्था से ही महात्मा गाँधी से उनकी सादगी, सरल स्वभाव, दुखी पीड़ित जनों के प्रति उनकी संवेदना, देश भक्ति, स्वतंत्रता आन्दोलन में साहसपूर्ण भागीदारी, उनके विचारों, कार्य शैली से प्रभावित था। वस्त्रों के दो सेट से अपना जीवन यापन, रात्रि में दिन भर के कार्यों की समीक्षा कर उसे डायरी में अंकित करता, यह परंपरा आज तक जारी है। इससे अपने जीवन को स्वच्छ और प्रभावी बनाने में बढ़ी सहायता मिली।

प्रश्न (५): अंग्रेजी राज में एक बार एक बेकसूर रिक्शेवाले को सिपाही द्वारा पीटे जाने का विरोध भी आप ने किया था! इसकी प्रेरणा आप को कहां से मिली?

उत्तर: मेरी उस समय आयु लगभग १५-१६ वर्ष थी। गंगा में स्नान कर लौटते समय गुदौलिया चौराहे पर एक गरीब रिक्शा चालक को बूट मारते देखा। यह अंग्रेजों का शासन काल था। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने रोकने की कोशिश की, फिर तो वह मेरे पीछे पड़ गया, मुझे पकड़ लिया और दशाश्वमेध थाने की ओर ले चला। परन्तु एकत्र लोगों के हस्तक्षेप से मुझे छोड़ दिया। उसी दिन से मैं अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हो गया और देश की आजादी का सपना देखने लगा।

प्रश्न (६): आप युवावस्था से ही आर.एस.एस.से जुड गये थे किन्तु इस बात से आप के पिता जी बहुत नाराज थे! इस असंगति का निवारण आप ने कैसे किया और संघ के बडे पदों पर भी कैसे काम कर सके?

उत्तर: इसी बीच मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आया और शाखा में जाने लगा। संघ के कठोर सैनिक अनुशासन, समर्पित जीवन और सुदृढ़ संगठन से मैं प्रभावित हुआ और लगा कि यह संस्था देश को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराने में सहायक होगी। धीरे धीरे **मा. भाऊराव** देवरस के मार्ग दर्शन में कार्य करने लगा और संघ में उच्च पदों को ग्रहण किया। अब मेरा अधिकांश समय प्रात:काल से लेकर रात्रि 9 बजे तक संघ के कार्य में जाने लगा। बड़ी मुश्किल से मैं विश्वविद्यालय के लिए समय निकाल पाता था। सं. 1946 में मैंने कृषि विज्ञान में स्नातकोत्तर परीक्षा पास की।

संघ के लिए बहुत समय देने से मेरे पिता बेहद नाराज रहते थे और एक दिन जब संघ के उच्च स्तर के एक पदाधिकारी **श्री लक्ष्मण भिड़े** मुझसे मिलने आये थे तो मेरे पिता ने उन्हें घर में प्रवेश नहीं करने दिया और तेजी से दरबाजा बंद किया जिससे वह बेचारे लड़खड़ाते हुए गिरते गिरते बचे। उसी दिन मैंने घर छोड़ दिया। रात्रि राम मंदिर में काटी और जेब में जो दो चार आने थे उस से प्रात: नास्ता किया। उसी दिन मुझे चुनारगढ़ (जिला मिर्जापुर) भेज दिया गया जहाँ मेरा प्रचारक जीवन प्रारम्भ हो गया। चुनारगढ़ में एक इंटर कॉलेज था वहाँ मुझे साइंस टीचर एवं फार्म सुपरवाइजर की नौकरी मिल गयी। १२० रुपये मेरा मासिक वेतन था जो संघ में जमा हो जाता था और मुझे मेरे खर्च के लिए २० रूपया दिया जाता था। दो वर्ष सं 1948 तक मेरा यह जीवन चला।

हर वर्ष दिसंबर के महीने में संघ का तीन दिन का शिविर लगता है। 29, 30, 31 दिसंबर सं 1948 को मैंने चुनारगढ़ के किले में तीन दिन का शिविर लगाया था और

लगभग 500 स्वयंसेवक किले में मौजद थे। शिविर में संघ के कार्यकर्ताओं की सुविधा के लिए जलपान, भोजन, चिकित्सा आदि सभी का प्रबंध था। इसी बीच ३० जनवरी को महात्मा गाँधी की हत्या हो गयी। मैंने शिविर को तुरंत समाप्त कर दिया और लोगों को अपने घर वापस जाने का आदेश दिया। विसर्जन के बाद मैं भी कॉलेज में अपने कमरे में वापस आ गया। अगले दिन पुलिस कॉलेज में आ गयी और मुझे गिरफ्तार कर इलाहाबाद ले गयी और नैनी केंद्रीय कारागार में बंद कर दिया, जहाँ मैं 6 मास तक रहा और संघ पर से प्रतिबन्ध उठने के बाद मुक्त हुआ।

नैनी केंद्रीय कारागार में लगभग 156 स्वयं सेवक बंद थे। **प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया)** भी हमारे साथ थे। जेल का जीवन अत्यंत कठोर था। घर जैसी कोई सुविध ा नहीं थी। एक ताम्बे का पात्र दिया गया था जिस को हम लोग सभी कार्यों के लिए प्रयोग करते थे। भोजन में कारागार में उगाई गई पत्ता गोभी जो सुखाकर बोरे में रखी जाती थी, उसी को पानी में भिगो कर सब्जी बनाई जाती थी। खाने से पूर्व चावल के दानों से कीड़ों को छाँटकर अलग करना पड़ता था। एक दिन की बात है कि दीवाल के किनारे बैगन का पौधा ऊगा दिखा जिस में फल लगे हुए थे। उसे देख लोगों ने राहत की साँस ली। विंध्याचल मंदिर के पुजारी श्री गणेश जी ने उसका भर्ता बनाया और उसे १५६ लोगों को चखाया। जेल में संघ के विविध कार्यक्रम आयोजित होते रहते थे जिससे किसी प्रकार समय कटता गया।

प्रश्न (७): आप को **रज्जू** भैया, **भाऊराव देवरस** और **अटलबिहारी वाजपेयी** के सान्निध्य में भी काम करने का अवसर मिला है! इनके साथ काम करने का आपको अनुभव क्या हैं?

उत्तर: प्रचारक जीवन में मुझे मा. भाऊराव देवरस के अतिरिक्त **पंडित दीन दयाल उपाध्याय**, **श्री नानाजी देशमुख** तथा **श्री अटल बिहारी बाजपेयी** के सान्निध्य में कार्य करने का अवसर मिला।

माननीय भाऊराव देवरस ऋषि तुल्य थे। आदर्श जीवन था, उन्हें भारत के गौरवपूर्ण इतिहास, संस्कृति और परंपरा का अदभुत ज्ञान था। राष्ट्र को समर्पित उनके जीवन का मेरे ऊपर बहुत प्रभाव पढ़ा। प्रारंभ से जीवन के अंत तक मुझे उनका मार्गदर्शन मिलता रहा। **महामना मालवीय मिशन की स्थापना उनकी सोच थी जिसका कार्यभार उन्होंने मुझे सौंपा।**

पंडित दीन दयाल उपाध्याय का जीवन सादगी भरा था। व्यावहारिक कुशलता अनुपम थी। सभी कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत सम्बन्ध रखते थे। समय के सदुपयोग का बराबर ध्यान रहता था। यदि कभी ट्रेन लेट होती तो वहीँ स्टेशन पर जेब से पोस्ट कार्ड निकाल कर कार्यकर्ताओं को पत्र लिख देते।

नानाजी देशमुख ने गोरखपुर मंडल में संघ की शाखाओं का जाल बिछाने के अतिरिक्त भारत के तीन पिछड़े जिलों का सर्वांगीण विकास किया। एक बार झारखण्ड के आदिवासी क्षेत्र में कार्य करते समय गड्ढे में एकत्र जल पीने के कारण मैं बीमार पढ़ गया, तो एक दिन देखा नानाजी मेरे लिए झोली में आयुर्वेदिक दवाइयां लेकर चले आ रहे हैं। अनेक महत्वपूर्ण पदों की व्यस्तता के बाद भी वे अपने कार्यकर्ताओं के लिए समय निकाल लेते थे।

प्रश्न (८): आप ने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी बहुत काम किया है और काफी समय तक ''आज'' अखबार में भी सेवा की! इस कार्यकाल की आपकी उपलब्धियां क्या हैं?

उत्तर: कारागार से निकलने के बाद मैंने सन १९४८ में काशी से निकलने वाले राष्ट्रीय दैनिक ''आज'' अखबार में कार्य करना शुरु किया। यथासंभव संघ के समाचारों को भी 'आज' में प्रकाशित करने लगा। इसी समय नागपुर में संघ की उच्चस्तरीय बैठक में संघ के दृष्टिकोण को समाज में प्रसारित करने के लिए समाचार पत्रों के माध्यम को अपनाने का निर्णय हुआ। तत्पश्चात श्री अटल बिहारी वाजपेयी वाराणसी आये और यहाँ से 'संचेतना' हिंदी पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। पत्रकारिता की पृष्ठभूमि के कारण उन्होंने मुझे भी सहयोग के लिए साथ में ले लिया। पत्रिका के प्रकाशन की पूरी व्यवस्था मुझे सौंप दी गयी। छः महीने तक वह प्रकाशित हुआ। उसके बाद सरकार ने उस पर रोक लगा दिया और प्रेस पर ताला चढ़ गया।

इसके बाद वाजपेयी जी मुझे लखनऊ ले गए जहा से हिंदी दैनिक **'स्वदेश'** प्रारम्भ हुआ। संघ के उग्र समाचारों के प्रकाशन के कारण उसे भी सरकार ने कुछ महीने बाद ही बंद कर दिया। तत्पश्चात 'पायनियर' तथा **'स्वतंत्र भारत'** में कुछ दिन कार्य करने के बाद मै वाराणसी वापस आ गया और दैनिक 'आज' में देश भक्त पत्रकार **बाबूराव विष्णु पराड़कर** के मार्गदर्शन में काम करने लगा।

पराड़कर जी के **अग्रलेख** प्रभावी होते थे। उनके मष्तिष्क से नहीं, हृदय से जो उदगार निकलते थे वह लोगों को हिला देते थे। एक बात और, "आज" के प्रूफ शोधक व्याकरण में पारंगत होते थे और संपादन में लगे लोगों से अधिक ज्ञान रखते थे।

प्रश्न (९): आप को **श्यामा प्रसाद मुखर्जी** द्वारा स्थापित ''**भारतीय जनसंघ पार्टी**'' मे भी कई बडे पदों पर भी काम करने का अवसर मिला! इस राजनीतिक जीवन से आप ने क्या पाया?

उत्तर: सन 1951 में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई। उनके साथ बैठकों में भाग लेने का अवसर मिला। मुझे वाराणसी का कार्य सहेजा गया। उसी वर्ष आम चुनाव की घोषणा हुई और मुझे बनारस जिले में चुनाव सम्बन्धी सारे कार्य का उत्तरदायित्व सम्हालना पड़ा। अल्प काल के राजनीतिक जीवन में मुझे बहुत से ऐसे निर्णय करने पड़े जो नैतिक दृष्टि से सही नहीं थे। मेरा जीवन मूल्यों पर आधारित है। मैं राजनीति भी मूल्यों पर आधारित चाहता हूँ। चुनाव के दौरान अत्यधिक परिश्रम, अनियमित जीवन के कारण मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया और 1952 में मुझे प्रचारक जीवन छोड़ना पड़ा।

प्रश्न (१०): 1953 से 1986 तक ''भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद'' के प्रधान संपादक के पद पर भी आप ने काम किया! इस संबन्ध में आप के अनुभव और उप्लब्धियां क्या हैं?

उत्तर: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् में मेरी नियुक्ति मार्च 1953 में खेती' के संपादक के रूप में हुई। मुझसे कहा गया कि आप "खेती" में इंडियन फार्मिंग (Indian Farming) के लेखों का अनुवाद छापिये। इस कारण पत्रिका दो महीने देर से निकलती थी जो मुझे पसंद नहीं था। मैं **"खेती"** में मौलिक हिंदी लेख देना चाहता था। मैं परिषद् के चेयरमैन **श्री दामले** से मिला जिन्होंने मेरी बात तुरंत स्वीकार कर ली। इस पर मेरे ऊपर के अधिकारी उखड गए और मुझे परेशान करने लगे, परन्तु खेती में हिंदी के मौलिक लेख छपने लगे और पत्रिका समय से निकलने लगी।

कुछ समय बाद मुझे इंडियन फार्मिंग के लिए भी काम करना पड़ा। उस समय अंग्रेजी में लिखे गए मेरे लेखों और संपादन में कुछ कमी नजर आयी, उस पर इंडियन फार्मिंग के मलयाली संपादक ने कहा "यूपी वाले अंग्रेजी में काम नहीं कर सकते''।

यह आरोप मुझे असह्य लगा और उसी दिन से मैंने अंग्रेजी में लेखन, संपादन में अपनी कुशलता बढाने के लिए दिन-रात परिश्रम करने लगा। कुछ वर्ष बाद मैंने इंडियन फार्मिंग के संपादक और बाद में कृषि निदेशालय के सारे प्रकाशनों के प्रधान संपादक का पद संभाला।

प्रश्न (११): 1978 मे **'महामना पन्डित मदनमोहन मालवीय'** की स्मृति मे बनी ''**मालवीय मिशन**'' संस्था के संयोजक और महामंत्री के पद पर भाऊराव देवरस ने आप को नियुक्त किया था! इस कार्यकाल के आप के अनुभव और उप्लब्धियाँ क्या हैं"?

उत्तर: सं 1978 में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के जीवन आदर्शों एवं विचारों के प्रसार के लिए महामना मालवीय मिशन की स्थापना हुई और श्री भाऊराव देवरस जी ने इस का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा। **मैंने पूरे देश में इस का विस्तार किया और दिल्ली में महामना मालवीय जी के राष्ट्रीय स्मारक (मालवीय स्मृति भवन) का निर्माण कराया।** पूज्य महामना मदन मोहन मालवीय जी के जीवन के कार्यकलापों एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित त्याग भरे जीवन से प्रभावित होकर मैं उनका भक्त हो गया और आज भी उनके आदर्शों से प्रेरित जीवन बिता रहा हूँ। राजनीति में मेरी कभी अधिक रूचि नहीं रही और आज भी ९६ वर्ष की उम्र में शिक्षा के माध्यम से युवाओं में चरित्र निर्माण एवं सामाजिक सेवा के कार्यों में

तन्मयता से लगा हुआ हूँ।

प्रश्न (१२): आपने ''**जायसवाल जागृति**'' के अध्यक्ष और **प्रधान संपादक** के पद को भी सुशोभित किया है और '**जायसवाल जागृति**' को भारत की एकमात्र ऐसी बौद्धिक संस्था बनाने का श्रेय भी आप को मिला है! इस सम्बन्ध में आप के क्या विचार हैं?

उत्तर: मालवीय मिशन के अतिरिक्त मैं जायसवाल जागृति से भी जुड़ा हुआ हूँ और जायसवाल समाज के शैक्षणिक, सांस्कृतिक विकास के लिए कार्य कर रहा हूँ। **जायसवाल जागृति संस्था** की स्थापना सं 1992 में हुई। साथ ही **जायसवाल जागृति पत्रिका** रजत जयंती भी मना चुकी है। मेरा प्रयास है कि पत्रिका में स्वजातीय बंधुओं के लेख, कहानिया, कवितायँ छपें, उनमें साहित्यिक प्रतिभा का विकास हो और स्वजाति के विकास के साथ उनमें देशभक्ति की भावना भी जागृत हो।

चूँकि पत्रिका के वरिष्ठ संपादक वर्ग की आयु ८०-९० के बीच में है, इसलिए दूसरी पीढ़ी के संपादकों के चयन की प्रक्रिया चल रही है।

जायसवाल जागृति के फिक्स्ड डिपाजिट में इतना धन संचित कर दिया गया है कि पत्रिका धनाभाव के कारण कभी बंद न हो।

प्रश्न (१३): दिल्ली में ''**जायसवाल भवन**'' का निर्माण अभी तक जायसवाल समाज की लाख कोशिशों के बाद भी नहीं हो सका है! इस कठिन मुद्दे को भी पूरा करने का वचन आपने सबके अनुरोध पर दे दिया था लेकिन **जायसवाल समाज** के सभी अन्य बडे वरिष्ठ नेताओं ने वादा करने के बाद भी साथ नहीं दिया और पीछे हट गये! इस संबन्ध में आप के क्या विचार हैं और क्या संदेश हैं?

उत्तर: मालवीय स्मृति भवन के निर्माण के बाद यह इच्छा थी कि दिल्ली में **कलचुरि जायसवाल धर्मशाला** का निर्माण भी हो जाए। इस दिशा में कार्य प्रारंभ हुआ। निर्माण के लिए ट्रस्ट बना और कुछ धन भी एकत्र हुआ। परन्तु समाज के कुछ शीर्षस्थ एवं भीष्म पितामह माने जाने वाले नेताओं ने जिन्होंने मुझे आगे बढाया था धर्मशाला योजना के बढ़ते हुए कार्य को देख कर उन्होंने हाथ ही नहीं खींच लिया बल्कि कोशिश की कि मेरे पास धर्मशाला निर्माण के लिए चेक / ड्राफ्ट न पहुंचे। इससे मुझे बड़ा मानसिक आघात पहुंचा। मैंने ट्रस्ट विघटित कर दिया और लोगों का पैसा वापस कर दिया।

प्रश्न (१४): आप गांधी जी के मूल्यवादी जीवन में विश्वास रखते हैं! आपने देखा है कि तमाम कोशिशों के बाद भी जायसवाल समाज साहित्य, संस्कृति, राजनीति और मानवीय मूल्यों की कसौटी पर खरा नहीं उतर सका! हमने यह भी देखा है कि जायसवाल समाज के कुछ लोगों के मंत्री, सांसद, विधायक, आई.पी. एस., आई.ए.एस. डाक्टर, इन्जीनियर, अभिनेता बन जाने के बाद भी संस्कार हीनता के कारण समाज को कोई लाभ नहीं हुआ और न समाज का चेहरा भी एक नम्बर का हो सका! इस सम्बन्ध में आप का क्या संदेश है?

उत्तर: स्वजातीय समाज के उत्कर्ष के लिए अनेक प्रयास हुए पर अभी तक आशाजनक सुधार नहीं हुआ। लोग बड़े-बड़े पदों पर स्थापित हुए, पर समाज की भलाई का कोई काम नहीं हुआ।

संभवत इसका कारण था लोगों में निजी स्वार्थ की भावना और सेवा समर्पण का अभाव।

हम अपने कार्यक्रमों द्वारा लोगों में चरित्र का निर्माण करें और उनमें भारतीय संस्कृति के उच्चतम मूल्यों का समावेश करें। इस प्रकार देश सेवा में लगे।

सम्पर्क सूत्र:

पन्नालाल जायसवाल, सी-3, गुलमोहर पार्क नई दिल्ली-110049 मो. 8882828808 फोन-011-26514885

Email :pljaiswals@gmail.com

- **डॉ. राधेश्याम बन्धु**

बी-३/१६३,यमुना विहार,

दिल्ली-53, 9868444666

स्वास्थ्य चर्चा

बढ़ती उम्र में स्वस्थ कैसे रहें?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के अनुसार सर्वांगीण स्वास्थ्य की परिभाषा में शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य के साथ आध्यात्मिक स्वास्थ्य को भी सम्मिलित किया गया है। स्वास्थ्य एक अमूल्य सम्पति है– जिसका हर संभव ध्यान रखना चाहिये। सभी को जीवन में कुछ ऐसे नियमों को अपनाना चाहिये जिससे व्यक्ति स्वस्थ रहकर दीर्घायु बन सके।

वरिष्ठ नागरिकों को ध्यान में रखते हुए बढ़ती उम्र में स्वस्थ रहने के लिये कुछ सुझाव प्रस्तुत है।

(अ) 1. **अपने वजन पर नियंत्रण रखें,** उसके लिये संतुलित सात्विक एवं सुपाच्य आहार ही लें। मांसाहार, अधिक वसा, शर्करा लवण युक्त एवं गरिष्ठ आहार का सेवन न करें।

2. मद्यपान, धूम्रपान (तम्बाकू का सेवन किसी भी रूप में) एवं मादक द्रव्यों के सेवन से दूर रहें।

3. नियमित शारीरिक व्यायाम करें। पैदल सैर करें। भोजन के तुरंत बाद व्यायाम/सैर आदि न करें।

4. साल में एक बार चिकित्सक से अपना शारीरिक परीक्षण अवश्य कराएं। यदि कोई शारीरिक बीमारी पाई जाती है तो विशेषज्ञ–चिकित्सक की सलाह अनुसार जांच करवाते रहें।

5. दो महीने में एक बार रक्तचाप (बी.पी.) की जांच करवाते रहें। यदि अधिक हो तो चिकित्सक की सलाह अनुसार समय-समय पर जांच व इलाज करवाएं।

6. अपनी रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) की जांच साल में एक बार अवश्य करवाएं। यदि बढ़ी हुई है तो विशेषज्ञ से परामर्श लें।

7. अपने रक्त में चर्बी की जांच (LIPID PROFILE), कम से कम कोलेस्ट्राल की जांच साल में एक बार अवश्य कराएं।

8. प्रतिवर्ष ई.सी.जी. करवाएं, यदि असामान्य पाया जाता है तो हृदय रोग विशेषज्ञ से परामर्श लें।

9. अपनी आँखों एवं दांतों की जांच नियमित रूप से करवाते रहें।

10. महिलायें स्त्रीरोग विशेषज्ञ से जांच करवाएं, यदि किसी प्रकार के प्रदर/स्त्राव, रजोनिवृति पश्चात रक्तस्त्राव (POST MENOPAUSAL BLEEDING) की शिकायत है। (क्योंकि यह कैंसर का लक्षण हो सकता है।) हड्डियों के कमजोर होने (OSTEOPOROSIS) के लिए भी जांच करवाएं।

11. यदि कोई विशेष/असामान्य या नई स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या पैदा होती है तो योग्यता प्राप्त चिकित्सक से परामर्श अवश्य लें। जैसे छाती में किसी प्रकार दर्द, सांस फूलने की तकनीफ या टांगों में दर्द होने की शिकायत होने पर उसे नजर अंदाज न करें।

12. चिकित्सक की सलाह के बिना स्वयं किसी प्रकार की दवा (शक्तिवर्धक-विज्ञापित औषधियों आदि) का प्रयोग न करें।

13. पर्याप्त नींद एवं विश्राम भी शरीर के लिये अति आवश्यक है।

14. अत्यधिक मानसिक तनाव से बचें। तनाव एवं चिन्तामुक्त रहकर हमेशा प्रसन्न रहने का प्रयास करें। जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रखें। चिन्ता छोड़ सर्व शक्तिमान परमात्मा/प्रभु का चिन्तन करें।

15. सदाचारी, सकारात्मक, संतुलित, संयमित स्वस्थ जीवन शैली अपनाएं।

16. योग (ध्यान) एक सकारात्मक जीवन पद्धति है। नियमित योगाभ्यास से विभिन्न प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों से बचा जा सकता है तथा छुटकारा पाया जा सकता है। तनाव मुक्ति के लिये **ध्यान योग** एक कारगर उपाय है। इसके नियमित अभ्यास से निर्णय में दृढ़ता आती है, सकारात्मक एवं रचनात्मक विचारधारा बनती है, मन की शान्ति और शक्ति में वृद्धि होती है।

17. आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन, मनन-चिंतन एवं सत्संग को विशेष रूप से अपनी दिनचर्या में शामिल करें।

18. परिवार के सदस्यों के साथ यथासंभव तालमेल बनाये रखने का प्रयास करें।

यदि आप समर्थ है तो समाज के अन्य कमजोर वर्गो, जरूरतमदों की किसी न किसी रूप में सेवा एवं सहायता करते रहें। आपको मानसिक शांति मिलेगी तथा समय का सदुपयोग होगा। दूसरों को सुख देकर आप स्वयं भी सुखी होंगे।

(स) वृद्धावस्था को श्राप न समझें वरन् खुशी-खुशी इसका स्वागत करें। अपनी दिनचर्या में थोड़ा परिवर्तन कर

योजनाबद्ध तरीके से जीवन की इस महत्वपूर्ण गरिमामय अवस्था का आनन्द उठाया जा सकता है। हमारे देश में वरिष्ठ नागरिक अभी भी महत्वपूर्ण एवं सम्माननीय माने जाते हैं, क्योंकि उनके पास अनुभवों का भंडार होता है जिससे वे अगली पीढ़ियों का विभिन्न प्रकार से मार्गदर्शन कर सकते हैं। रूचिकर साहित्य का अध्ययन करें एवं अपनी रुचियों को बढ़ावा देकर समय का सदुपयोग करें। सामाजिक सेवा के कार्यों में राष्ट्र की गौरवशाली परंपरा एवं संस्कृति से अवगत कराने का प्रयास करते रहें।

एक नवीनतम सर्वे के अनुसार कोरोना काल में बुजुर्गो के साथ अपराधों में वृद्धि हुई है। अतः विशेष सावधानी बरतें।

कैलाशनाथ गुप्त

कार्यकारी संपादकः जायसवाल जागृति, DIA/115 जनकपुरी, नई दिल्ली-110058 मो. नं.: 8882019312

अपने पैरों को मजबूत रखें

बुढ़ापे में हमारे पैर हमेशा मजबूत रहने चाहिए। उम्र बढ़ने पर हमें बाल गिरने या खाल लटकने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। **अमेरिका की पत्रिका 'प्रिवेंशन' द्वारा अधिक उम्र की पहचान में मजबूत पैरों को सबसे महत्वपूर्ण और अनिवार्य संकेतों में सबसे ऊपर स्थान दिया गया है।** यदि आप दो सप्ताह तक अपने पैरों को नहीं हिलाते, तो आपके पैरों की शक्ति 10 वर्ष कम हो जाएगी।

डेनमार्क के कोपेनहेगन विश्वविद्यालय द्वारा किये गये एक अध्ययन से पता चला है कि बूढ़े और जवान सभी में दो सप्ताह तक निष्क्रिय रहने पर पैरों की माँसपेशियाँ एक तिहाई तक कमजोर हो जाती हैं, जो उम्र में 20-30 वर्ष की कमी के बराबर है। जब हमारे पैरों की माँसपेशियाँ कमजोर होती हैं, तो उनको वापस प्राप्त करने में बहुत समय लगता है, भले ही हम बाद में व्यायाम आदि करते रहें। इसलिए व्यायाम करना, जैसे टहलना बहुत महत्वपूर्ण है।

हमारे शरीर का सारा वजन पैरों पर आता है। हमारे पैर खम्भों की तरह होते हैं, जो मानव शरीर का सारा बोझ उठाते हैं। रोचक बात यह है कि एक व्यक्ति की हड्डियों का 50 प्रतिशत और माँसपेशियाँ का भी 50 प्रतिशत भाग केवल दो पैरों में होता है। जोड़ों और हड्डियों में सबसे बड़े और मजबूत भी पैरों में होते हैं।

मजबूत हड्डियाँ, मजबूत माँसपेशियाँ और लचीले जोड़ एक **'लौह त्रिकोण'** बनाते हैं, जिन पर शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बोझ पड़ता है। 70 प्रतिशत मानव गतिविधियाँ और ऊर्जा का क्षय दोनों पैरों द्वारा ही किया जाता है।

क्या आप जानते हैं?

जब कोई व्यक्ति जवान होता है, तो उसकी जाँघों में इतनी शक्ति होती है कि वे एक छोटी कार को भी उठा सकती हैं। पैर शरीर के संचालन का केन्द्र होता है। मानव शरीर की 50 प्रतिशत नाड़ियाँ और 50 प्रतिशत रक्तकोष पैरों में होते हैं और 50 प्रतिशत रक्त उनमें होकर बहता है। यह शरीर को जोड़ने वाला सबसे बड़ा संचार नेटवर्क है।

यदि पैर स्वस्थ हैं, तो ही रक्त का प्रवाह भली प्रकार से होता है, इसलिए जिन लोगों के पैरों की माँसपेशियाँ मजबूत होती हैं, उनका हृदय निश्चित रूप से मजबूत होता है।

उम्र का बढ़ना पैरों से ऊपर की ओर चलता है। जब मनुष्य की उम्र बढ़ती है तो मस्तिष्क और पैरों के बीच निर्देशों के संचार की गति और शुद्धता जवानी की तुलना में कम हो जाती है। इसके अतिरिक्त तथाकथित हड्डी की खाद कैल्शियम की मात्रा समय के साथ कम हो जाती है, जिससे उम्र बढ़ने पर व्यक्ति में हड्डी का फ्रैक्चर होने का खतरा बढ़ जाता है।

अधिक उम्र के लोगों में फ्रैक्चरों से अनेक समस्यायें सरलता से पैदा हो जाती हैं, विशेष रूप से घातक बीमारियाँ जैसे मस्तिष्क में थक्का जमना। क्या आप जानते हैं कि अधिक उम्र के 15 प्रतिशत रोगी जाँघ की हड्डी टूटने के एक वर्ष के अन्दर मर जाते हैं?

पैरों का व्यायाम करने में कभी देरी नहीं होती। 60 वर्ष की उम्र के बाद भी आप इसे प्रारम्भ कर सकते हैं। हालांकि समय के साथ हमारे पैरों की उम्र भी बढ़ती है, लेकिन पैरों का व्यायाम जीवन भर करते रहना चाहिए। केवल अपने पैरों को मजबूत करके ही हम अपनी उम्र अधिक तेजी से बढ़ने से रोक सकते हैं।

इसलिए कृपया प्रतिदिन कम से कम 30-40 मिनट चलिए ताकि आपके पैरों का पर्याप्त व्यायाम हो जाये और आपके पैरों की माँसपेशियाँ स्वस्थ रहें।

संकलन' महेन्द्र जायसवाल

बहुजन चेतना के नायक : चन्द्रिका प्रसाद 'जिज्ञासु'

जिज्ञासु जी ने सबसे पहले 'हिन्दू समाज सुधार' नामक संस्था बनाई और उसके माध्यम से वर्णव्यवस्था, जातिभेद, छुआछूत और ब्राह्मणवाद के खिलाफ जनजागरण किया।

हिंदी पट्टी में जिस समय स्वामी अछूतानंद 'हरिहर' दलितों में **'आदि हिंदू'** आंदोलन चला रहे थे, उसी समय लखनऊ के एक पिछड़ी जाति के लेखक **चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु** स्वामीजी से प्रभावित होकर उनके आंदोलन से जुड़ गए थे। जिज्ञासु जी का सबसे बड़ा काम यह था कि उन्होंने दलितों और पिछड़ों को एक सामाजिक मंच पर लाने के लिए 'बहुजन' की अवधारणा दी। जिज्ञासु ने ही **हिंदी में पहले पहल कबीर, रैदास, फुले, पेरियार और अम्बेडकर के क्रांतिकारी विचारों से जनता को परिचित कराया। आम्बेड़कर की कई महत्वपूर्ण किताबों का उन्होंने अंग्रेजी से हिंदीं में अनुवाद करवाया। सबसे बड़ी बात तो यह कि उन्होंने बहुजन के विचारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए खुद अपना प्रेस आरंभ किया। कई सामाजिक संगठनों की स्थापना की और 100 से ज्यादा किताबें लिखीं।**

जिज्ञासु ने **आदि हिंदू आंदोलन** के साथ रहकर, जगह-जगह घूमकर और पीड़ितजनों से मिलकर सामंतवादी और ब्राह्मणवादी व्यवस्था की जो नंगी तस्वीर देखी थी, उसने उनमें जबर्दस्त परिवर्तन किया था। **वहीं से उनमें वर्णव्यवस्था और जातिभेद के खिलाफ समतामूलक समाज के निर्माण के संकल्प ने जन्म लिया। आदि हिंदू आंदोलन का प्रभाव इतना जबरदस्त था कि उसने पिछड़ी जातियों को भी उद्वेलित कर दिया था। स्वयं जिज्ञासु पिछड़ी जाति (कलवार) से थे।**

पिछड़ी जातियों के कुछ और नेता भी इस आंदोलन से जुड़ गए थे, जिनमें **शिवदयाल सिंह चौरसिया,** रामचरन निषाद और चौधरी श्यामलाल धोबी उस समय के प्रमुख व्यक्ति थे। जिज्ञासु इनमें सबसे प्रखर चिंतक और लेखक थे।

चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु

डॉ. अम्बेडकर की अध्यक्षता में उत्तर भारत का पहला **'डिप्रेस्ड क्लाससेज फेडरेशन'** 1928 में नागपुर में बना था। इसमें उत्तर प्रदेश से राय साहेब रामचरन निषाद को अध्यक्ष, शिवदयाल चौरसिया को महामंत्री और जिज्ञासु को **संयोजक** बनाया गया था, जबकि संरक्षक बोधानंद को बनाया गया था। **बोधानंद बंगाली ब्राह्मण थे, पर ब्राह्मणवाद और वर्णव्यवस्था के विरोधी थे,** दलित वर्गो के लिए काम करते थे और बाद में बुद्ध शरण में जाकर **भदंत बोधानंद महास्थविर** के नाम से प्रसिद्ध हुए थे। जिज्ञासु उन्हें अपना गुरु मानते थे। बोधानंद जी स्वंय लिखने में असमर्थ थे, क्योंकि चोट लगने से उनका अंगूठा खराब हो गया था। अतः वह बोलकर जिज्ञासु से ही लिखवाते थे। उनके **'मूल भारतवासी और आर्य'** ग्रंथ को भी जिज्ञासु ने ही लिखा था। इसी ग्रन्थ से प्रेरित होकर 1933 में जिज्ञासु जी ने 'भारत के आदि निवासी' नाम से एक वृहद् ग्रंथ लिखा था।

जिज्ञासु जी ने सबसे पहले **'हिंदू समाज सुधार'** नामक संस्था बनाई और उसके माध्यम से वर्णव्यवस्था, जाति भेद, छुआछूत और ब्राह्मणवाद के खिलाफ जनजागरण किया। इसी संस्था से उन्होंने अपनी कई पुस्तकें प्रकाशित कीं, जिनमें **'ईश्वर और उनके गुड्डे'**, **'रावण और उसकी लंका'** आदि प्रमुख है। उनका सबसे बड़ा काम यह था कि उन्होंने दलितों और पिछड़ों को एक सामाजिक मंच पर लाने के लिए **'बहुजन' की अवधारणा दी।** ब्राह्मणवाद ने भारत के करोड़ों मूल निवासी मनुष्यों को प्रगति और विकास के अधिकारों से वंचित करके गुलाम बनाकर रखा हुआ है। इ**सलिए वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ब्राह्मणवाद के खिलाफ लड़ाई भी अछूत और पिछड़ी जातियों को मिलकर लड़नी होगी।** बुद्ध की शिक्षा उन्हें अपने गुरुदेव भदंत बोधानंद से मिली थी, जहां वह बुद्ध के **'बहुजन सुखाय' और 'बहुजन हिताय'** की अवधारणा से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। अतः दलित पिछड़े वर्गो के बहुसंख्यक लोगों के हित में उन्होंने 1960 में **'बहुजन कल्याण प्रकाशन'** की स्थापना की। शीघ्र ही उन्हें अपने प्रेस की जरूरत भी महसूस हुई, क्योंकि लखनऊ के हिंदू प्रेस ब्राह्मणवाद के खिलाफ उनकी पुस्तकें छापने में रुचि नहीं लेते थे, अतः कुछ साल बाद

उन्होंने अपनी प्रेस भी लगा लिया, और नाम रखा **'समाज सेवा प्रेस'**।

जिज्ञासुजी ने लगभग 40 साल तक हिंदी क्षेत्र में वर्णव्यवस्था, जातिभेद और ब्राह्मणवाद के विरूद्ध जनजागरण किया। सौ से भी अधिक पुस्तकों के वे लेखक थे। **समाज के सबसे निचले तबके ने उन्हीं की वजह से पहली दफा जाना कि उनका भी कोई इतिहास है और वे इस देश के मूलनिवासी हैं।** जिज्ञासु जी ने ही अम्बेडकर, महात्मा फुले, रामास्वामी नायकर पेरियार और रैदास-कबीर के क्रांतिकारी विचारों से हिंदी जनता को परिचित कराया। **जिस तरह उन्होंने कबीर और रैदास को रामानंद के चोंचले और वैष्णवी भक्ति के रंग से बाहर निकाला, वह दलितों के लिए बिल्कुल नया ज्ञान था। उनकी 1971 में प्रकाशित 'बाबा साहेब का जीवन संघर्ष' वह पुस्तक थी, जिसे पढ़कर मेरी पीढ़ी के लोगों ने पहली बार जाना था कि कोई डॉ. अम्बेडकर थे, जिन्होंने अछूतों को गुलामी का एहसास कराया था और उनकी मुक्ति का पहला संस्थान था, जिसने बहुजन साहित्य के प्रकाशन को ही अपना लक्ष्य बनाया था।**

उन्होंने डॉ. अम्बेडकर की जीवनी के साथ-साथ उनकी कई अंग्रेजी पुस्तकों को भी ढूंढ ढूंढकर विशेषज्ञ विद्वानों से उनके अनुवाद कराकर प्रकाशित कराया था, जिनमें **'शूद्रों की खोज', अछूत कौन और कैसे'**, 'जातिभेद का उच्छेद, 'नागपुर का भाषण', 'रानाडे, गांधी और जिन्ना', 'भारत में जातिवाद', 'कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया', 'अछूतों की विमुक्ति और गांधीजी' तथा 'भारत का विभाजन अथवा पाकिस्तान' प्रमुख हैं। उन्होंने 'प्रॉबलम ऑफ रूपी' का भी हिंदी अनुवाद करा लिया था, पर उनकी आकस्मिक मृत्यु के कारण उसका प्रकाशन नहीं हो सका था।

आज डॉ. अम्बेडकर का सम्पूर्ण वांङ्मय भारत सरकार प्रकाशित कर रही है, पर हिंदी में यह काम जिज्ञासुजी साठ के दशक में ही कर चुके थे। यही नहीं, जिन पेरियार रामास्वामी नायकर को साठ के दशक में हिंदी वाले, विशेषकर बहुजन समाज के लोग जानते तक न थे, उन्हें प्रकाश में लाने का काम भी जिज्ञासु ने ही किया था। 1968 में पेरियार ईवी रामास्वामी नायकर अल्पसंख्यक सम्मेलन में भाग लेने लखनऊ गए थे। उस समय उनकी चार पुस्तकें बहुत चर्चित थीं, जिनमें एक थी 'ए ट्रू रीडिंग ऑफ रामायना' और अन्य तीन पुस्तकों में उनकी जीवनी, फिलॉसफी और सामाजिक क्रान्ति की किताबें थीं इनमें 'ए ट्रू रीडिंग ऑफ रामायना' का हिंदी अनुवाद 'सच्ची रामायण' नाम से ललई सिंह यादव ने किया था। तीनों पुस्तकों को जिज्ञासु ने अनुवाद कराकर एक ही जिल्द में 'पेरियार ईवी रामास्वामी नायकर' नाम से 1970 में प्रकाशित किया था।

पूना पैक्ट के बाद जब गांधीजी लखनऊ आए तो जिज्ञासु और **'बैकवर्ड क्लासेज लीग'** के कुछ नेता बोधानंदजी के नेतृत्व में उनसे मिले और उन्हें एक एक ज्ञापन देकर पिछड़े वर्गो के अधिकारों की मांग की। जिज्ञासु ने एक जगह लिखा है कि **गांधीजी मांगों को पढ़कर अवाक रह गए और उन्होंने समझाया कि इससे आजादी की लड़ाई पर असर पड़ेगा, आप लोग फिलहाल आजादी के संग्राम में हमारा साथ दें। आजादी मिलने के बाद हमारा पहला काम दबी पिछड़ी जातियों को समान सामाजिक स्तर पर लाना होगा।** गांधीजी के आश्वासन पर 'बैकवर्ड क्लासेज लीग' के नेता और कार्यकर्ता कांग्रेस के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। गांधीजी यही चाहते थे। दलित उनके चंगुल में फंसे नहीं थे, पर पिछड़े वर्ग के लोग फंस गए थे। अतः पिछड़ा आंदोलन किसी लक्ष्य पर पहुंचने से पहले ही बिखर गया। आजादी मिलने के बाद पिछड़े वर्ग के जो जुझारू नेता थे, उन्हें काग्रेंस ने लॉलीपॉप देकर खरीद लिया। **इनमें शिवदयाल चौरसिया को काका कालेलकर आयोग का अध्यक्ष और राज्य सभा का सदस्य बना दिया गया और भी कुछ लोगों को राज्य सभा और विधान परिषद में भेजा गया। लेकिन जिज्ञासु जी सत्ता के इस मायाजाल में बिल्कुल नहीं फंसे।**

चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु एक ऐसे सामाजिक तत्ववेत्ता थे, जिन्हें छठे और सातवें दशक में हिंदी चिंतन में नए समाज विमर्श और भारतीय मौलिक समाजवाद को स्थापित करने का श्रेय जाता है। यह हिंदी साहित्य में नई धारा थी। भले ही ब्राह्मणवादियों ने उसे समानांतर धारा के रूप में भी स्वीकार नहीं किया, पर वे निस्संदेह आधुनिक हिंदी दलित साहित्य के पितामह थे।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णजाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

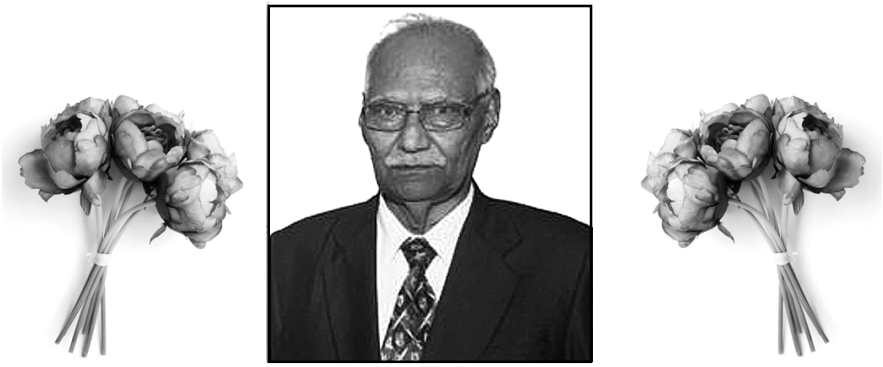

21-07-1938—25-12-2020

इलाहाबाद के यशस्वी समाज-सेवी श्री यशवन्त कुमार जायसवाल नहीं रहे।

भाव विह्वल हृदय से सूचित करना पड़ रहा है कि विगत 25 दिसम्बर 2020 को दिल्ली के वैशाली स्थित मैक्स हास्पिटल में **श्री यशवंत जायसवाल जी** ने कोरोना वायरस से संक्रमित होने के फलस्वरूप अंतिम साँसें लीं, जिससे उनका समस्त परिवार, इष्टमित्र व निकट सम्बन्धी स्तब्ध व हतप्रभ रह गए।

वे मेरे प्रिय समधी थे। मेरे बड़े पुत्र चिरंजीव **आलोक जायसवाल** का विवाह उनकी आयुष्मती सुपुत्री **शालिनी** से हुआ था। यशवंत जी हँसमुख, सहज, मृदुभाषी व मुक्त स्वभाव के महानुभाव थे। अतः उनसे मिलकर वार्तालाप करना अपने-आप में हमेशा एक सुखद अनुभव हुआ करता था। मिलनसार प्रकृति के श्री यशंवत कुमार जी कों इलाहाबाद में जाति जगत के लोग समाज के **चलते-फिरते शब्द-कोष** या **Encyclopaedia कहा** करते थे। उनका जन्म इलाहाबाद में हुआ था। पिता **स्व. श्री गया प्रसाद जायसवाल** एवं माता **स्व. गोमती देवी** के सबसे बड़े सुपुत्र थे। यशवंत जी ने कुछ समय के लिए भारतीय सेना के कोर सिग्नल विभाग में सेवाए प्रदान की। तत्पश्चात् उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के अंतर्गत रानीगंज में wine-contractor के व्यवसाय में संलग्न हुए। कुछ वर्ष पूर्व वे इलाहाबाद से अपने पुत्र **विशाल जायसवाल** के साथ सपरिवार गाजियाबाद के इंदिरापुरम में आ गए थे। क्रूर कोरोना ने उन्हें हमसे अचानक और असमय छीन लिया, जिससे उनके परिवार सहित हम सब शोकाकुल एवं आहत हैं।

परम पिता परमेश्वर उनकी स्वर्गस्थ आत्मा को चिरंतन शाँति प्रदान करे व उनके शोक-संतप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

उनके पुत्र चि. विशाल जायसवाल ने उन्हें मुखाग्नि दी तथा 6 जनवरी 2021 को ब्रह्मभोज सहित तेरहवीं की सभी रस्में विधिवत् सम्पन्न हुई। दिवंगत यशवंत कुमार जी के आर्शीवाद की शीतल छाया उनके परिवार पर सदैव बनी रहे, इन्हीं शब्दों के साथ उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धाँजलि। जायसवाल जागृति परिवार की ओर से हार्दिक समवेदना।

शोकाकुल परिवार
श्रीमती मायादेवी जायसवाल (धर्मपत्नी)
दीपेन्द्र-आँचल (पुत्र-पुत्रवधू)
विशाल-सबीना (पुत्र-पुत्रवधू)
शालिनी-आलोक (पुत्री-जामाता)
गालिनी किंशुक (पुत्री-जामाता)
आयुषी, सौम्या, पाखी, अवनी, हन्नू (पौत्रियाँ)

राजा राम जायसवाल
सम्पादक, जायसवाल जागृति

शारदीय नवरात्र के प्रसंग में

हिंगलाज मंदिर (नानी मन्दिर), पाकिस्तान

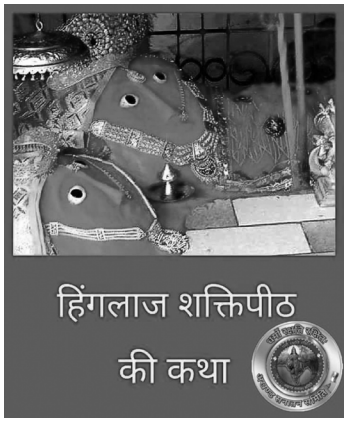

पाकिस्तान के लसबेला से अरब सागर से छूकर निकलता 150 किमी तक फैला रेगिस्तान। बगल में 1000 फीट ऊँचे रेतीले पहाड़ों से गुजरती नदी। बाई ओर दुनिया का सबसे विशाल मड ज्वालामुखी। जंगलों के बीच दूर तक पसरा सन्नाटा और इस सन्नाटे के बीच से आती आवाज **'जय माता दी'**। इन्हीं रास्तों में है धरती पर देवी माता का पहला स्थान माने जानेवाले पाकिस्तान स्थित **एकमात्र शक्तिपीठ 'हिंगलाज मंदिर'**।

अमरनाथ जी से ज्यादा कठिन है हिंगलाज की यात्रा...

करीब 2 लाख साल पुराने इस मंदिर में पिछले जन्मों के पाप भी नष्ट हो जाते हैं। इस मंदिर में नवरात्रि में गरबा से लेकर कन्या भोज तक सब उत्सव मनाए जाते हैं।

देवी के 51 शक्तिपीठों में से एक हिंगलाज मंदिर में नवरात्रि का जश्न करीब-करीब भारत जैसा ही होता है। कई बार इस बात का अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है कि ये मंदिर पाक में है या भारत में।

- हिंगलाज मंदिर जिस स्थान में है वह पाकिस्तान के सबसे बड़े हिंदू बाहुल्य इलाकों में से एक है। पूरे नवरात्रि यहां 3 किमी में मेला लगता है। दर्शन के लिए आनेवाली महिलाएं गरबा नृत्य करती हैं। पूजा-हवन होता है। कन्या खिलाई जाती हैं। माँ के भजनों की गूँज दूर-दूर तक सुनाई देती है।

- कुल मिलाकर हर वह आस्था देखने को मिलती है जो भारत में नवरात्रि पूजा के दौरान होती है। नवरात्रि में ही हो जाती है साल भर के खर्चे के बराबर कमाई।

- हिंगलाज मंदिर आनेवाले भक्तों की संख्या का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि नवरात्रि के 9 दिनों में यहाँ के लोग अपने साल भर के खर्चे के बराबर कमा लेते हैं।

- मंदिर के प्रमुख पुजारी **महाराज श्री गोपाल गिरी जी** का कहना है कि नवरात्रि के दौरान भी मंदिर में हिंदू-मुस्लिम का कोई फर्क नहीं दिखता है। कई बार पुजारी-सेवक मुस्लिम टोपी पहने दिखते हैं। तो वहीं मुस्लिम भाई देवी माता की पूजा के दौरान साथ खड़े मिलते हैं। इनमें से अधिकतर बलूचिस्तान-सिंध के होते हैं।

- हर साल पड़ने वाले 2 नवरात्रों में यहाँ सबसे ज्यादा भीड़ होती है। करीब 10 से 25 हजार भक्त रोज माता के दर्शन करने हिंगलाज आते हैं। इनमें अमेरिका, ब्रिटेन, बांग्लादेश और पाकिस्तान के आस-पास के देश प्रमुख हैं।

- चूंकि, हिंगलाज मंदिर को मुस्लिम **श्नानी बीबी की हज** या **पीरगाह** के तौर पर मानते हैं, इसलिए पीरगाह पर अफगानिस्तान, इजिप्ट और ईरान जैसे देशों के लोग भी आते हैं। शिवजी की पत्नी **माता सती का सिर** कटकर गिरने से बना हिंगलाज।

हिन्दू धर्म, शास्त्रों और पुराणों के मुताबिक, सती के पिता राजा दक्ष अपनी बेटी का विवाह भगवान शंकर से होने से खुश नहीं थे। क्रोधित दक्ष ने बेटी का बहुत अपमान किया था। इससे दुखी सती ने खुद को हवनकुंड में जला डाला। इसे देखकर शंकर के गण ने राजा दक्ष का वध कर दिया था। घटना की खबर पाते ही शंकरजी दक्ष के घर पहुँचे। फिर सती के शव को कंधे पर उठाकर क्रोध में नृत्य करने लगे। शंकरजी को शांत करने के लिए भगवान विष्णु ने चक्र से सती के 51 टुकड़े कर दिए। ये टुकड़े जहाँ-जहाँ गिरे, उन 51 जगहों को ही **देवी शक्तिपीठ** के नाम से जाना जाता है। टुकड़ों में से सती के शरीर का पहला हिस्सा यानी सिर **'किर्थर पहाड़ी'** पर गिरा, जिसे आज **हिंगलाज** के नाम से जानते हैं। इसी पहले हिस्से यानी मस्तिष्क के चलते पाकिस्तान के **हिंगलाज मंदिर को धरती पर माता का पहला स्थान कहते हैं।**

सौजन्य: **एडवोकेट शंकरलाल राय, भोपाल**

अपने हिस्से की हमें भी अब इमरती चाहिए

कोख में ही कत्ल होने से बची कलियाँ हैं हम,
खिल गयी हैं इस जगत में झेलकर जुल्मों सितम,
मांगती अधिकार स्त्री भीख नहीं चाहिए।
अपने हिस्से की हमें भी अब इमरती चाहिए।

पितृसत्ता ने इशारों पर नचाई स्त्री,
देह की ही कोठरी में बंद कर दी स्त्री,
पितृसत्ता की नौटंकी बंद होनी चाहिए,
अपने हिस्से की हमें भी अब इमरती चाहिए।

है पुरुष को ये अहम नीच स्त्री उच्च हम,
साथ-साथ फिर भला कैसे बढ़ा सकती कदम,
'आइटम' कहते हुए लज्जा तो आनी चाहिए,
अपने हिस्से की हमें भी अब इमरती चाहिए।

चौखटों को पारकर आई है जो भी स्त्री,
पितृ सत्ता को नहीं भायी है ऐसी स्त्री,
चीरहरण की भुजायें अब तो कटनी चाहिए,
अपने हिस्से की हमें भी अब इमरती चाहिए।

तुम जलाकर देख लो सीता नहीं जलती कोई,
न अहिल्या न शकुंतला छल से ही डरती कोई,
स्त्री को चैन की अब श्वांस मिलनी चाहिए,
अपने हिस्से की हमें भी अब इमरती चाहिए।

-डॉ. शिखा

विद्रोही सीता की जय

त्रेता में राम दरबार सजा, थी आज परीक्षा सीता की,
तुम करो प्रमाणित निज शुचिता थी राजाज्ञा रघुवर की,
वाल्मीकि संग खड़ी सिया के मुख पर क्षोभ के भाव दिखे,
सभा उपस्थित जन-जन संग श्रीराम लखे ज्यों चित्र लिखे,
बोली सीता-श्रीराम सुनो अब और परीक्षा ना दूँगी,
नारी जाति सम्मान हित अपवाद स्वयं मैं सह लूंगी।

प्रभु आप निभाएं राजधर्म मैं नारी धर्म निभाऊँगी,
आज आपकी आज्ञा का पालन न मैं कर पाऊँगी,
स्वाभिमानी नारी बन सब राजदंड मैं भोगूँगी,
नारी जाति सम्मान हित अपवाद स्वयं मैं सह लूंगी।

जो अग्नि परीक्षा पहले दी उसका भी मुझको खेद है,
ये कुटिल आयोजन बढ़वाते नर-नारी में भेद है,
नारी विरुद्ध अन्याय पर विद्रोह की भाषा बोलूँगी,
नारी जाति सम्मान हित अपवाद स्वयं मैं सह लूंगी।

था नीच अधम पापी रावण जिसने था मेरा हरण किया,
पर अग्नि परीक्षा ली राजन क्यों आपने ये अपराध किया?
हर नारी मुख से हर युग में ये प्रश्न आपसे पूछूँगी,
नारी जाति सम्मान हित अपवाद स्वयं मैं सह लूंगी।

नारी का यूँ अपमान न हो इसलिए त्याग रानीपद,
मैंने छोड़ा साकेत यूँ ही ना घटे कभी नारी का कद,
नारी का मान बढ़ाने को सब मौन मैं अपने तोड़ूँगी,
नारी जाति सम्मान हित अपवाद स्वयं मैं सह लूँगी।

अग्नि परीक्षा शस्त्र लगा पुरुषों के हाथ मेरे कारण,
भावुकता में ये भूल हुई पाप हुआ मुझसे दारुण,
मत झुकना तुम अन्याय समक्ष सन्देश सभी को ये दूँगी,
नारी जाति सम्मान हित अपवाद स्वयं मैं सह लूंगी।

इस महाभयंकर भूल की मैं दूँगी खुद को अब यही सजा,
ये भूतल फटे अभी इस क्षण जाऊं इसमें अविलम्ब समा,
अपराध किया जो मैंने ही दंड मैं उसका झेलूंगी,
नारी जाति सम्मान हित अपवाद स्वयं मैं सह लूंगी।

पुत्री सीता की व्यथा देख फट गयी धरा माँ की छाती,
बोली ये जग है पुरुषों का नारी उनको कब है भाती?
आ पुत्री मेरी गोद में तू तेरे सब कष्ट मिटा दूँगी,
नारी जाति सम्मान हित अपवाद स्वयं मैं सह लूंगी।

सीता के नयनों में उस क्षण अश्रु नहीं अंगारे थे,
विद्रोही सीता रूप देख उर काँप रहे वहाँ सारे थे,
फिर समा गयी सीता कहकर ये अत्याचार न भूलूँगी,
नारी जाति सम्मान हित अपवाद स्वयं मैं सह लूंगी।

नारी धीरज को मत परखो सीता ने ये सन्देश दिया,
सन्देश यही एक देने को निज प्राणों का उत्सर्ग किया,
'विद्राही सीता की जय' लिख परतें इतिहास की खोलूँगी,
जय सीता माँ की बोलूंगी... जय सीता माँ की बोलूंगी।

–डॉ. शिखा

बुद्धिजीवी जी

हमारे यहाँ बुद्धिजीवियों का घोर अभाव है। जितनी संख्या में उनकी आवश्यकता है-उतनी संख्या में वे सुलभ नहीं है। फिर भी बुद्धिजीवी हैं तो सही। ये लोग अपनी बुद्धि से ही जिन्दा हैं। इसी के बल पर कमाते-खाते हैं। आय का प्रमुख स्रोत उनकी बुद्धि ही तो है। इस मामले में मुझे फक्र है कि मेरे मुहल्ले को एक अदद बुद्धिजीवी मिला हुआ है। हालाँकि वे पूर्ण रूप से बौद्धिकता पर आधारित नहीं है, फिर भी 'नहीं होने से अच्छा है, काना मामा ही सही' वाली कहावत चरितार्थ है। 'अंधों में काना राजा' भी चरितार्थ होती है।

एक बार मोहल्ले में दो पड़ोसियों के बीच फसाद हो गया। वे गंभीर मुद्रा धारण किए युद्ध स्थल पर आए और सारा मंजर जानने के बाद लगे बौद्धिकता बघारने- 'मेरी समझ में नहीं आता कि आप लोग एक मामूली बात पर झगड़ पड़े। सार्वजनिक नल है इसमें एक-एक करके पानी भर लीजिए, आप झगड़ते क्यों है?'

एक पड़ोसी बोला-'मेरा नम्बर था, इन महाशय ने आ लगाई अपनी बाल्टी बीच में।'

दूसरा बोला-'हद होती है, चार बाल्टी ले जा चुके हैं, मैंने कहा मुझे भरने दीजिए, कहते हैं घर का पूरा पानी भरके ही नल छोड़ूँगा।'

बुद्धिजीवी जी ने आँखे चौड़ी की, बात को और गंभीरता से लिया और पहले पड़ोसी से बोला-'क्यों श्रीमान् जी, आपकी पत्नी कहाँ गई?'

वाहियात प्रश्न से दोनों पड़ोसी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। तभी तमाशबीनों में से एक व्यक्ति बोला- 'वे घर में बैठी बालों को शैम्पू से धो रही हैं।' भीड़ ने चुटकी ली। बुद्धिजीवी जी ने वातावरण को और गंभीर किया- 'आप पानी कितने दिनों से भर रहे हैं?' पड़ोसी फिर भी पहेली को नहीं समझ पाया। वे फिर थोड़ी ऊँची आवाज में बोले- 'मैंने दो प्रश्न किए, आपने एक का भी जवाब नहीं दिया। आप मेरे साथ अपने घर चलिए।'

लाचार पड़ोसी उन्हें अपने घर ले आए। बुद्धिजीवी जी ने इत्मीनान से आसन ग्रहण किया और उनकी पत्नी को बुलाकर बोले- 'भाभी जी, आपके पतिदेव घर में पानी भरते हैं और आप बालों को सँवारती हैं। यह बताइए इससे आपके सामने वाले पड़ोसी के पेट में दर्द क्यों होता है?'

इस एकदम बदले प्रश्न से पड़ोसी चिहुँक पड़ा- 'आप सही फरमा रहे हैं, वह रोज मेरे से परेशान रहता है। हमें अच्छी तरह रहते नहीं देख सकता। बल्कि मुझे बहकाता है कि पानी क्यों भरता हूँ, मेरे पानी भरने से उसे भी पानी भरना पड़ता है। असली लड़ाई की जड़ तो ये है कि मैं पानी भरना बन्द करूँ।'

बुद्धिजीवी जी ने पैंतरा फेंका- 'आप पानी भरना बन्द कर देंगे तो घर की व्यवस्था गड़बड़ा जाएगी, बच्चों की देखभाल कौन करेगा और यदि आपकी पत्नी के बाल उलझे रह गए और उसी समय कोई मित्र अथवा परिजन मेहमान आपके घर आ धमका तो बताइए उस समय आप अपना गोलमटोल चेहरा कैसे दिखा पाएंगे?'

पड़ोसी बुद्धिजीवी जी के अद्भुत प्रश्न पर निरुत्तर हो गया। वे बोले- 'आप चुप क्यों हैं?'

पड़ोसी बस इतना ही बोल पाया- 'विमला, चाय तुम बनाओगी या मैं बना लाऊँ?'

जवाब विमला जी ने नहीं, बुद्धिजीवी जी ने दिया- 'श्रीमान् जी आप ठहरे निपट मूर्ख। वे खाना बनाएंगी या चाय। आप चाय बनाइए, वे खाने की तैयारी करेंगी'

विमला जी को जैसे गलती का अहसास हुआ हो, बोली- 'हाँ.....हाँ,.....मैं खाना बनाती हूँ। भाई साहब आप भी तो खाना खाएंगे?'

बुद्धिजीवी जी बोले- 'अब आप मुझे पता है बिना खाना खाए जाने नहीं देंगे।'

पड़ोसी ने दाँत पीसे और बोला- 'हाँ, अब तो आपको खाना खाकर ही जाना होगा। मैं चाय बनाता हूँ, तुम खाना बनाओ।'

दोनों पति-पत्नी रसोईघर में जाकर एक-दूसरे को देखकर रो पड़े। बुद्धिजीवी जी उनकी बैठक में अखबार चाटते रहे। चाय बनी तो चाय पी ली और खाना बन गया तो खाना खाकर डकार लेने लगे। जब बुद्धिजीवी जी वही पलंग पर पसरने लगे तो पत्नी ने ही टोका- 'आप भाई साहब, आराम यहाँ कैसे कर पाएंगे, हम दोनों तो ऑफिस जाने वाले है। बच्चे स्कूल गए हुए हैं।'

बुद्धिजीवी जी तो आशुकवि थे, बोले- 'आप दफ्तर जाइए, मैं बच्चों के आने पर चला जाऊँगा और हाँ सुनिए, मैं उस सामने वाले पड़ोसी पर नजर रखकर देखना चाहता हूँ कि आखिर वह आप लोगों से जलता क्यों है? यह बात समझ में आ गई तो समझ लीजिए मैं आपके रास्ते से काँटा हटा दूँगा।'

–पूरन

कुर्यात् सदा मंगलम्

नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य हैं। बेहतर होगा यदि आप या तो दो मोबाइल नं. दें अथवा एक मोबाइल और एक लैंडलाइन टेलीफोन नम्बर भी अवश्य दें।

वैवाहिकी

नोटः सदस्यों/पाठकों की सुविधा हेतु 'वैवाहिकी' को अंग्रेजी अल्फाबेट्स के क्रम में अर्थात अभिभावकों के नामों के अनुसार (वर्णक्रमानुसार) संकलित/वर्गीकृत किया गया है। मांगलिक एवं सामान्य वर्ग को अलग-अलग शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया गया है।

'वैवाहिकी' शुल्क

प्रत्येक अभिभावक / विज्ञापनदाता से अंतिम पृष्ठ पर ग्राहक / सदस्यता के लिए दर्शाए गए 1500/ रु. के शुल्क में वैवाहिक विज्ञापन के प्रकाशन का शुल्क शामिल है। पत्रिका की एक प्रति उन्हें भेजी जाएगी। सुधी एवं सम्मानित विज्ञापनदाताओं से यह भी आग्रह है कि वे पत्रिका में विज्ञापन के जरिए विवाह तय होने पर मंगल-निधि के रूप में अपनी सामर्थ्य के अनुसार यथेष्ट सहयोग राशि भेजने की कृपा अवश्य करें, क्योंकि इस स्तर की पत्रिका के प्रकाशन पर संस्था को आर्थिक व्यय का भार भी वहन करना पड़ता है।

विवाह सम्बन्ध तय हो जाने पर प्रधान/कार्यकारी संपादक महोदय को सम्बन्धित क्रम संख्या का हवाला देते हुए टेलीफोन अथवा कोरियर द्वारा पत्र भेजकर तुरंत सूचित करें। सदस्यता शुल्क अथवा विज्ञापन की राशि नीचे दिए गए पते पर भेजें। हमारे **AXIS Bank** के **A/C No.** 0150101-00247337 **IFSC-UTIB-0000015** में सीधे जमा कराके हमें तदनुसार सूचित करें। स्मरण रहे, **Net-Banking** द्वारा जमा की गई राशि की रसीद या उसकी प्रतिलिपि सलंग्न करना नितान्त अनिवार्य है।

'विशेष सूचना'

''वैवाहिकी स्तम्भ'' के अंतर्गत 'मांगलिक वर्ग' एवं 'सामान्य वर्ग' के अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग *''तलाकशुदा (Divorcee) विधुर, विधवा आदि अन्य वर्ग''* भी आरम्भ किया गया है। हालांकि हमारी दृढ़ मान्यता है कि परिवारों में यह नौबत किसी भी स्थिति में आनी ही नहीं चाहिए। हर स्थिति में विवाह की पवित्र संस्था का प्रत्येक पक्ष को सम्मान देते हुए उसे बरकरार रखना चाहिए। किंतु देखा गया है कि कहीं मिथ्या दंभ व **Ego** के कारण तो कहीं अन्य अपरिहार्य कारणों से अलगाव प्रत्येक पक्ष के लिए अवश्यम्भावी हो जाता है। अतः जीवन के बिखरे सूत्रों को नए सिरे से पिरोना भी अनिवार्य हो जाता है। इसलिए इस विशेष वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह वर्ग आरंभ किया गया है। यदि कोई सज्जन अपना या लड़के-लड़की का नाम गोपनीय रखना चाहते हैं तो इसकी भी व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे बंधुगण या तो हमसे या फिर संबंधित क्रमांक विशेष के टेलीफोन नम्बर से सम्पर्क कर सकते हैं। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः''। अस्तु।

आजकल समाज का एक बड़ा वर्ग प्रोफेशनल कारणों से विदेशों में स्थायी या अस्थायी रूप से बस गया है। इनकी ओर से भी अपने संतानों के वैवाहिक सम्बन्ध के लिए हमारे पास पूछताछ हो रही है। अतः इस वर्ग विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनिवासी भारतीय **(NRI)** वर्ग स्तंम्भ आरंभ किया गया है।

विशेष सूचनाः जिन वैवाहिक विज्ञापनदाताओं का विज्ञापन पिछले तीन वर्षों से लगातार प्रकाशित किया जा रहा था, उनके वैवाहिक विज्ञापन अब प्रकाशित नहीं किए जा रहे हैं। अतः ऐसे जो भी विज्ञापन-दाता पुनः आगे भी अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित कराने के इच्छुक हैं, वे कृपया हमारे कोषाध्यक्ष श्री माखन चौधरी से तुरंत सम्पर्क करके **M-9911213033/9650998902** *एवं 1500/-रु. का शुल्क अदा करके विज्ञापन पुनः प्रकाशित करवाने का कष्ट करें।*

राशि रेखांकित चेक, रेखांकित बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा ''जायसवाल जागृति'' के नाम से देय होना चाहिए। शुल्क भेजते समय अपना पूरा पता, पिन कोड आदि स्पष्ट लिखें ताकि पत्रिका आपको नियमित रूप से मिलती रहे। विशेषः- जिन सज्जनों को डाक से पत्रिका प्राप्त करने में असुविधा हो रही हो, वे कृपया 200 रु. (दो सौ रुपये) वार्षिक शुल्क अलग से प्रेषित कर कोरियर अथवा ***Regd. Post*** *द्वारा पत्रिका मंगवा सकते हैः-*

-संपादक

(कृपया वैवाहिकी सहयोग के लिए अन्तिम पृष्ठ देखें)

अनिवासी भारतीय (NRI) वर्ग

1. अभिभावक-Anil Kumar Jaiswal (Engineer), Prop. Shubham Builders, H.No. 2708, DLF City, Phase-IV, Gurugram, (Near Galaria Market Shopping Complex), M.9811663284, (0124) 2386815

   पुत्र-Abhimanyu Jaiswal, DOB, 27 January 1994, 5'9", MBA Finance (New York USA) Noridian Healthcare Solution, LIC Compensation Consultant, House: West FARGO, North Dakoota, U.S. Phone: (940) 3909979
2. अभिभावक-डा. देवेन्द्र कुमार जायसवाल (बहरीन के अस्पताल में डॉक्टर) माताजीः प्रीति जायसवाल (बहरीन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की लेक्चरर) फोन न.-91. 9871971380, (+973) 5393228 बहरीन) कोठी **C-**

565 NRI City, Sector Omega-II, Greater Noida, U.P. प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में

पुत्री–नेहा जायसवाल, जन्मतिथि–23-8-1994, 5'2", साफ रंग गेहुँआ, Doing Master in Computer System in Australia (Final Semester).

3. **अभिभावक :** श्री मनोज कुमार गुप्ता, (Sr. Sec. Officer Afcs) 1240/C-5 प्रीत विहार, चाणक्य अपार्टमेंन्ट के सामने आदर्श नगर, नमोदा रोड, जबलपुर-482001 (मध्यप्रदेश), Ph: 09752418123, 8349231125 **पत्र व्यवहार का पता:** श्री श्रीराम जायसवाल Retd SP/CBI, 10 शांति निकेतन, 89, नर्मदा रोड, जबलपुर (म.प्र.)-482001

पुत्र : सोमेश कुमार, 22-4-1991, (5:10 AM, जबलपुर) 5'6", सुन्दर स्मार्ट, B.Tech. MS(CS), मोर्गन स्टेनली में Technical Associate, न्यूयार्क (अमेरिका) पैकेज 1 लाख डॉलर +बोनस।

मांगलिक वर्ग

A1. **अभिभावक :** श्री अनिल कुमार जायसवाल (Retd Judge) गोरखपुर, 215-एन-19, विकास नगर आवासीय कालोनी, खेतान अस्पताल के पीछे तथा झूलेलाल मंदिर के निकट पो. एवं जिला गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)M: 8009243232, 08174987887

पुत्र : आदित्य, 9-1-1986, (गौरखपुर-उ.प्र.) मांगलिक 5'11" गोरा, LLB (दिल्ली), उ.प्र. सिविल जज (न्यायधीश) हेतु सुंदर सुशील गोरी शालीन बधू अपेक्षित।

पुत्री : संजना जायसवाल, 10-5-1988, (गोरखपुर-11.16 दिन में) 5'3" गोरी, MBA (HR) बैंक ऑफ बड़ोदा में आफिसर हेतु सरकारी बैंक प्रतिष्ठित मल्टीनेशनल कं. में अधिकारी पद पर कार्यरत सुयोग्य वर अपेक्षित।

2. **अभिभावक :** श्री बलजीत कुमार जायसवाल 5/सी, एवन कालोनी, नवीन नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)-247001 M: 9412453810

पुत्र : डॉ. कमल जायसवाल (आंशिक मांगलिक), 5'8", 15-9-87, गेहुंआ, B.P.T, MPT (Neuro physiothe rapist नोएडा स्थित Health Care Comp. Pvt में कार्यरत, पैकेज 5 लाख रुपये वार्षिक।

3. **अभिभावक :** मदन लाल जायसवाल, पीठ बाजार, ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249407, (M) 9012654987

पुत्री : ज्योति जायसवाल (मंगली), 14-8-1989 5'4", एम कॉम, बेसिक कम्प्यूटर, दिल्ली।

4 **अभिभावक: राजकिशोर जायसवाल**, A-106/1, Fourth Floor, Joshi Colony, I.P. Extension, Delhi-110092, Mob-9717546924, 9810950426

पुत्री (1)- रीतू जायसवाल (मांगलिक) 11-8-1990, 4'9", colour Normal, B.com (Hons) CA (Inter)

पुत्री (2)- अल्का जायसवाल (आंशिक मांगलिक) 2-10-1992, 4'9", colour wheatish, B.Com (Hons), CA (Foundation)

5. **अभिभावक- श्रीमती अन्नपूर्णा गुप्ता पत्नी स्व. श्री संतोष कुमार गुप्ता**, म. नं. 1306, गली नं. 23, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, वैस्ट करावल नगर, दिल्ली-110094, M.-9818289471, 011-22933951

पुत्री- सृष्टि (मांगलिक), जन्म 30-9-1989, जन्म समय शाम 6:00 बजे दिल्ली में, 4'10" गोरी, बी.ए., मास्टर डिग्री मॉश कमनिकेशन, रेडियो, टी.वी. जनर्लिज्म डिप्लौमा, सर्विस Asst. Managar Marketing, Salary 20,000 P.M.

6. **अभिभावक: विजयकुमार जायसवाल**-टिम्बर मर्चेन्ट, सी-94/1, चन्द्रपुरी, चांदबाग, भजनपुरा रेडलाइट के पास, दिल्ली-110094 फोन नं. 09999285302

पुत्री-मेघा, (मांगलिक) जन्मतिथि-04 अगस्त 1989, 7 बजे सायं (दिल्ली), साफ रंग, 5 फिट 2 इंच, शिक्षा-**सी.ए., एम. बी.ए.** प्राइवेट कम्पनी ओखला, दिल्ली में कार्यरत, पैकेज 10-12 लाख वार्षिक। स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

7. **अभिभावक :** अनिल कुमार जायसवाल, 41/1-A/1 गली.14, ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली-110054, M: 9210705572

पुत्र (1) : हिमांशु जायसवाल **(मांगलिक)**, B.A. 5'8" जन्म 17-2-1993 (9.30 AM, Delhi) गोरा, प्रो. मयंक एंटरप्राइस (Ladies garments & Accessories) तथा Lace के होलसेल व्यवसायी। **आय-2 लाख रुपये मासिक।**

पुत्री (2) : आकांक्षा **(मांगलिक)**, 5'3" जन्म 17-2-1993 (9.05 AM Delhi) गोरी, MBA (final) from DU.

8. **अभिभावक :** श्री जुगल किशोर जायसवाल (व्यवसायी) मण्डी चौक, विकासनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड)

पुत्री : स्वप्निल जायसवाल, (आंशिक मांगलिक) M.Tech (Comp. Sc), 5'4", 26-10-1989, (8.35AM, देहरादून) MNC नोएडा में कार्यरत, पैकेज 2.50 लाख रुपये।

9. **अभिभावक–**श्री मेधाव्रत जायसवाल (Gift shop business) जायसवाल होम अप्लायेसेस, 171, ठठेरी बाजार, सुल्तानपुर **फोन न.–**8090242532, 8765770123 (whtsapp) 8896404464, 9208747409

पुत्र–अनुदीप जायसवाल **(मांगलिक)**

जन्मतिथि–12-9-1980, (खंडवा, म.प्र.) 5'8', M.C.A. Sr. Software Engr. in Nokia solutions and Network Noida, He wishes to settle in Delhi, पैकेज 18 लाख

10. **अभिभावक–**श्री शिव प्रसाद जायसवाल (दिल्ली सरकार में Class-I अधिकारी) पता–391 F, पॉकेट-2, फेज-I, मयूर विहार, दिल्ली-110091(011)-22753484, **फोन न.–** 9599959013

पुत्र–अप्रतिम जायसवाल (मांगलिक) जन्मतिथि–4-8-1992, (8.03 PM इलाहाबाद) 6'1', गेहुआ B.Tech, fidelity International, नोएडा में कार्यरत, पैकेज 10 लाख।

11. **अभिभावक**-श्री तेज नारायण जायसवाल (प्रतिष्ठित व्यवसायी) 104A/360, रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.) M.-9839027212, 9657129022 Email : aalekhjaiwswal@yahoo.com
पुत्र-आलेख (आंशिक मागलिक) एकलौता पुत्र, 23-06-1990, 5'8" गेहुआ आकर्षक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्रशिक्षित B.Tech, Business हेतु प्रोफेशनली क्वालिफाइड या टीचर कन्या को वरीयता।

12. **अभिभावक**–श्री विनोद गुप्ता, F-111-A, Sector-11 प्रताप विहार, विजय नगर, गाजियाबाद-201009, 9910922437, 8744817069
पुत्री–सुजाता (**आंशिक मांगलिक** की छाया 28 वर्ष की आयु में समाप्त हो गई) जन्म–15-7-1990, (12.02 AM नूरपुर बलिया) 5'3', गेहुआ BBA, Pursuing MBA, नोएडा एक्सपोर्ट कं. में Accountant (पैकेज 2.50 लाख), साफ रंग।

13. **Father-** Prabhat Govt. Servant, Address 35A, Pocket B, DDA Flats MIG, Dilshad Garden, Delhi Phone 9213494606
Daughter : Dr. Pooja Jaiswal, DOB 01/08/1994, Time 12.05 PM (Place Vivek Vihar, Delhi) Hight-167 cm 5'5" Qualification MBBS Selected as Assistant Commandant Medical Officer in Paramilitary Forces. Currently Junior Resident in Rajeev Gandhi Super Speciality Hospital, New Delhi, Salary 1 Lakh (Approx), **Manglik Very Less**

14. **अभिभावक**–श्री राजेन्द्र जायसवाल, 3098 व्यंकटेश विहार, एयरपोर्ट रोड, इंदौर फोन न.–9617010844, 8982899771
पुत्री–साक्षी जायसवाल (मांगलिक) जन्म–4-2-1993, (4.25 PM, इंदौर) 5'2', B.E (Mechanical), L and T, बडोदरा (गुजरात) में कार्यरत पैकेज 7.5 लाख, स्मार्ट आकर्षक व्यक्तित्व।

15. **अभिभावक** : श्रीमती तनु जायसवाल (व्यवसाय), 276 ग्राउंड फ्लोर-HIG Flat No. 3, Plot No. 276, ज्ञानदर्शन सोसायटी ज्ञानखंड-I, इंदिरापुरम गाजियाबाद-201014, (M) 9971445325, 9989109200, Email : rhljaiswal 26@gmail.com.
पुत्र : राहुल जायसवाल (मांगलिक), 26-12-1993, (Delhi, 9AM), 6', बी.कॉम, Manager, Just Dial, पैकेज 5 लाख रुपये।

सामान्य वर्ग

1. **अभिभावकः श्री अरुण कुमार गुप्ता**, H.No. 893 वृंदावन कालोनी वार्ड नं. 12, चंधासी P.O. Chandhasi, मुगल सराय, जि. चंदौली (उ.प्र.)-232101 M : 9450181498
पुत्री- मीनाक्षी, 5'1" सुन्दर, आकर्षक डिप्लोमा (CS), B.Tech. (CS from Meerut), 20-04-1993, (09.12(AM) Patna, colour fair

2. **अभिभावक** : अशोक कुमार जायसवाल (PCS Retd.), वर्तमान में सदस्य किशोर न्याय बोर्ड, बरेली। 35/U/6 सिविल लाइन्स, रामपुर गार्डन, बरेली (उ.प्र.)-243001, M : 91-9837177302, 91-8218757163, 91-9411699419
पुत्र : शुभांग जायसवाल, 5'8" जन्म 1-2-1987, बी.टेक (आई.टी.), वर्तमान, Post Graduation program in Business analytics for Executives from Indian Institute of Management Lucknow (I.I.M. LKO), Accolit India Software Pvt. Ltd., Delhi, में कार्यरत, **आय-16.5 लाख रु0।**

3. **अभिभावक** : श्री अरुण कुमार चौधरी, कोशी एक्सरे क्लिनिक, एम.जी.मार्ग., खगड़िया विहार-851204 M : 9431417963
पुत्री : श्वेता कुमारी, 5'5" जन्म 9-9-1988, (समस्तीपुर) B.C.A, गोरी स्लिम, PNB रायपुर में Probationary Officer.

4. **अभिभावक**- अशोक कुमार साई, **पताः** साईसवाल (बैंक कर्मचारी) RZ-6 मानसकुंज, उत्तम नगर नई दिल्ली, M.-8860281021, 9268075028
पुत्री- अभिलाषा, 5'7" 4-12-1986 (गुरगाँव) रंग साफ, B.Com. from Delhi, MBA from Rohtak, service in Banking.
पुत्री- नुपूर (मांगलिक), 5'4" 11-10-1991 (5:00 PM Delhi) compexion very fiar, M.A. in Art and craft accupation : Teacher

5. **अभिभावकः**- श्री अजय कुमार जायसवाल, मो काम्पलेक्च, घोड़ा सहन, पूर्वी चम्पारण, बिहार -845303, मो. न.-9507783504, 9012303260, 9310345576
पुत्र-आयुष कुमार जायसवाल, Executive Engineer, Domodar Vally Corporation, 27 वर्ष, गोरा, 5-4 शिक्षा NIT, Email-ayush.aman497@gmail.com.

6. **अभिभावक**- डॉ. अनंत प्रसाद चौधरी, राजीव नगर, पटना M.-7543055511, 9430059993 Email, drkumkudtu@gmail.com
पुत्र- डॉ. कौस्तुव, 32 वर्ष MBBS, (General surgery) FMAS (with), FMIS (AIIMS) पैकेज 6 अंकों में 172 cm स्मार्ट, सुन्दर आकर्षक, स्वस्थ युवक।

7. **अभिभावक**- अरविन्द कुमार चौधरी (General Manager) M.-9953096808
पुत्र- ईशान कुमार चौधरी, 5'8" जन्म 9-10-1987, साफ रंग स्मार्ट, पैकेज 10 लाख, Chartered Accountant (FCAI), B.Com. (Hons.), Asstt. Manager (Tax & Audit)

8. **अभिभावक** : श्री अनिल कुमार जायसवाल, नन्दगंज मार्कट, नंदगंज, जिला-गाजीपुर (उ.प्र.) पिन-233302 M : 9453484040, 8303517704
पुत्र : शरद कुमार जायसवाल, B.A, MA (Economics), M.Ed, Net, UPTET, CTET, CCC, 6'2" जन्म 27-11-1988 (8:40 PM), Revenue sub inspector (उ. प्र. सरकार)
पुत्री : जया जायसवाल, 28 वर्ष, 5'2" साफ रंग. सुंदर, MA, MEd, Net, TET, CTET, बस्ती (उ.प्र.) में Village Development Officer.

9. **अभिभावक :** श्री अनिल कु. जायसवाल 160, अनूप नगर रोठा रोड, मेरठ-250001 (उ.प्र.) M : 9219613863
पुत्र : अंकित जायसवाल, 4-11-1993 (9.25 PM मेरठ, 5'6", गेहुँआ, B. Com., ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, वार्षिक आय 4 लाख स्मार्ट व्यक्तित्व।

10. **अभिभावक :** श्री ओमप्रकाश जायसवाल (चावल के थोक व्यवसायी) D-II, 397-398, पहली मंजिल, Sector-7 रोहिणी, दिल्ली-110085 M : 9899424368, 8178845541
पुत्र : सुधीर कुमार जायसवाल, 22-2-1988 (7.42 AM सिलीगुड़ी, प. बंगाल), 5'7", IDI MIA, नोएडा में Sr. Software Enginner, B.Tech, साफ, स्मार्ट व्यक्तित्व, Email : Sudhirjustme@gmail.com.

11. **अभिभावक–**श्री अनिल कुमार जायसवाल, (Retd. Supdt. Archeological Survey of India)–74/22, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur फोन न.–0759792110, 09929660874
पुत्र–आकाश जायसवाल, जन्मतिथि–5-11-1988, (4.35 AM देहरादून) 5'10', M.Com, MBA (IBS) Credit manager, Barclays Bank) पैकेज 17.5 लाख, शिक्षित परिवार, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

12. **अभिभावक–**अखिलेश जायसवाल, जायसवाल फार्मा 171ए, ठेठरी बाजार चौक, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश, फोन न.–9532252230, 9911515253
पुत्री–सुष्मिता जायसवाल, जन्मतिथि–11-11-1992, (सुल्तानपुर) 5'3', fair, M.Tech (E.C.) Gold Medalist, Ph.D Ist Year M.N.N.IT. Allahabad U.P.

13. **अभिभावक–**अनिल कुमार जायसवाल, E-108, VDA कालोनी, वाराणसी (उप्र.), फोन न.–9450536625, 8318298828
पुत्री–मोनिका जायसवाल, जन्मतिथि–27-8-1992, 5'4', गेहुआ, B.Tech, नोएडा में Account कार्यरत।

B13. **अभिभावकः श्री बिंदु चौधरी,** म.न. 276, सोनिया गांधी कैंप, समलका रंगपुरी नई दिल्ली-110037, M : 7838462147
पुत्री- पूजा, 5'3" 7-12-1996 (सीतामढ़ी) 12वीं पास, खजान इंस्ट्रीट्यूट से BC उत्तीर्ण की साफ गेहुआ रंग, स्मार्ट आकर्षक।

14. **अभिभावक :** स्व. श्री बिहारी लाल जायसवाल दिल्ली दरवाजे बाहर,दारू गोदाम के पास, कोठिया पावी मोहल्ला, अलवर (राजस्थान) M : 7014453944, 9667152823, 9309232213 **पुत्र (1) :** टिंकू, 10-12-1994, 12th, ITI, self Business. **पुत्र (2) :** पिंकू 6-6-1996, Diploma in mechanical, self business.

15. **अभिभावकः** भोलानाथ जायसवाल-सरकारी नौकरी, गोत्र- कश्यप, पताः एफ-83,कुंवर सिंह नगर, नागलोई, दिल्ली-110041, फोन नं. 09968936545
पुत्री- सुमन, जन्मतिथि-01-06-1993, साफ रंग, 5 फिट 4 इंच, शिक्षा-बी.काम., जे.बी.टी.(टीचर ट्रेनिंग कोर्स), कार्यरत कम्प्युटर आपरेटर, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, प्रतिमाह वेतन-15000/ रू0

16. **अभिभावक-** बबन प्रसाद, हनुमान नगर, पटना (बिहार)-20 M.-9835871038, 9334827500
पुत्र- विकास कुमार, 5'8" 32 वर्ष Compaxion, prefrance Govt. Officer deployed in UP

18. **अभिभावक-** भगवान सिंह जायसवाल (बिजनेस मेन) M.-9810103658, 8826371371
पुत्र- निशान्त जायसवाल, 5'7" 28-1-1990 (00:4am Delhi) wheatish brown, Qualification B.Tech E and C from BBDIT Ghaziabad, Sr. Accountant (Ministry of Agriculture, Govt of India)

17. **अभिभावक : श्री बाल रवि प्रकाश गुप्ता** (वायु सेना से Jr. Warrant Officer के पद से सेवानिवृत), फ्लैट नं. 313 Sanvi Sankalpam NAGONDANHALLI, White field, बंगलौर-560066 (कर्नाटक) M. 9482593364 (Whatsapp No. 9453621296)
पुत्री- विभा गुप्ता, D.O.B- 20-05-1993 (21.43 Hrs देहरादून) 5'4", सुंदर, B.E., बंगलौर स्थित HARMAN INTERNATIONAL प्रा.लि. में Sr. Software Engr. स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

18. **अभिभावक :** श्री सी.पी. गुप्ता (Sr. Advocate), 193, कल्पना नगर, सिविल लाइन्स, इटावा-20600। प्रतिष्ठित परिवार (M) 9410485758, 7417715565
पुत्री : डॉ. निधि गुप्ता, जन्म-24-01-1980, (16.20 P.M. इटावा उ.प्र.), MBBS, DOMS, (GRMC ग्वालियर), Pursing MD in Microbiology (BHU), 5 फुट 1 इंच, स्लिम, सुन्दर, गौरवर्ण, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व। पेंटिंग पठन-पाठन, पाक-कला एवं गृह-सज्जा का शौक। चार वर्ष तक Rural PGI, सैफई इटावा के नेत्र विभाग में Sr. Resident, परिवार में अन्य सदस्य सिविल जज अथवा मेडिकल व्यवसाय में संलग्न।

19. **अभिभावकः श्रीमती चंद्रकांता,** 5 जॉली कॉम्प्लेक्स अभियन्ता नगर, नाशिक (महाराष्ट्र)-422008 M. 9871262622, 8983574660
पुत्र- गौरव, 29-04-1982 (04: 16P.M. दिल्ली), 5'8", B.C.A. Deals in Finance and Share Market, Rs 30,000/-P.M. शिक्षक, बड़ी बहिन कनाडा निवासी।

20. **अभिभावक–**श्री देवेन्द्र जायसवाल, पता–D-219 आनंद विहार, दिल्ली-110092, फोन न.–9212725140, 9555541050
भतीजी–मेघा जायसवाल, जन्मतिथि–16-12-1984, 5'2", MA (ECO), B.Ed, Pursuing Ph.D. स्मार्ट fair, Hobbies : Reading, teaching.

21. **अभिभावक**-श्री फुलेन्द्र चौधरी, सम्पर्क डॉ. सत्यदेव गुप्ता जायसवाल L-1/56, श्री कृष्ण पुरी, बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) M-9308741023
पुत्री-प्रियंका चौधरी, B.A., 5'6" 4-9-1988 अति सुन्दर गोरी, स्लिम, दिल्ली पब्लिक स्कूल में टीचर, पति की अल्प बीमारी के कारण मृत्यु दो पुत्र क्रमशः 9-10 वर्ष बच्चों को नाना-नानी रखने को तैयार, योग्य संस्कारी वर अपेक्षित विधुर भी मान्य।

22. **Father's-** Shri G.L. Chouksey, Retd. From Forest dept., M.P. Govt., Bhopal, 43 Prakash Nagar, Ayodhya Bypass road, Piplani, Bhopal-462022 Ph. 7987142364, 9981770414.
Daughter : MEENAL CHOUKSEY, 09-06-1985 (Time 00.10), Prakash Nagar, Bhopal, M.P., Height-5'.3", Fair, B.Sc., MBA (Finance), PGDCA, Manager, F.C.I. (Govt. of India), West Zone, M.P. Region, 10 Lakhs P.A.

23. **अभिभावक-** गंगा राम जायसवाल, **पताः** Station Road, Purani Basti, Near purani Thana Basti, District Basti (UP)-272002 M.-9044015597, 8604262492
पुत्र- विशाल जायसवाल, 5'7" 15-1-1987 Qualification B.A. profession; SBI Life Insurance Advisior + SBI ATM Guard, Income 2.5 Lac.

24. Father- Late Gopal ji Jaiswal, Mother Kamla Jaiswal, 334, Salikganj Ki Mandi, Muthiganj, M. 8957292339, 8851658998
Daughter : Ritika Jaiswal, DOB 18/11/1991, Hight-5'3" Post Graduation (M.A.)

25. **अभिभावक :** श्री हरि प्रकाश जायसवाल म.न. 1292/28 फ्रेन्डस कॉलोनी, सिद्धेश्वर मंदिर के पास, झांसी (उ.प्र.) -282001 M : 07460000268, 09839419372
पुत्र : विकास जायसवाल, 29 वर्ष, कद 5'8" . B.Arch. Master in Architecture (N.I.T. Bhopal) राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत **आय 1 लाख- रु. प्रतिमाह।**

26. **अभिभावक-** श्री हरीलाल गुप्ता (व्यवसायी) A-416, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052 M.-9810129465, Email : spacocable@yahoo.co.in
पुत्री- ज्योति, 5'3" 3-08-1990 (06.35 PM Delhi) सुन्दर C.A., B.Com (Hons.) D.U. Asstt. Manager (A/CS), Jubliant Consumer

I27. **अभिभावक :** श्री इंदकुमार जायसवाल (B.Tech, MBA)] Asian Paints Ltd, Mumbai में वरिष्ठ पद पर कार्यरत 402 धनशिला अहिंसा मार्ग, खार (पश्चिम) मुंबई-400-052 M. 09820215011/09820194569 (मूल निवास-इलाहाबाद)
पुत्री : स्मृति, 8-9-1985 B.M.S. (Bachelor of Management Science), M.Com, CFA (Leve l I & II), MBA (from Mumbai), 5'2", स्लिम सुंदर आकर्षक मुंबई स्थित बैंक ऑफ अमेरिका में कार्यरत, अच्छा वेतन।

J28. **अभिभावक :** श्री जवाहर लाल जायसवाल IP/B, Ist floor, हुमायूंपुर, S.J. Enclave, New Delhi-110029, M : 09650508397
पुत्र : राहुल कुमार, MBA, Advertising & Travel Co. में कार्यरत 26 वर्ष, स्वस्थ, गोरा, आकर्षक, स्वयं का फ्लैट, अच्छी आय।

K29. **अभिभावक–** श्री कृष्णा प्रसाद एवं सविता चौधरी, F124, पॉडव नगर गली न० 6, दिल्ली- 110092, मो० 919560444808 (सुलतानगंज (बिहार) के रहने वाले हैं।)
पुत्री (1) निक्की, उम्र 31 वर्ष, उजली गोरी 5'10" कम्प्यूटर ग्राफिक्स में कैरियर, बी.ए (अर्थशास्त्र) प्राइवेट कंपनी दिल्ली में नौकरी, पाक कला में प्रवीण।
(2) सोनी, उम्र 28 वर्ष, सुन्दर, गोरी 5'5" कम्प्यूटर ग्राफिक्स की जानकारी। बी.ए. (अर्थशास्त्र) दिल्ली में प्राइवेट नौकरी।

30. **अभिभावक-** काशी प्रसाद जायसवाल, **पताः** D35/334, जगाम्बरी, वाराणसी-221001 M.-9415369550, 0542-2451627
पुत्री- शिखा जायसवाल, 5'2" 12-2-1988, fair, PHD (Pursing) Textile Design B.H.U. Varanasi.

31. **अभिभावक :** लक्ष्मण सिंह बेनीवाल, शिक्षा विभाग में कार्यरत, 6/231, NEB Exension, Preet Vihar Transport nagar, Alwar (Rajasthan)-301001, M : 8766022928, 9351653004. 8890593175
पुत्री : निशा रानी, MA (Political science and English and B.Ed) 5'3" जन्म 5-7-1990 (11:15 AM) अलवर, गोरा, प्राइवेट स्कूल में कार्यरत।

32. **अभिभावक : श्री महेन्द्र जायसवाल B.E., MBA (Category 'A' Surveyor & Loss Assessor), E-87, लाला लाजपत राय सोसायटी "फ्लैट नं. 401, ग्रीन पार्क अपार्टमेंट्स, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 (म.प्र.) M-09425012242, टे. (0755)-3591817, स्थानीय सम्पर्कः श्री राजाराम जायसवाल (नानाजी) M-9013262811**
पुत्र : एकांश जायसवाल, जन्म 28/29-10-1988 (दिल्ली रात्रि 12.45 में), B.Sc (Hospitality & Tourism Managment) from Amity University, MBA (Marketing & sales), 6'3", स्मार्ट, आकर्षक, सुडौल व्यक्तित्व (Forward looking young man) Associate Director Ananta Group of Hotel and Resorts (उदयपुर अजमेर एवं पुष्कर में) पैकेज 15 लाख, Good Physique Sportsman दिल्ली में स्वयं का मकान। दिल्ली में तैनात।

34. **अभिभावक :** श्री मनोज कुमार जायसवाल, B-33, विमला टावर, न्यू पुनाई चाक (नजदीक राजवंशी नगर SBI, बेली रोड, पटना-800023 Ph : 09472021184, 9570365020, 9868721763
भांजी : Simpee Jaiswal, DOB 4th September, 1991 (11:55 A.M. Forbesganj, Bihar) Height : 5'.4'' Complexion : Wheatish, ICMAI (CMA), Profession Banker (Credit Officer in Bank of Baroda)

35. **अभिभावक :** श्रीमती माला जायसवाल 214/184-A, नई बस्ती, बाराखम्बा, कीडगंज, इलाहाबाद (उ.प्र.), (M) 8174867157
पुत्री : सौम्या जायसवाल, M.Sc. (Biochemistry) M.Ed, 12-7-1990 इलाहाबाद (3.20A.M.), 5'3", प्रतापगढ़ (उ.प्र. सरकार), अपर प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका, पैकेज 5 लाख रुपये सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट।

36. **अभिभावक-** मुकेश कुमार जायसवाल, स्टेट बैंक वाली गली, मकान नं. 1597, कच्ची मंडी कोसी कलामथुरा-281403 M.-8533800619, 7906018745
पुत्र- रोहित जायसवाल, 6'1" 27-5-1988 (8:25 PM Kosikalan) B.A. Rajasthan University Exam by D.G.C.A. (all cleared) CPL and PPL, Licence Business Lazy Mozo Back Peeker Foreigners Guest House at Civil Line Jaipur (Rajasthan)

37. **अभिभावक : श्रीमती मीना देवी जायसवाल,** D. 14/88, टेढ़ी नीम, दशाश्वमेघ, वाराणसी (उ.प्र.) M 9935470506
पुत्र- सूरज कुमार जायसवाल 15-07-1989 (6.20 P.M. वाराणसी) 5' 5", स्मार्ट, आकर्षक ग्रेज्युएट, B.H.U में Music Teacher तथा सितार और तबला आदि वाद्य उपकरणों के व्यापारी, स्वयं का मकान।

38. **अभिभावक–**श्री मोहनीश जायसवाल, (व्यवसायी), फोन न. –9654778803
भाई–श्री प्रशान्त जायसवाल, 26-6-1990, (10.33 AM) 5'7', B.Com, spectacle frames wholeseller, स्मार्ट, पैकेज 1 लाख प्रति माह।

N39. **अभिभावक :** श्री नारायण सोमवंशी, सरकारी विभाग में कार्यरत, जयपुर रोड, उमरैण, जिला अलवर राजस्थान-301001, M : 9887607300, 9694178713, 7734936915
पुत्र : राहुल सोमवंशी, BBA and MBA 5'6" 27 वर्ष Samsung में samsung express consuitant के पद पर कार्यरत है। पैकेज 3.5 LPA.

40. **अभिभावक–**नीरव जायसवाल (एडवोकेट) गुडगांव हरियाणा फोन न.–9810891524
पुत्री–तृप्ति जायसवाल, जन्मतिथि–22-10-1991, 8:10 रात्रि दिल्ली 5', fair, PHD (psychology) from punjab university Chandigarh, UGC NET qualified.

41. **अभिभावक :** डॉ. ओंकार नाथ जायसवाल, दिलदार नगर बाजार, गाजीपुर, उ.प्र.-232326, M- 9506793062
पुत्री : प्रिया जायसवाल, 25-6-1988, (M.A. & ITI computer application), 5', गोरी

42. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश चौकसे (किसान) एवं श्रीमती आभा चौकसे, करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.) M : 9826611582
पुत्री : वसुन्धरा चौकसे, 17.8.1988ए (करेली म.प्र. 6.03 AM) 5'7", B.E. (IT) from LNCT Bhopal. Rank Asstt. इंडियन कोस्ट गार्ड में Commandant, Air station चेन्नई में Logistics office के पद पर तैनात 3-5 वर्ष की service seriority.

43. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश जायसवाल Prop. Navjoyti Enterprises, ब्लॉक UP, प्लाट नं. 55 प्रथम मंजिल पीतमपुरा, दिल्ली-110034, M : 9810562034 Email : rahul.regard@gmail.com.
पुत्र (1) : राहुल, 02-01-1989, (5.35,pm कोलकाता), 5'7" गौरवर्ण, स्मार्ट, MBA, स्वयं का व्यवसाय (Electrical Accessories)
पुत्र (2) : विनय, 26-05-1990, (4.17,pm दिल्ली) MCA, 5'8", MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज, गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।
पुत्री (1) : नमिता, 24-08-1992, (8.15,am कोलकात), 5'2", B.Tech (MDU University), MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।

44. **अभिभावक :** श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (AAO, U.P. Govt), 4 निर्माण निगम कालोनी, तिकोना पार्क, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025, M : 9971143601
पुत्र : सिद्धार्थ जायसवाल, 5'10", जन्म 8-4-89, B.Tech (Electronics & Communication), नेटवर्क इंजीनियर HCL, ग्रेटर नोएडा, पैकेज 6 लाख रु., शुद्ध शाकाहारी, साफ, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व।

45. **अभिभावक :** प्रदीप कुमार जायसवाल (Business man), मकान नं. 1076, Ward No. 3 कैनाल रोड, हर्वटपुर (देहरादून)-248142, M : 91-7017792611, 91-9412150835
पुत्री : कनिका जायसवाल, 5'2" जन्म 16-7-1990, M.Com, वर्तमान में Del. Ed. कर रही है तथा विद्यालय में पढ़ा भी रही है। तथा बैंक की तैयारी भी कर रही है। गोरी, इकहरा वदन, सुन्दर।

46. **अभिभावकः** प्रमोद कुमार (सुपुत्र डॉ. सत्यदेव गुप्ता) C/o L-1/56 श्री कृष्णपुरी बोरिग रोड, पटना-800001 (बिहार) फोन 9430060645, 9308741023, 0612-2541587
पुत्री-मुदिता 15-3-89, 5'4" B.A. (Hons. Eng.) PGDM, सुंदर, गोरी, आत्मनिर्भर संस्कारी वर अपेक्षित।

47. **अभिभावक :** श्री प्यारे लाल जायसवाल, (व्यवसायी), 176, मूनगली, गार्डन, साहुकार लाइन, हलद्वानी (नैनीताल) उत्तर प्रदेश
पौत्र : आकाश कुमार, पारिवारिक कारोबार में सलग्न सुंदर, स्वस्थ, स्मार्ट, आकर्षक, 25 वर्ष, B.Tech, जन्म 15-8-1991, (02:42 pm हलद्वानी)।

48. **अभिभावक :** श्री पी.सी. जायसवाल, 23/47/111 महादेवी भवन, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश-211006 Mob. : 0532-2500624, 09415702805, Email: abhishekjaiswal128@gamil.com
पुत्र : अन्शुल जायसवाल 10-04-1987, 5'10" Fair, Slim, Handsome, कॉनवेन्ट एजुकेटेड, B.Tech (Electronics Communication) राष्ट्रीयकृत बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत, Civil Services के लिए प्रयासरत।

49. **अभिभावकः प्रदीप कुमार जायसवाल,** नियर सागर आर्ट, P.O. Kharmanchak, Bhagalpur (Bihar) Pin-812001 फोन-8709162766, 8252924240
Email=rimajaiswal64@gmail.com
पुत्री- रीमा जायसवाल : 30-3-1991, 5'1", रंग- साफ, M.Com, (ACCT) Diploma in Computer Application. Banking. संगीत व पाकशास्त्र की रूचि।

R50. **अभिभावक :** श्री रामलखन जायसवाल (Redt. HAL) क्वा. नं. -13/8 एच.ए.एल. कॉलोनी, रामादेवी, कानपुर-208007 फोन : 09452525520
पुत्री : ऊषा, जन्म 31.5.1982, कद 5'2" गोरी, आकर्षक, स्मार्ट, गृह कार्य में निपुण, शिक्षा-बी.एस.सी., एम.सी.ए., सॉफ्टवेयर इंजीनियर (नोएडा में) पैकेज 5.89 लाख वार्षिक।

51. **अभिभावक :** श्री रमेश बाबू जायसवाल (Ex-Air India), गौत्र-सौगारा, सी-7/207, यमुना विहार, दिल्ली-110053 (M) 9818970975
पुत्री : शिल्पा जायसवाल 26-11-1995, (7.00 A.M. Delhi) 5'3", B.A. (History Hon.), Doing D.I.E.T. from Gwalior in 2nd year, सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट।

52. **अभिभावक :** श्री राकेश जायसवाल (Own two renowned Hotels at Moga, Real Estate Business, and Rental Income), M : 9316273798, 9888043798

पुत्र : शुभम जायसवाल, B.A, LL.B, Preparing for Judicial, 5'8", 26-1-1991, (3.11PM, मोगा) गोरा, आकर्षक।

53. **अभि० –** श्री रजित राम गुप्ता, (Serving in National Institute of Immunology), 760, DDA FLATS, LADO SARAI New Delhi-110030 M 9899188680 (मूल निवासी: श्रावस्ती, उ. प्र.)

पुत्र– नरेन्द्र गुप्ता 10-10-1989 (4:30 A.M. दिल्ली) B. Tech (Instrumentation & control), Fujitsu Consulting India (नोएडा) में Technical Assit. के रूप में कार्यरत, पैकेज- 8 लाख रुपए 5'7", स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व। M- 9654172929.

54. **अभिभावकः श्री राजकुमार जायसवाल (व्यवसायी)** 230 Scheme No.-4 राजेन्द्र नगर अवलर-301001 फोन-9950006152, 7240705562

पुत्री- नेहा जायसवाल M.com and pursing B.Ed, 5'4", 14.2.1996, गोरवर्ण, DPS school, Alwar में शिक्षिका

55. **अभिभावक :** श्री रजनीश जायसवाल 124, शिवालिक कॉलोनी, अम्बाला सिटी, हरियाणा-134003, M : 9355702194

पुत्र : अंकुर जायसवाल, 12-02-1992, 5'7", (8.40 PM, अम्बाला) B.E. (Mech.), Scientific Asstt at Govt institute for plasma research, Gandhi Nagar (Gujrat), package 10 लाख वार्षिक।

56. **अभिभावक :** श्री राजेश कुमार, 56/L-I, कृष्णपुरी, साउथ बोरिंग रोड, पटना-800001, M-9234757531, 8521342371.

पुत्रीः मुदिता जायसवाल 15-3-89 5'4", Fair, B.A, PDGM, Comp. Sc., सम्पन्न परिवार अपेक्षित वर, बिहार पटना के समीप और सर्विस या व्यवसाय हो।

57. **अभिभावक :** श्री राजेन्द्र भरसकले PSU में कार्यरत 29/III ENG Enclave, GMS रोड, देहरादून-248001 Email : tvarita91@yahoo.co.in M-9410391647, 06000675049, 9410397116.

पुत्री (1) : Tvarita Bharsakle, Dob. 14-9-91 Time 12.15 pm, (Dehradun) 5'3", Fair M.S. (ENT) from Govt. Medical College, Kota MBBS (Bhubaneswar); MS/MD/Medico/IAS/IPS/IFS/IRS लड़के को वरीयता।

S58. **अभिभावक :** श्री सुरेन्द्र कुमार जायसवाल (Engineer), D-3, Rachna Vihar, Borkute Layout, Narendra Nagar, Nagpur-440015 (M) 09595483195, 09372718546,
Email : skjaiswal5@rediffmail.com

पुत्र : अनुराग जायसवाल, जन्म 28.2.1980, (5'9')] रंग-गेहुँआ, B.Com (Computer Application), Nagpur University, Working as Accountant with M/s GAMON India Ltd., Posted at Mumbai.

59. **अभिभावक :** श्री संतोष कुमार जायसवाल (प्रसिद्ध व्यवसायी) जायसवाल निवास, सोना बाबू का गैरेज, हाजींगंज, पटना सिटी पटना (बिहार) M : 8252518584, (0612)-2616236, Whatsapp : 9835298796

पुत्र : हितेष जायसवाल, 5'8", जन्म 19-9-1989 (पटना), LL.B., B.Com., NSSL लिमिटेड, नागपुर में Asstt. G.M. पैकेज 12 लाख रुपये; वर्तमान पता : 101F, Block 5, रिंग रोड त्रिमूर्ति नगर, नागपुर (महाराष्ट्र), सुंदर, अत्यंत स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

60. **अभिभावकः सुनील जायसवाल,** 221 नूनिया मोहल्ला (चाणक्यपुरी) सदर, मेरठ छावनी-250001(यू.पी.) फोन-7830988678

पुत्र- सौरभ जायसवाल 20-4-1983, (स्थान मेरठ) 5'1", रंग- गेहुंआ, शिक्षा-10वीं पास, व्यवसाय-पान मसाला, आय लगभग 20 हजार मासिक। अपना मकान।

61. **अभिभावकः श्री सुरेशचंद जायसवाल,** प्रो. रामचंद्र शिव रेवडध अलवर, मकान नं. 710, आबकारी गोदाम के सामने, ईव्ज चौराहा, मेरठ शहर M. 9837426871, 9808114635

पुत्र- अनुज कुमार जा., (ऐडवोकेट) आयु 32 वर्ष, 5'8", B.Com., LL.B. मेरठ कोर्ट में वकालत कर रहे हैं।

62. **अभिभावक :** श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल (Iron & Steel Traders), 121/4V/1-B, MM Road. Kolkata-700 054. Mob. : 8013838215, 9903391132, Email : prashantjaiswal@107gmail.com

पुत्री : प्रियंका, 20-8-1991 (कोलकत्ता 8.45 AM) 5'4", गोरी, B.Com., CS।

पुत्र : विवेक, 5-12-1987 (कोलकत्ता 12.50 PM) 5'8", गोरा, B.Com., CA।

63. **अभिभावक-** राजकुमार वालिया, (Rd. JE) H.No. 473 Dalima Vihar, Rajpura, Dist. Patiala (Pb.)-140401 M.-9888027110

पुत्र- अमित कुमार वालिया, 5'7", 12-8-1975 (05:45am S Nabha Pb) Australia Citizen, Fiar Taxi operator, 40 lac package

64. **अभिभावक-** राज सिंह, Dilidar wazar Bahar Meenapadi, Tasigh house ke pass, Alwar (Raj.)-301001, M.-9667770001

पुत्र- हर्षराज, 5'7", 5-11-1993 (12:50pm Alwar), Income Rs. 18,000 per month.

65. **अभिभावक :** Late Sh. Rajeev Jaiswal, Businessman 257, K.k. Street, Chandani Chowk, Delhi–110006, (011)-23928089, 9990315956, 901519997

पुत्रीः Ankita Jaiswal, DOB 16th July, 1993 (Delhi At 5:20 A.m.) Height : 5'.4'' Complexion : Fair Personality : Smart With Pleasing Aim : Lecturer In DU

1. Pursuing B.Ed. (Final Year). 2. M.phil In Sanskrit 3. B.A. (Hons.) And M.A. Sanskrit (Hons.) From Daulat Ram College (DU).

67. **अभि० –** डा. एस.डी. घनेटवाल (जायसवाल), B-1/8 गांधी पथ चित्रकूट योजना वैशाली नगर जयपुर (राज.) -302021, M 09413900991, 0141-4020789

पुत्र– सिद्धार्थ घनेटवाल (जायसवाल) (15-2-1992 जयपुर, राजस्थान), B.Tech. com. Science Software Engineer in HPE Bangalore 6', अच्छा पैकेज बी.टेक. तथा कार्यरत कन्या अपेक्षित।

68. **अभिभावक–**श्री सुरेश कुमार जायसवाल (सरकारी सेवा) वार्ड नं. 4, लक्ष्मीबाई मार्ग, खाटी कुंडी चौक, खिलचीपुर जिला-रायगढ़ (म.प्र.) फोन न.–7879161099, 9669401914
पुत्री–आस्था जायसवाल, जन्म–6-12-1992, 26 वर्ष (19.55 खिलचीपुर) 5'6', M.Tech (IT), T.C.S. इंदौर में सेवारत पैकेज 5.6 लाख

69. **अभिभावक–**श्रीमती शोभा जायसवाल (धर्मपत्नी स्व. हरधन चन्द्र, काकोरोड बस स्टैंड के सामने, जहानाबाद (बिहार)-804408 फोन न.–8083241132, 7050318497
पुत्र–विकास राज, जन्मतिथि–4-4-1996, 5'2", ग्रेज्युएट।

71. **अभिभावक–** प्रोफेसर डा० टी० एन० चौधरी (रिटायर्ड प्रोफेसर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट) जवाहर लाल रोड (चैम्बर ऑफ कामर्स के पास) सरैयांगंज, मुजफ्फरपुर (बिहार) 842001 मोबाइल नं०. 9835229883, (0621)-2246105
पुत्र– यशस्वी आलोक 38 वर्ष गोरा 5'7", MBA, MCA एवं M.Tech निदेशक कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेकनोलाजी। आय 15 लाख प्रतिवर्ष गोरी टेक ग्रेजुएट कन्या अपेक्षित।
पुत्री– डा० रजनी जायसवाल BHMS, MBA गोरी 5'2" HR Manager in MNC नई दिल्ली, 36 वर्ष, पैकेज 10 लाख।
नातिन– मुदिता जायसवाल (पटना निवासी) अत्यंत गोरी सुन्दर 5'5" बी.ए. (इंगलिश) एम.बी.ए. की छात्रा पिता रि० शिक्षक श्री प्रमोद कुमार निवासी L1/56 श्रीकृष्णापुरी, पटना-8001

72. **अभिभावक :** श्री संतोष जायसवाल नाथ बाबा रोड, रासडा, जिला बलिया (उप्र.)-221712, M : 9044111244
पुत्री : शिंप्रा जायसवाल जन्म–31-8-1991, (9.15 PM, रासाडा) 5'3', B.Com, BTC, TET, CTET, Super TET, NET, Selected in UP Govt Teaching Job, Smart, fair.

73. **अभिभावकः** श्री उमेश जायसवाल 1872 हाउसिंग बोर्ड कालोनी सेक्टर-7 बहादुरगढ़, जिला झज्झर (हरियाणा)-1245707 Ph: 9034826911 मूल निवास गोरखपुर
पुत्री : रुचि जायसवाल, 12-7-1992, (07.17 AM) नांगलोई, दिल्ली 5'2", B.Tech (C.S), MNC में कार्यरत, गेहुंआ, स्मार्ट।

V74. **अभिभावकः** डा. विजय कुमार जायसवाल, D-16/272, रोहिणी, सेक्टर-7, दिल्ली 110086 (**स्थानीय सम्पर्कः** श्री जीतेन्द्र चौधरी (व्यवसाय) 1711-C, मुल्तानी मोहल्ला रानीबाग, दिल्ली-110034. M- 9811231162, 7428970007)
पुत्रीः प्रियंका जायसवाल, जन्म 20-9-1989, (रात्रि 10 बजे) 5'2½", XII वीं पास, कम्पयूटर कोर्स, गृह कार्य दक्ष।

75. **अभिभावक-** श्री वीरेन्द्र प्रसाद, कृष्णा नगर, वार्ड-22, जिला-सहरसा, (बिहार), M.- 094306875493, 9871788770, Email : Smritkumari111@gmail.com
पुत्र- आशीष कुमार, 29 वर्ष, 5'11", MCA from Ignou, MNC में Sotware Engineer के पद पर कार्यरत, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व। A-20, शकरपुर, दिल्ली 110092, M : 09971516377 Email: ashish@gmail.com

76. **अभिभावकः वीरेन्द्र कुमार जायसवाल (बिजनेसमैन),** Sumrit Mandal Campus, Jail Road, Tikamanhji, Bhagalpur M.: 943121533, 8969255995
पुत्र- आदित्य जायसवाल, 27-5-1988, (5.15 pm) 5'2", milky white, MBA, Assistance Manager, Canara Bank.

77. **अभिभावक–**श्रीमती विभा देवी (पत्नी स्व. ध्रुव नारायण प्रसाद गुप्ता) फोन न.–7488196750, 9560290732, 9911515253 (श्री सुनील, मामाजी)
पुत्री–राधा, जन्मतिथि–17-2-1989, (वेतिया पश्चिम चम्पारण) 5'4', fair, B.Sc. (Hons) in Zology.

78. **अभिभावक–**श्री किशन लाल राय, फोन न.–925056773, 9990252526 Redt. from DDA, Sultan puri, Delhi
पुत्र–संदीप राय, जन्मतिथि–12-7-1990, (दिल्ली) 5'8", B.A. दिल्ली सिविल डिफेंस में जाब, 25,000/- मासिक स्मार्ट, साफ रंग।

79. **अभिभावक :** Om Praksah Jaiswal, A cropolis flat no. 206, J-block Gothapatna, Odisha. Pincode-751003; Mob : 7750982025; E-mail : ajoytce@gmail.com, ssuniti1286@gmail.com
पुत्रीः Omrita Jaiswal : DOB : 26/10/1990, Time : 7:30 pm, place : Pallahara (Odisha) Height : 5'5", complexion : fair, Education : MSc agriculture (Agronomy) BSc agriculture, Professional details : Working in Odisha govt. in Horticulture department as a Gazetted rank officer posted near Bhubaneshwar.

80. **अभिभावक :** Dr. Vinod Arya, H.No. 355, South West block Alwar (Rajasthan) Mob : 9461562928, 9166445360
पुत्रीः Preeti Arya : DOB : 19/08/1985, Place : Alwar Rajasthan, Height : 5'4", Complexion : Fair, Education : BA in Economics from Rajasthan Univesity, MBA in HR and Marketing from LIET Alwar.

81. **अभिभावक :** Chanderkanta 5, Jooly Complex Abhiyanta Nagar, Nashik (Maharastra)-422008, Mob : 9871262622, 8983574660
पुत्रः Gaurav, DOB : 29/4/1982, Time 4:16 PM Delhi, Height : 5'8", Qualification : BCA, professtion ; Deals in finance and share market, Income : Rs 30,000/-pm, Mother Teacher, Elder sister settled in Canada.

82. **अभिभावक :** Rakesh Prasad Jaiswal () (Retired from Air Force, Maternal Grand Parent - Rajendra Nagar, Patna, Bihar, Mobile No. 9818780624, 9910174532; Email ID - rakesh@basawatech.com
पुत्रीः Sakshi Jaiswal: DOB - 18th Sep 1993, Qualification - MA in English, B. Ed, CTET (Part I & II) Cleared. Advanced Diploma in Italian Language. schooling from Air Force Bal Bharati School, Lodhi Road, New Delhi. BA English (Hons) from Delhi University, B. Ed from IP University, Advanced Diploma in Italian Language from Daulat Ram College, DU, MA in English.

दिल्ली स्थित प्रसिद्ध NIFT (National Institute of Fashion Technology) से 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के माध्यम से Leather Fashion Technology में दक्षता प्राप्त 24 वर्षीय (13-2-1997) ग्रेज्युएट सुन्दर गौरववर्ण, सुशील सुयोग्य स्मार्ट कन्या के लिये प्रतिष्ठित परिवार के सुशिक्षित, सुस्थापित कन्या के लिए योग्य वर की आवश्यकता है। कृपया सम्पर्क करें: प्रधान सम्पादक श्री राजाराम जायसवाल दिल्ली M-9013262811

Looking for a bride from reputed family for my son MBBS Doctor, DOB 25-09-94, Fair complexion, Height 5'11", attractive personality Employed with Delhi Govt., Jail Hospital in Delhi Contact No. 8527470610, 8447959639 Dr. Nikank Jaiswal (Brother) Rohini, Delhi

तलाक शुदा (Divorces'sr), विधवा (Widow)

1. **अभिभावक-** श्री आनन्द स्वरूप जायसवाल, 10/26, सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर साहिबाबाद 201005 (गाजियाबाद) उ.प्र., M.-9871262622
   पुत्र- उत्तम कुमार, 35 वर्ष, **तलाकशुदा,** कोई संतान नहीं है, जन्म 23-07-1977 (मथुरा, 10.10 P.M)
2. **अभिभावक :** श्री श्यामसुंदर जायसवाल, ठाकुर विलेज, कांदिवली (East) Ph 400101
   पुत्र : Divorcee 38 वर्ष, 5'8" सुन्दर, स्लिम, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली, कांवेंट प्रशिक्षित, B.Com, LL.B. व्यवसाय में सुस्थापित, **विवाह के बहुत थोड़े समय पश्चात ठोस कारणों से अलगाव हो गया।** सुन्दर, शिक्षित अच्छे परिवार की कन्या अपेक्षित। विवरण प्रेषित करें E-mail : vivah6@hotmail.com
3. **अभिभावक :** श्री राजकुमार वालिया (Retd. Enger), C/o अनुज कर्णवाल, लेन नं. 3, म. न. 45(3/45), सहस्रधारा रोड, एकांत विहार, देहरादून (उत्तराखंड)-248001 M-9888027110, 7055866901
   पुत्र : अमित कुमार, (NRI Divorce), 12-8-1975, (40 वर्ष), (नाभा- पंजाब 04:45AM) 5'7", आस्टेलियाई नागरिक, Fair टैक्सी आपरेटर का स्वयं का व्यवसाय। 40 लाख रुपये पकेज।
4. **अभिभावक-** सुरेश चन्द्र जायसवसाल, Jaiswal Insitutute of Classes RK गार्डन, रामपुर रोड्, जहारंमल पेट्रोल पम्प के पीछे, हलद्वानी (नैनीताल) उतराखण्ड।
   पुत्र- नीरज कुमार (तलाकशुदा) 39 वर्ष, सुंदर, स्मार्ट, आकर्षक, शाकाहारी, व धार्मिक स्वभाव, निजी आवास, B.Com, M.Com, CA, CS, ICWA की कोचिंग क्लासेस, लगभग 10 वर्ष का पुत्र साथ में रहता है, M.- 9719738295
5. **अभिभावक :** स्व0 रमेश सिंह वर्मा, H.No. 12, आनंद गार्डन, राजेन्द्र पार्क पुलिस स्टेशन के पास, रेलवे स्टेशन के पास गुड़गांव-122001, M : 9136760393
   पुत्र : राकेश सिंह **(तलाकशुदा)**, 34 वर्ष, मैट्रिक पास, 5'5", स्वस्थ, गेहुआ रंग, अपना मकान, अपनी किराने की दुकान।
6. **अभिभावक-**श्री शिव चरण कुमार c/o जयभारत पाइप्स स्टोर, हनुमान रोड, शामली-247776 (उ.प्र.) मो. 09412867590
   पुत्री (तलाकशुदा)-गरिमा कर्णवाल, 12-9-82, (शामली, 4:10 pm) 5'5", B.SC, MCA, MNC, गुडगांव में कार्यरत।
8. **अभिभावक :** श्री अजय कुमार जायसवाल H.No. 485 मेसर्स आयुष फ्लोर मिल्स पोस्ट घोड़ासहन जिला पूर्वी चम्पारण (बिहार)-845303
   पुत्री : अर्पिता जायसवाल (तलाकशुदा), 32, वर्ष 5'5", रंग गोरा सुंदर सुशील ग्रेजुएट मानसिक तनाव के कारण संबंध विच्छेद सुंदर शिक्षित परिवार, संतान रहित वर अपेक्षित। Email: Subu4u87@gmail.com Whatsapp/Mob No. 9560356897
9. **अभिभावक :** श्री रामचन्द्र चौधरी, (Acctt, Hotel Midway), A-1/231, सेक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली-110085, M-9211098672, Email : dchoudhary90@gmail.com
   पुत्री : ज्योति चौधरी **(तलाकशुदा)**, PGDFT, M.Com (Du), Adriel High School, Delhi में शिक्षिका, जन्म 12-1-1988, 5'4" वेतन 15000/- प्रतिमाह, अन्य शिक्षेतर गतिविधियों में सक्रिय भाग।
10. **अभिभावकः श्रीमती मीना जायसवाल,** (W/o स्व. राजेन्द्र जायसवाल) संस्कृति अपारर्टमेंट Upper Ground Floor, 4, Plot No. 225, Niti Khand-I, Indirapuram संस्कृति रेंजीडेंसी गाजियाबाद-201010 (यू.पी.) फोन-8448219160, 9415132661
    पुत्री- सुमन (तलाकशुदा) 27-08-1988 (वाराणसी, 3 AM), 29 वर्ष, 5'3", साफ रंग, एम.ए. (इग्लिश)।
11. **अभिभावकः** Sh. Y.P. Ahluwalia, 109 Nimri Colony Ashok Vihar Phase-IV Delhi-110052, M : 9868704809
    पुत्र- Aman Walia, (7th Ocober 1974,) Govt Service in M.C.D. as Astt Sanitary Inspector (Pure Vegitarian) **तलाकशुदा,** Height 5'8", fair, salary 50,000 + स्मार्ट।
12. **अभिभावकः श्रीमती सम्पूरन जायसवाल,** (W/o स्व. सुरेश कुमार जायसवाल) G-194-195, जहांगीर पुरी, दिल्ली-33 फोन-9873809288, 9684750486
    पुत्री- अंजू जा. (तलाकशुदा कोई बच्चा नहीं) 28-07-1979 (दिल्ली, 7 AM), 5'3", M.B.A., गेहूंआ रंग, प्राइवेट सर्विस 15,000/- मासिक।
13. **अभिभावकः रिटायर्ड इंजीनियर वेस्टर्न रेलवे, Pelican-15, Aakriti Eco city, Bhopal-462039 7666933311; sjaiswal69@yahoo.co.in**
    सुनील जायसवाल (तलाकशुदा), 23-7-1969, 6'1", complexion very fair, MBA (Finance) from Institute for Technology and Management, Mumbai, BE(CS) from Nagpur University. Annual Income 25 lacs to Rs. 30 lacks per annum.

एक तलाकशुदा, 45 वर्षीय दिल्ली में कार्यरत उच्चपदासीन प्रतिष्ठित परिवार के युवक (पैकेज 40 लाख) के लिए कम से कम ग्रेज्युएट, संतानहीन युवती की अपेक्षा है। फोटो व विवरण सहित सम्पर्क करें। M-9013262811, 7503237955

जायसवाल जागृति के पदाधिकारी (2019-2021)

श्री अशोक कुमार जायसवाल (अध्यक्ष): 9818581776, 8700343878
एडवोकेट श्री ब्रजेश कुमार (महासचिव) : (M) 9810528057
श्री माखन चौधरी (कोषाध्यक्ष) : (M) 9911213033, 9650998902
श्री शंकर चौधरी (सह-महासचिव 2019-2022): (M) 9868039033
श्री अवधेश कुमार साह (संगठन मंत्री) : (M) 9868338671

नीति-निर्धारण/प्रबंध-समिति

श्री पन्नालाल जायसवाल : 8882828808
श्री राजाराम जायसवाल : 9013262811, 6280522313
श्री कृष्णदास चौधरी : 9868801751
श्री कैलाशनाथ गुप्त : (M) 8882019312
श्री नर्वदेश्वर प्रसाद जायसवाल : (M) 9582793033

उपाध्यक्ष

श्री शिव किशोर जायसवाल : 9818890990
श्री सुधीर कुमार मनहर : 9810007360
श्री छोटेलाल गुप्त : 9818334111

राहत-कोष

श्री मनोज शाह (अध्यक्ष) : 9891237738
श्री अनिल कुमार (सदस्य) : 9868105658
श्री कृष्ण कुमार भगत
श्री नरेन्द्र जायसवाल (कम्प्यूटरीकृत प्रेषण) : 9868819992

व्यवस्था एवं सहयोग

श्री बृजमोहन जायसवाल (प्रत्रिका सर्क्यूलेशन प्रभारी) 9868241044
श्री अजय कुमार जायसवाल (वेबसाइट) : (M) 9990372173
(M) 8700343878
श्री हरिशंकर जायसवाल (छायाकार) : (M) 9811131914
श्री शीतल प्रसाद जायसवाल (आम व्यवस्था) : (M) 7827621475
श्री आदित्यवर्धनम् (Facebook + संयोजक युवा मंच) : (M) 9818389050

वैवाहिकी-सम्पर्क व सहयोग

श्री नवीन प्रकाश जायसवाल : 8802372297

महत्त्वपूर्ण सूचना (1)
'जायसवाल जागृति' सदस्यता-शुल्क

सदस्यता शुल्क की संशोधित दरें इस प्रकार हैं:

संरक्षक सदस्य	:	**11,000/-** रु. (परिचय रंगीन फोटो सहित)
अधिष्ठाता सदस्य	:	**5,100/-** रु. (विस्तृत परिचय फोटो सहित)
सम्मानित सदस्य	:	**2,500/-**रु. (संक्षिप्त परिचय फोटो सहित)
आजीवन सदस्य	:	**1500/-** रु. (7 वर्ष के लिए)

विज्ञापन-दरें

आवरण (कवर) चौथा पृष्ठ	:	**5,100/-** रु.
आवरण (कवर) द्वितीय पृष्ठ (संरक्षक)	:	**11,000/-** रु.
आवरण (कवर) तृतीय पृष्ठ	:	**3,000/-** रु.
विशेष रंगीन पृष्ठ	:	**2,500/-** रु.
साधारण पृष्ठ	:	**1,500/-** रु.
साधारण आधा पृष्ठ	:	**750/-** रु.
साधारण चौथाई पृष्ठ	:	**400/-** रु.

ध्यानाकर्षण : वार्षिक सदस्यता पूर्णतः समाप्त हो गई है। सदस्यगण कृपया **1500/-** रु. का शुल्क पत्र प्रेषित करके आजीवन सदस्य बन जाएं, अन्यथा उनकी सदस्यता स्वयमेव समाप्त हो गई है। नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य कर दिया गया हैं। ध्यान रखें। जिन सदस्यों को हमारे प्रामाणिक प्रयासों के बावजूद डाक से पत्रिका नहीं मिल पाती है, वे कृपया एक वर्ष का 200 रुपये का अग्रिम कोरियर-शुल्क प्रेषित करके कोरियर से पत्रिका मंगा सकते है। राशि हमारे कोषाध्यक्ष के निम्नलिखित पते पर प्रेषित की जा सकती है।

महत्वपूर्ण सूचना (2)
जायसवाल जागृति वेबसाइट

Jaiswal Jagriti Has Launched It's Own Website

कम्प्यूटर क्रान्ति एवं सूचना-विस्फोट **Computer Revolution & Information Explosion** के इस युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना किसी भी जीवन्त संस्था के लिए अवश्यम्भावी हो गया है। फलतः स्वजाति बंधुओं के लाभार्थ **www.jaiswaljagriti.com** नामक वेबसाइट का शुभारंभ किया गया है। हमारा **Email; jaiswaljagrity@gmail.com** है। आप इससे सम्बन्धित किसी भी जानकारी के लिए हमारे युवा मंच के सचिव, तथा वेबसाइट प्रबंधक श्री अजय कुमार जायसवाल *(Sr. Software Engineer)* से उनके **Email:ajayjaiswal.india@gmail.com** तथा मो. न. 9990372173 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

बन्धुवर, समाज के हर तबके के लोगों को अपने लड़के-लड़कियों के लिए योग्य सम्बन्धों के चयन में कुछ न कुछ कठिनाइयाँ तो अवश्य पेश आती हैं, चाहे उसका सामाजिक अथवा आर्थिक स्तर कुछ भी हो। अतः अब आपकी सुविधा के लिए आप हमारे वेबसाइट में आपके विवाह योग्य लड़के-लड़कियों का फोटो सहित विवरण प्रकाशित करा सकते हैं। इसके लिए फिलहाल मात्र 500 रु (पांच सौ रुपये) का शुल्क रखा गया है। आप शुल्क की यह राशि निम्नलिखित दो में से किसी भी एक पते पर डिमांड ड्राफ्ट / चेक या मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते है।

आप अपनी राशि हमारे **AXIS Bank** के **A/C no. 015010100247337, IFSC-UTIB-0000015** में भी सीधे जमा करा सकते हैं। किंतु इसकी रसीद अथवा इसकी फोटोप्रति हमारे पास निम्नलिखित में से किसी एक पते पर अवश्य भेंजें, अन्यथा यह पता लगाना मुश्किल होगा कि यह राशि किसने प्रेषित की है।

राजाराम जायसवाल :
प्रधान-सम्पादक (जायसवाल जागृति)
पंजीकृत कार्यालय : 19-सी, डी.डी.ए. (एम.आई.जी.)
फ्लैट्स, गुलाबी बाग, दिल्ली-110007
फोन : M-9013262811

माखन चौधरी
कोषाध्यक्ष, जायसवाल जागृति
C-54-B, रजत विहार, सेक्टर-62 नोएडा-201309
Email : makhanchaudhary@gmail.com
M-9650998902/9911213033

(5 रु. प्रति)